

# અમારે આમલે રહેત મંથ પ્રભાવના તેમજ સાધના



નિ. ક. ર ૧૪ ના અગાઉ સુદ ૧૧ ના મી ચત્રપદ  
દશેરાચરણના દુહીરજની તેમ જમાસ મી ચરની વિનવીમી  
પરમપૂજ્ય જાણાર્થદેવ મી વિજયવિજ્ઞાનસૂરીચરણ મહાતજ  
શાસ્ત્રેશની જાણાર્થી પરમપૂજ્ય જાણાર મી વિજયચરણ-  
સૂરીચરણ મહામાજના સિમ્બરણ મી ચરણવિજયણ મળી  
જાર્દ દશ્વાનો વાતુમાંદ પ્રવેશ થયા જાત મી કથે ૫  
ચલિપરમોની જાણેદ પ્રેરણારી અનુવપૂવ શાસનચરણના તેમ  
જાણવતજ સાધના જાણ્ય ઉત્કાષ્ટારી કરી હતી કે જેની નેપ  
દેવાં જાણે જાણે ૫૫ જાણદ જાણારીવે છીએ.

૧ વાતુમાંદ પ્રવેશજાત વાતુમાંદિક જાણજાણનો પ્રારભ થતાં  
શોવાજનોથી ઉપજાય શીકાર જાણવત જાણતેદ.

૨ જાણજાણમાં વપ જાણેની પ્રેરણાનો જાણવત જાણજાણિક  
જાણ નવજારના જાણની એક વિજયની જાણવત વાતુમાંદ  
નિવાસુ વપ, જો ૪૫ જાણમ વપ, જો જાણવતિધિ  
વપ, તેમ જાણ પ્રવિજા નિમિત્ત મજાજારી અનુમનો વપ  
જાણાર વાણે વપની સાધના કરી હતી.

૩ જાણજાણા પમારેક જો મુનિમુખવ જાણિ જાણવતની  
જાણ નિમિત્તે જો જાણારીવક જેન જાણ મજાજાણ ઉપકથે  
સેકરોની જાણમા જો જાણના જાણે જાણા હતી.

જો ચત્રપદ દશેરાચરણના નીકે જાણે જાણમાં પ્રવિ  
જિવ જાણ નિર્વાજાણાર તે જો મુનિમુખવ જાણિ જાણિ  
જાણ જાણવતિજો જો જાણવ સુદ ૧ ના પ્રવેશ મહેરજાણ  
તેમ જો જાણવ સુદ ૧૩ પ્રવિજા મહેરજાણ અનુવપૂર્ણીતે

ઉજવાયો હતો. આ પ્રસંગ, નિમાયેલ મહોત્સવ સમિતિ તેમ શ્રી સઘ, શ્રી ચદ્રદીપક સ્નાત્ર મડળ, શ્રી ચદ્રપ્રભુ જૈન ભક્તિમડળ તેમજ અમારા સઘના રાજસ્થાનવ સી ભાઈઓ તેમ કચ્છી ભાઈઓના અથાગ પરિશ્રમ અનુમોદનીય બની રહ્યો હતો.

પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ નિમિત્તે દેવદ્રવ્યની રૂા ૮૦,૦૦૦ એ સી હજાર જેવી વૃદ્ધિ સદર મુંબઈ માટે ફેટલાએ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવમા અગ્રગણ્ય કહી શકાય.

ઉપરોક્ત સારોએ પ્રસંગ પરમપૂજ્ય શાન્તમૂર્તિ આચાર્યદેવ શ્રી વિજયવિજ્ઞાનસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ તથા પગમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રી વિજયકસ્તુરસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબની પરમપવિત્ર છત્રછાયામા ઉજવાયો હતો.

૪ પર્વાધિરાજની આરાધના પણ ચિરસ્મરણીય રીતે થઈ હતી. ૪૫ ઉપવાસ જેવી ઉગ્ર તપશ્ચર્યાથી લઈ ૩૦-૧૬-૧૦-૮ ૭-૫-૪-૩-૨ ઉપવાસની તપશ્ચર્યા વિપુલ સખ્યામા થઈ હતી. હૃદયમૂત્ર વ્યાખ્યાનના શ્રવણ અમારા શ્રી સઘ માટે તો પ્રથમવારના ન હોય તેવી સુંદર શૈલીથી થયા હતા.

૫ શાર્દૂતી ઓળીનુ આરાધન પણ ઉત્સાહ પૂર્વક થયુ હતુ. ટુકમા સારૂએ ચોમાસુ પૂ ગાંધુવરશ્રીના આગમનથી પ્રેરણાથી આળાલ વૃદ્ધોમા આરાધનાનો શાસન પ્રભાવનાનો કોઈ અનેરો ઉછરગ આવ્યો હતો. અને તે ઉપકારીના આવા પદપ્રધાન જેવા શાસન માન્ય ભવ્ય પ્રસંગને અમારા આગણે ઉજવવા પૂ આચાર્યદેવને વિનતી કરવા છતાં અમોને એ લાભ ન મળતા પ્રસ્તુત “શ્રી પાર્શ્વવિજ્ઞાન કહા” ની પુસ્તિકા અભ્યાસીઓને સમર્પણ કરી ઉપકારીના ઉપકારનુ ચત્કિચિત સ્મરણ બની રહે તે નિમિત્તે અમે શ્રી સઘના ભાવુકોએ આ શ્રુત ભક્તિનો લાભ લીધો છે.



# ग्रन्थान्तर्गतकथाक्रमसूचि

विषय

पृष्ठ

१	ग्रन्थान्तर्गतक्रमसूचि	
२	उर्मि और अभिप्राय	
३	मगल सिल्लागा	२
४	फलमालरस कहा पद्मा	३
५	मुक्त्वस्म कहा वीआ	४
६	बुद्ध मतिणो कहा तट्ठा	५
७	बुद्धाण कहा चउथी	६
८	जिणनामम्म कहा पचमी	७
९	अवियारिआएस्म नरिदस्स कहा छट्ठी	८
१०	मीलवर्द्धाणममत्ती कहा	९
११	दाणमि थेर येरीण कहा अट्ठी	१०
१२	दाणविलवोपरिं जहुट्टिल भीमसोणाण कहा नवमी	११
१३	किन्नाम नेहापरिं बुद्धाण कहा दसमी	१२
१४	लोगाण मज्जोगे चोरस्म कहा एगारसमी	१३
१५	भयस्सअम्माग्याण्णागदत्तसेट्ठिणो कहा दुवाल्ममी	१४
१६	गेहेमूर-सुवण्णयारस्म कहा तेरसमी	१५
१७	निद्धणपणिअस्स कहा चउदसी	१६
१८	चउजामायराण कहा पणारसमी	१७
१९	पुत्तेहिं पराभविअस्म पिउस्स कहा मोलसमी	१८
२०	निच्चमग्गनिद्धणस्स कहा सत्तरसमी	१९
२१	अमगालियपुग्गिस्स कहा अट्ठारसमी	२०
२२	बुद्धीण सुद्धकदसणे कहा एगुण्णीममी	२१
२३	यम्ममवणे मिलिच्छस्म कहा वीमडमी	२२
२४	अज्जवालगस्म कहा एगुणीमडमी	२३
२५	सट्ठियधण्णदाणमि दाणमीलसेट्ठिस्म कहा	२४
२६	क्खिण्णसंठिस्म कहा तेवीसडमी	२५
२७	मिप्पकलानुट्ठिण मिप्पिपुत्तस्म कहा	२६
२८	परिणाम मुहावर्द्धाज्जम्मिधणियपुत्तस्म कहा	२७

# विषय

२९	गयागुगार्थोपरि मयजमरुद्वारात्म कदा	६३
३०	वम्मावणसमवज पुत्तादिगा निगम्भ कदा	६५
३१	ममाउरारवासाधमिगगावाए कुमार मंजिणे कदा	६७
३२	तरमवमागो साधुवाविमार्थ कदा	६९
३३	सिम्भवधोएर काळमाज्जरीआत्म कदा	७१
३४	सुवधाराज मावणज साधिमरुपुम्भवधसम कदा	७३
३५	वत्तव वरवुद्धिपुण्यार्थ सुद्धिम निवाए पुत्तार्थ कदा	७५
३६	परिमव वुद्धिप वुद्धवत्तवधमीन कदा	७७
३७	मइरमाववणियसम कदा वडलीमइमी	७८
३८	अम्मासत्तवागमि अत्त-मुत्तवार्थ कदा	७९
३९	पुत्तव-व वत्त वडलीम निविपुत्ताए कदा	८१
४०	वत्तवसे निव्वजविजवुरा कदा सत्तलीमइमी	८३
४१	वत्तमुत्तवसे सुवरीए कदा वडलीमइमी	८५
४२	उत्तवसम पत्तावजममि विजवत्तववुगात्म कदा	९
४३	इविवाज निमव सत्तव-मुगात्म कदा	९१
४४	मावववववववव कदा पत्ताववववववव	९३
४५	पुत्तव विजववववव पुत्तववव-विजवववववव कदा	९५
४६	वविजवववव ववववव ववविजवव कदा	९७
४७	वववववव मवववव कदा वडलीमइमी	९९
४८	सुववववव ववव वववव कदा	१०१
४९	ववववववव ववववव कदा वडलीमइमी	१०३
५०	वववववव ववववव कदा ववववववव	१०५
५१	वववववव ववववव ववव ववववव कदा	१०७
५२	ववववव कदा वववववववव कदा	१०९
५३	वुद्धिवववववव ववववव कदा वववववव	१११
५४	वववववव ववववववव कदा	११३
५५	ववववववव ववववव कदा वववववव	११५
५६	वववववव ववववव कदा वववववव	११७
५७	वववववव ववववव कदा वववववव	११९
५८	वववववव ववववव कदा वववववव	१२१
५९	ववववव ववववव वववववव कदा	१२३
६०	ववववव ववववव वववववव कदा	१२५

# अभिधान चिन्तामणि कोश



● उर्मि और अभिप्राय ●



५ दून शासन-कमाल भाषायेरेव बीनर  
बिजन मजिसूरिधरजी महाराजजीके कुरर  
६ दू कवचक मय परिचामि छल्लुटि  
भाषायेरेव बी बिजन बिहानसूरिधरजी  
महाराजजीकी अलीम कुमारे ही प्रलुग मय  
का कपोल-काव कयली सले दूरे  
हुवा है।



महल निधिधारक ६ दून भाषायेरेव  
बीनरजीक कल्लूरसूरिधरजी महाराजजी,  
जिन्होनि कल्लुसले अयद परिचामे कयल  
परीरका कयल मुमय गुर्जर दीनर कैर  
कर प्रलुग मयको कोकमोय कयलर कल्लुसले  
कयल हैकलभाषायेरेवकी अलीम साहिब कैर-  
का कल्लुसले प्रलीक कय का मय कल्लु-कयलमने  
कयल प्रलुग सिवा है।



भारत सरकारके आकाशवाणी और सूचना विभागके मंत्री माननीय श्री

डॉ बी व्ही केसकर

जिनके हाथोंसे इस ग्रंथका प्रकाशन समारोह  
शुक्रवार ता ११-१०-५७ को संपन्न हुआ ।





# MINISTRY FOR PUBLIC WORKS, BOMBAY

Sachivalaya Bombay

Camp Poona.

October 1st, Aug 19th, 1957

even after dominating the world!  
That one can serve the world that too in a commendable way is an example set by Jain-acharya Vijay Karkoor Joorjee by compiling the book AMULAS CHITRAVARI KOSHA

It is not only an unique book but Master Piece by which the Indian Literature is further enriched; and Our Great Indian Nation is greatly benefited. There is no doubt that this Kosha compiled by Shri Acharya Karkoor will go a long way and the readers will benefit by it.

We all owe so much to the Jain-acharya for this great service he has rendered to his nation and the Nation.

  
19/8/57  
(D 3 Dated)



MINISTER FOR EDUCATION

GOVERNMENT OF BOMBAY

Sachivalaya Bombay 1

3rd September, 1957.

I am glad that Jain-Acharya Shri Vijaya Hastoor Soc. 112 Lalharaj  
as compiled two books, "SHRI PRABHU VIJAYAN PATHMALAN" and "ASHESHAH

HINTAMANI KOSH".

India is proud for its cultural heritage which has always been  
enriched by selfless scholars like him. The Jain Acharya has done a good  
thing in taking out these two books which will serve the purpose for  
which they are meant.

(Nittomira Resai)  
Minister for Education.

## ( बंबेचीचे अनुवाचित )

हम संसदकी ओर जानेके बाद भी कोई सत्तरी सेवा इसी अर्थ पर हरे कर पड़ा है इस समयमें कैम-आचार्य निम्नस्तरस्तरकी द्वारा मिलित समिधान विधानमि ओर समान दिष्ट करता है ।

हम देखते एक ओर भी ही नहीं समिधान समिधान संसार है जो भारतीय संविधानमें समानोक्त कर है और मिलने हमारे भारतीय अनुवर्तन सम है । समानी संसारका यह ओर मिलने विधान समानी सम अनुवर्तन होगा ।

सहित और देखते समानीमें यह भी सेवा की है उनके लिए, उनके हम कर है ।

डी. एच. बैसाई  
 डॉ. बालसाहेब बैसाई  
 विधान विधानके बंबे बम्बई राज्य

## ( बंबेचीचे अनुवाचित )

हम हमारी सुधी है कि कैम-आचार्य निम्नस्तरस्तरकी द्वारा समानी ओर भी समानी विधान समानी और समिधान विधानमि ओर समानि मिले है ।

हमके समान निम्नस्तरकी समानीके बाद ही भारतीय संवर्तन समानी करी है और हमारे भारतीय कर है । कैम आचार्य हम समानी करके हमकी समानीका कर है । हमका यह समानी अनुवर्तन ही समानी है ।

दिलीप बैसाई  
 विधान-बंबे बम्बई राज्य

श्रीमद् हेमचंद्राचार्य विरचित महान् ग्रंथ 'अभिधान चिंतामणि कोश' के प्रति आदर व्यक्त करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। यह ग्रंथ गत आठ सौ वर्षोंका परिपाक है। शेषनाममाला लिखकर उपरोक्त ग्रंथको पूर्ण बनानेका सम्मान श्रीमद् हेमचंद्राचार्यको मिल चुका है। अभिधान चिंतामणि कोश अमरकोशकी तरह एक अमर ग्रंथ है। केवल जैन ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मी भी इस ग्रंथका अध्ययन कर सकते हैं। ज्ञानदीपक जैसे इस कोश तथा इसके रचयिताकी विद्वत्ताके सामने हमें अपना सिर आदरसे नैवाना चाहिए। मैं इस कोशके प्रकाशनके लिये प्रकाशकका अभिनन्दन करता हूँ।

यद्यपि ऐसे उच्च साहित्यिक ग्रन्थोंका प्रकाशन हमारी सरकारको ही करना चाहिये था, परन्तु ऐसे दिन अभी दूर हैं, और मुझे आशा है कि वे दिन बहुत ही जल्द आयेंगे। इस बीचके समयमें हम प्रकाशकोंके ऋणी हैं, जिन्होंने इस अमूल्य कोशका पुनर्मुद्रण किया।

यह कोश सिर्फ गुजराती या जैनोंके लिये ही नहीं, बल्कि सारे देशके लिये एक अमूल्य देन है। अपनी उच्च हृदयशील संस्कृत भाषाका रक्षण हमारा परम कर्तव्य है। ऐसे ग्रंथ हमें सुवर्ण भूतकालकी याद दिलाते हैं, और सद्ग्रंथोंके पठन और मनन करनेकी प्रेरणा देते हैं।

प्रकाशकोंसे मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वे इस विवेचनको देवनागरीमें छापें, जिससे भारतकी सारी जनता उसे समझ सके।

४।१०।५७

टी आर देवगिरीकर

एम् पी

प्रदेशाध्यक्ष, महाराष्ट्र कांग्रेस

भीदेकच्छाचार्य एक लम्बे मारत जमी मुमिकताय पंक्ति है। उनकी कीर्ति लंगरमें आज दिन तक गूंजती है। अमिनाम पितामहि कोम का कोस इसका रचा हुआ एक आलुनगीणी कोस है। यह तो पड़ोसे कई बार मुक्ति होयेपर भी बंदात पुण्याय है। जो सिक्कफ्लुरचुरिबीने इस कोस पर गुजराती मतामें एक चओरच मयिक तुल्य होकर लिखी है। यह जोरकर यह कोस प्रकाशित किया है। राज-राज देवनाम्माका दिग्गज देवचर्ये बरिहार नामकाका चम्पमेर मकाय एकरा ममकाका और एकरा कोस इसका पूरक साक्षित्य भी बंदात किया है। यह बाइबीको का काम है। इसे प्रकाशनही उपबुल्ला और भी कहाई गई है। क्योंकि कोसके सिखोंका कौशलुक्यसे विचार सिख हुआ जो सिक्कफ्लुरचुरिबी महाराज साहबने बीनड गुजरातीके कोस है और एक लम्बे चम्पामुक्कमिक और गुजराती चम्पामुक्कमिक ( चओरच मयिकके मयिक गुजराती बाइबीकी ) परिमयके साथ सिद्ध कर प्रकाशित की है। इसी राजदी देकर कोसस बहुत तुरर परिष्कार किया है। बीकान्कर बांबीबीकी कयो प्रकाशना में लंगरको नवाय परिष्कारही बाबी है। कुछ तो सिक्कफ्लुरचुरि लं मलय और आकर्षक है। यह कोस न केवल पैमिबीके सिने बांबी, कछुय मलाके लं मलासिबिके सिने एक परबुल्लाएक बाधन है। इस लं मलिक कोसस तुल्य चओरच बीकाने और बीकानिके साथ तुरर लंगरन और कुछ करके एक लंगर साक्षित्यही लेवा की गई है। इस सिनेके कारण बीकानार्थ जो सिक्कफ्लुरचुरि प्रकृति कलम ममकाके साथ है।

बनत चुरपी १८७९  
कोकफ्लुरचुरि

} अहमहोनाम्माय बली बाधन बीतवार

( मराठीमे अनुवादित )

कलिकालसर्वश श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य द्वारा विरचित अभिधानचिन्तामणि कोश आचार्य श्री विजयकस्तुरसूरिजीने अनुवादित कर संपादित किया है। कोशका उचित ढंगसे संपादन करते हुए गुजराती भाषामें 'चंद्रोदया' नामक टीका भी दी है।

कोशका संपादन करनेमें कड़ी मेहनत उठाई है, जिससे कोशका उपयोग करनेवालोंको बड़ी सुविधा होगी। किस अर्थके कितने शब्द हैं यह अनुक्रमणिका देखकर बताया है। रेखा, विरामचिह्न, ग्लोकोफ़ी संख्या आदि दी जानेके कारण बहुत आसानीसे कोशके अंतरगका पता चल सकता है। ग्रंथ लिखनेकी पद्धति शास्त्रीय तथा प्रगाढ़मयी है।

अभिधानचिन्तामणि कोश लोकोपयोगार्थ लिखा गया है और इसके लिये सब परिश्रम उठाये गये हैं।

**महामहोपाध्याय सिद्धेश्वरशास्त्री चित्राव**

कलिकाल सर्वश श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य विरचित 'अभिधान चिन्तामणिकोश' का अनुवाद तथा संपादन करके आचार्य श्री विजयकस्तुरसूरिजीने गुजराती भाषी संस्कृत निशासुओंका बड़ा ही उपकार किया है। संस्कृत कोशोंकी महनीय परंपरामें यह कोश अपना खास स्थान रखता है। इसे संस्कृतके बन्धनसे मुक्त करके गुजराती भाषामें इसका अवतार आपने किया इसलिये आप धन्यवादके पात्र हैं। इसकी और भी एक विशेषता है। अमर कोशादि कोश ग्रन्थोंमें खास करके जैन धर्मावलंबियोंके लिए उपयुक्त सामग्री नहीं मिलती। उस कमीकी पूर्ति आपने इस संस्करणमें करके जैन धर्मका भी बड़ा उपकार किया है।

गो प नेने

मंत्री, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा समा, पूना २

( **संसाधन** )

[illegible]

વિદ્યુત્ત સંગ્રહકર્તાએ અપોતી મુશળાળી માતાએ જી દુર્ગ વન્દોદયા  
દીધા ( માતા ) સમ્પાત્ત વાટકરે જિને લોચકે વરોદા ગર્ભે ગાદાનીએ  
અપાત્તેએ જિને વાગ્ત કામગી નિદુ દોષી । રોષી માતાગર્ભિ મ્વાત્તુર્ન સંકુત,  
મ્વાત્તુત્ત સંકોષી રોષી દીધા જિની ગાદી વાટકરે જિને વામ્પાત્ત વન્દાત્ત  
કામગર્ભા ગાદાનીએ વરોષ કરે ।

**कोषकार विज्ञानमय मन्त्रोक्तं  
सर्वत्र एव विद्यमानं कोषं**

(संस्कृत-संस्कृत)

[illegible]

सिद्धि विद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र

**जीमनचंद काकरचंद मावोटी**

✓ **सुश्रुत, १००**

**सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर :-**

आचार्य श्री विजय फत्तूरसूरिजी द्वारा संपादित 'अभिधान चिन्ता-मणि कोश' अम्यास वर्ग तथा विद्वत् वर्गके लिए एक परमोपयोगी एवं अनुपम प्रकाशन है। उसमें गुजराती भाषामें दिया गया विस्तृत विषय-पृथक्करण, अनुवाद तथा संपूर्ण शब्दानुक्रमणिका संपादकके श्रम एवं सशोधन-श्रुतिकी साक्षी है। व्यवहारिक जीवनोपयोगी अनेक वस्तुओंके गुजराती अर्थ भाषाम्यासके दृष्टिकोणसे महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करते हैं। ठीक वैसे ही गुजराती, हिन्दी आदि उत्तर भारतीय भाषा भगिनियोंकी शब्द निधिसे ऐतिहासिक अध्ययनके लिये भी कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य कृत 'कोश' अत्यन्त उपयोगी साधन है। नक्र (नाक), द्योतन (जोषु), अवट्ट (ऑड), चुलक तदुपरात चलु (चल), वप्ता (बाप), गल्ल (गाल), बोहित्य बेडा (वहाण होडी), नि श्रेणी (निसरणी), बहुकरी (हिन्नुहारी), उर्थनी (बदनी), नीम (नेषु) आदि अनेकविध शब्द व्युत्पत्तिकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं। ऐसे सदुपयोगी ग्रन्थको सुन्दर एवं सरस बनाकर विद्वत् संपादकने बाकई अभ्यासियों पर अनन्त उपकार किये हैं। साथ ही गुजरातके प्राचीन ज्ञान-दान निधिसे गुजराती भाषियोंको लाभ उठानेकी अनुकूलता प्रदान की है।

डॉ. हरिचन्द्रभ भायाणी

एम ए, पीएच डी

नियामक, गुजराती विभाग-भारतीय विद्या भवन



( बहीखीमे अनुवादित )

आन्ध्रान भी विजयकस्तुरगुरीजी द्वारा न्यायित अधिवाज फितामि बोया एक बिरामरबीन बीच है । यह बोना या हीरोली भी बीकरी लगना है और फितामिबो भीति लभीकी बोनोफाम्पारै पूरी कर लगना है । लंगुल तथा प्राम्पुलके सिद्धा उनके एक कावडे सिने हनेया के सिने कपी रहिये । आम्ने इनके देर प्राम्पुला, देवनाम्पुला सिन्धेक और जलपटी बल है । के लंगुल कम्पोंची दूची देकर और ही उरकुल फिता है । देवनाम्पुलके लगनके प्रमणिक प्रमणिक बरनित इत लरका दुररा कोट हो ही बरी बलम । एक देवना लफाज देवना बोलैव पूनाके सिद्धाओंको लंगुल कोट बननेमें ही लहाक होना ही, वाच परासी मुबरासी किन्ही भारि माचार्यकि सिने भी मणिक्की बहानेके बालके अदेवीच लान केकाली है उनको बर्नलगापी लम्ब कानेके छिद लहाक होना ।

कब मैं इत ब्रम्हे को उबलता गया तब मैं बरादर बादेबके प्रमणोंके बल भी प्रमाणित हुआ क्योंकि कभी मुबरासी माचनै बडे लुरर इनके प्रमोचना ही दुर है । लंगुल बादिलको मणी बमनीक कुरीले अधिक परिदुर्ष करनेमें आपने को बल उमने हैं इनके छिद मैं बलम विर लताछ हैं और बलम करता हूँ कि मणिक्की भी आन्ने एक लरका बर्न होना रहेगा ।

एच. बी. लुब

मिणिलक बादिबा बोलैव पूना

बीन पेंकसी बोंद जर्मल पूना फितामि

( अंग्रेजीसे अनुवादित )

महापंडित श्रीमद् हेमचंद्र द्वारा लिखित 'अभिधान चिंतामणि कोश' का सुंदर ढंगसे छपा हुआ प्रकाशन देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ । इसके पहले इसका प्रकाशन सन् १९४६ में देवचंद लालभाई पुस्तकोधार फंडस हुआ था । इस नूतन प्रकाशन की विशेषता यह है कि उसमें मूलके साथ गुजराती भाषामें उसका स्पष्टीकरण भी दिया गया है । इससे संस्कृत न जाननेवाले भी उसका लाभ उठा सकते हैं ।

प्रस्तावनाके १ से २४ पन्नोंमें अभिधान बीजक भी दिया गया है, जिनसे ग्रंथके अंतरंगका पता आसानीसे चल सकता है । अतमें दी हुई संस्कृत तथा गुजराती अनुसूचीसे इसकी उपयुक्तता और भी बढ़ गयी है ।

मुझे निश्चास है कि आचार्य विजयकस्तुरसरिजी भविष्यमें ऐसा ही कार्य करके संस्कृतका अनमोल शान सामान्य जनता तक पहुँचानेमें समर्थ होंगे ।

प्रो एच वेलणकर  
 डायरेक्टर  
 भारतीय विद्या भवन

## (ગુજરાતીકે અનુવાદિય)

પાત્રન વિચાર્ય પાત્રમાંના માનક કામને પરિપૂર્ણ કેરિય વાંચિયને  
 હુમિયારકને દુષ્ટ, અતુલિય કેરિયને ઉમાર ની માર્ કર્તા મેં રહી  
 અર્ધુન યાંતિરી પ્રતીક-મમ અવન્ય કુતિ અવ કેલી ની હમને માન્ય  
 મહારાજ ની વિચલ્યપુરણીપરથીયે પ્રચાલ્ય વિચલ્ય એવં અપોચન  
 વચ્ચિયે રિયે કર્તે અત્યંત મદ્દા રેચા દુરં ની । (અ પુલિયા ગુજરાત વિચલ્યાર્થે  
 વચ્ચ-પુલ્લક હોનેયે કર્તવા યોગ્ય દે । ) કેરિય અવ અર્ધી અર્ધ વિચલ્ય  
 કેલકદા અવન્ય અવ અવિચાલ્ય વિચલ્યાર્થે રિયે રેલ્લેચ અવર  
 વિચલ્ય અવ ઠો અવે પ્રતિ દુષ્ટને રહી મદ્દા એવં મરિય કીર ની અવ  
 માર્ । માન્ય ની હુમિયારકને કેલ કર્તા, રોચ કેલ વિચલ્ય, અત્યંત કેરિ  
 માન્ય વિચી અમાન્ય અનુચી વાલ ઠો કીરિયે કેરિય અમાન્ય કીરિયે  
 વિચલ્યને રિયે મી રન ઠીયેચા અમાન્ય કરના અવિચ હો અમાન્ય ।  
 કેરિય માન્ય ની અત્યંતરિચરકીને રન રોચકો અવન્ય કીરિયે અત્યંત  
 અવ એવં અર્ધન ગુરુ અમાન્ય અવ અવ વિચલ્ય દે વિચલ્યાર્થે અવ  
 અવિચલ્યે કર્તવા મુલ્ય કેલ અમાન્ય મી કેલી અવન્યને અત્યંતમાન્ય અવ  
 અવે દે । અવ ઠો રન અવને ગુજરાતી અમાન્યને ઠો રોચેને ગુમાન્ય  
 વિચલ્ય વિચલ્ય દે ।

પ્રાચીન કોલેજ  
 કાન્ય

પ્રા. વિલીન કાલેરી  
 પા. ૮. પીચ. ની

आचार्यहेमचंद्रः शब्द-काव्य-नाम-लिङ्गगमनुशासत् ।

न स केवल मुमुक्षु लोकाहितेच्छुश्च सूरिश ॥ १ ॥

विजयविज्ञानसूरेः पट्टाभरण प्रशान्तसन्मूर्ते ।

सस्कृतप्राकृतज्ञ क कस्तूर न वर्णयतु ? ॥ २ ॥

चन्द्रोदयाऽभिधां योऽभिधानचिन्तामणे ऋजु विवृतिम् ।

हंसस्य गुर्जरोक्त्या व्यधात्सुबोधाय शब्दलिङ्गानाम् ॥ ३ ॥

स्वयमेवोपादेयोऽवश्य कोपेज्वसो वरो ग्रन्थ ।

शब्दा य त्वाऽनुक्तास्तेऽपि गृहीता कतीह यत्ख्याता ॥ ४ ॥

हंसे सौरभयोगो मूलाऽनुक्तनाम-लिङ्गोजितया ।

विहितोऽनया विवृत्या, किमसाध्य आम्बतां लोके ? ॥ ५ ॥

अत्युपयोगी तदय विनियोक्तव्यो विविकिभि कोप ।

राज्ये शिक्षाऽधिकृतं पठन-पाठनयो पाठशालासु ॥ ६ ॥

ददेऽभिप्रायमुक्त कृतश्रम शब्द-तर्क-काव्येषु ।

चन्द्रशेखराऽभिल्यो शोपाख्यो मैथिल सोऽहम् ॥ ७ ॥

पंडित प्रव० श्री चन्द्रशेखर झा

व्याकरण- न्याय और साहित्याचार्य



ॐ नमः ।

नमो अबुयगिरिमंडण-सिरिउसह-नेमि-पास-  
महावीर-जिणीसराणं ॥

नमो परमगुरुवरायरिअ-सिरि-  
विजयनेमिसूरीसर-सिरिविजय-  
विन्नाणसूरिवराणं ॥

पाइअविन्नाणकहा ।

**मंगल-सिरीगा**

अएठ सो म्हावीरो, केमठायगरस्तिना ।

मोहवर्मे विषादिता, मोक्षमार्गपर्यवसो ॥१॥

विह ग्रेषम-ग्रेषम्य-प्यग्रा गृषिणो वरा ।

सुपुष्पिचरा वीरा, मध्यायं सुपुष्पं ॥ १ ॥

**इत्येते विनिर्णय गण्येन्त्या, सासये अपुष्पदीवस्य ।**

आय सरभमेचेव, होय नार्न पयासिर्य ॥ ३ ॥

विदुषा निम्नया शाली, सम्बन्धसन्निधिनी ।

पिराएज्ज ममे निचं, मचाणं इदंएव्वी ॥ ४ ॥

अथैव नेमिस्तुतिं, जगत्पञ्चमपरिणो ।

इमेवाहसुविश्यात्-पुनरभिधान-सम्भवात् ॥ ५ ॥

पसीष्टुम्य सया मञ्ज, मिजानो सुरिपो गुरु ।

पयोहवाम्यमो जेषु हरिणो ह मयप्रियो ॥ ६ ॥

नीच-सत्यपणोद्भूत, एवम्वा पावपं मुहं ।

विद्यावत्त्वमेव हि, स्थिति-अशोक-परिणामो ॥ ७ ॥

## फलसालस्स कहा पढमा- ॥ १ ॥

पहाणो सव्वया होइ, गुणेषु विणओ जओ ।

अणेण,—फलसालेण, लद्धं चारित्तमुत्तमं ॥१॥

मगहाविसए सालिगामो नाम गामो । तत्थ पुप्फसालगिहवइणो पुत्तो फलसालो नाम आसि । सो पयइभइओ पयइविणीओ परलो-गभीरू य । एगया तेण धम्मसत्थपाढयाओ सुय ' जो उत्तमेसु विणय पउजेइ सो जम्मतरे उत्तमुत्तमो होइ ' । तओ सो एस मम जणओ उत्तमो त्ति सव्वायरेण जणगस्स विणए पउत्तो । अन्नया गामसामिस्स विणय पउजतो जणओ दिट्ठो । तओ जणगाओवि इमो उत्तमो त्ति जणयमापुच्छिऊण गामसामिं ओलगिउ पवत्तो । कयाइ तेण सद्धिं रायगिह गओ । तत्थ गामाद्धिं महत्तयस्स पणामाइ कुणमाण आलो-इऊण इमाओ वि एस पहाणो त्ति महत्तय सेविउ पउत्तो । त पि सेणिय-नरिंदस्स विणयपरायणमवल्लोइऊण सेणियमोलगिउ आरद्धो ।

अन्नया तत्थ भगव वड्ढमाणसामी समोसढो । सेणियो सबलवाहणो वंदिउ निगओ । तओ फलसालो भगवत्त समोसरणलच्छीए सोहमाण पासतो अइग्गिहिओ जाओ । नूणमेस सव्वुत्तमो, जो एव नरिंदविंद-देविंद-दाणविंदेहिं षदिज्जइ, ता अलमन्नेहिं । एयस्स क्षिय विणय करोमि । तओ अवसर पाविऊण खगखेढगंकरो चलणेसु निवडिअ विन्नविउ पवत्तो — ' भयव ! अणुजाणह, अह मे ओलग्गामि ' । भगवया भाणिय — ' भइ ! नाह खगफलगाहत्थेहिं ओलगिज्जामि, किंतु रओहरणमुहपोत्तियाहिं, जहा एए अन्ने ओलग्गति ' । तेण भाणिय — ' जहा तुन्मे आणवेह, तहेवोल्गामि ' । तओ जोग्गो त्ति भगवया पव्वाविओ, सुगइ च पाविओ त्ति ॥ उवएसो—



जठरं विषयस्तेषां, नष्टा कळपतेषां ।

कष्टमस्तुभ्य कायभ्यो, जगर्हि सो पयस्यो ॥ १ ॥

विषयमोक्षं कळसाठस्त पदमा कदा समया



मुक्त्वस्स कदा बीजा — ॥ २ ॥

अभिमाहीयभीहाय विषामो दुक्त्वस्साम्यो ।

जाम्य, जह कायाळो, परिबो सुखिबो डिबो ॥ २ ॥

एवो दुक्त्वो परिबा येटीय मिरे गळो वं कळेर यम क्षिप्पचरिजं  
रेविज्ज वेसु । सा विजाय रेविरे बाएया टीर मिरे कष्टपुण्यमिसे  
कष्टम पुच्छर — हे दुक्ते ! जह एसा अविसे मरेज्ज जहा  
कहुदाउळो सा कई निगलळेज्ज । सा वण — ‘जययंठं न वेत्तयं ।  
सो वज्जे डिबो । दुक्कवि पुच्छर — क्षाय ! तव पुत्तो कसिय व स ।  
सा कळेर — वेसेदरे कायिज्जल यमो । सो पुच्छेर — जह सा  
तव मरेज्ज तव कई निध्याळो होज्ज । तया सा कहु जहरीयिजा  
क्षिप्पचरिजा तन्स वत्तयंठे क्षिप्पिज्ज वेत्तयो विपक्कसिजा । कोवि  
वण्ठं वं परिबं पुच्छर — ‘किं हर ।’ । सो कळेर — ‘बीजाय रसे  
सि । एवं बीजाय जययं विसं व वस । विसमर्य बीजाय सम्यल  
जयमायमिज्जो हुज्ज ॥ उवएसो —

‘सुउरं भयक्कन्तामं, बीजा य वसवहिची ।

हुं वहा वि पारंति तयमिमाहमे जया ॥ २ ॥’

बीजाय अभिमाहमे मुक्कपदियस्स बीजा कदा समया ॥ २ ॥



## बुद्धमंतिणो कहा तइआ— ॥ ३ ॥

सच्चनायस्म दाउणो, मंतिणो मंति थोवया ।

जह अच्चुयनायंमि, बुद्धमंतिनिदंसण ॥ ३ ॥

एगम्म मेट्टिवरस्स सत्तियपुत्तो लेहयाहगो अत्थि । सो दुब्बलो  
 वि अर्ह्य निम्भओ अत्थि । एगया मिट्ठिणो लेह गहिउण गामतरे गओ ।  
 अट्ठाण एगा सिघो मिलिओ । तेण सह जुद्धं काऊण असिणा हनूण  
 अगाओ गओ । तत्थ कोपि रायमुहं समागओ । मय भीह दट्ठूण,  
 मए एसो हओ त्ति जपतो निवस्स पुरओ गओ । नरिंदो मतुट्ठो  
 सिंघवहाओ । पारितोसिअ तम्म दिण्ण । सत्त्वलोण्हिं सो पसमिओ ।  
 सो सत्तियपुत्तो कज्ज काऊण पच्छा नियमासे आगओ । सीहग्रहयत्ततो  
 सेट्ठिणो कहिओ । सेट्ठी वेद—‘तु असच्चपटायी अमि । कह किमीभूण  
 तए सिघो हओ’ ? । तेण उत—‘मए थिअ हओ’ इअ सच्च  
 कहिअ । तहा सेट्ठिणा नरिंदस्म त पण्णयिअ—‘एण्ण सत्तियपुत्तेण  
 सीहो हओ, न तुम्ह सुहटेण’ । निवेण सुहटो बोलायिओ पुच्छिअ च ।  
 सो कहेइ मए हओ’ । निवेण निणयत्थ ते दुण्णि पुरिसा बुद्धमतिस्स  
 समाप्पिआ । सो मती निणयत्थ भिण्ण—भिण्णावरगे दुण्णि ठयिआ ।  
 सो मती नियदादिआए ठीहं तण धरिउण पुत्थय पढतो आसि । तमि  
 समए पढम सुहटो आहूओ । सो आगओ मति पढत दट्ठूण दादिगाए  
 तिण दट्ठूण तिणस्स अयणयणत्थ हत्थ उप्पाटेइ । तया सो मतिणा हु  
 हु वोत्तूण मय पाविओ, भयाउलो सो भग्गो । पच्छा सो सत्तियपुत्तो  
 आहूओ । सो वि दादिगायिअ—तिणायणयणत्थ हत्थो उप्पाडिओ, तया  
 सो मती हुफार मुचइ । सो निम्भओ दादिअ सुट्ठीए गिण्हइ, न  
 मुचइ । तया मतिणा जाणिओ एसो सत्तियपुत्तो सिंघवहगो अत्थि ।  
 त निवपुरओ अत्थि—‘एस च्चिअ सिंघवहगो जाणियत्तो’

कई ? केन सम्ये कुतं वदितं । एतो किंमे वि निम्नतो सुदमे ब्रह्म  
वि समतो नवाक्ये कई सीद्दं वसिष्ठं सि १ । निषेध सो सुदमे  
विहारीको निष्पत्तिजो व । कतिवदया सम्भाषिणो पादुहं वसत  
विषय ॥

उपपत्ति—

सुख-नात्ययार्थसि, सुदमसिद्धसिद्धिः ।

सोपचा वचनार्थ रम्य, अथ तह निम्न ॥ ३ ॥

सुखनायपयाने सुदमसिद्धिो वदयन्तु समता ॥ ३ ॥



बुद्ध्या कदा चरत्पी— ॥ ४ ॥

परिणामे समिपिकाया तदा सम्भाषकस्यता ।

अप्या संति अथ स्मेता, बुद्ध्या एत्य नात्यये ॥ ४ ॥

एतावत् वचन-वचनवाचिणो वचनवचनवचनं निष्पत्तिजो  
विषयः । कतिमे वचने एतावत् वेदीय सिद्धिं शोधयन्तं वचन । सा वेदी  
भाषाको वेदवचन, शोधयन्तसरे वचनवाचिं निष्पत्तिजो वचनवाचा-  
रिणं सिद्धिजो वचिं शोधयन्त, शोधयन्त गामसरे वचन । वचन पुनो वच-  
न-वचनार्थं विषयिण्य वचनवा तं बुद्धिं वेदीय वेदी । शोधयन्तसरे  
वचनवाचिं निष्पत्तिजो वचनवाचिं व सिद्धिजो वचिं व शोधयन्त ।  
शोधयन्त वेदीं कमवेदवचनं बुद्ध्या पुनः । सा वचन-“पुनः पुनः  
वचन वचनवा तदा वचनवाचिणो विषयं विषयं बुद्धिं केन बुद्ध्या  
पुनः वचनं वचनं वचनं वचनं, वचनं बुद्ध्या वचनवचनं वचनं वचनं,

एव भावविसुद्धीए गेहचमत्तरे सो भोयाविओ । तथा चम्मघावारिणो  
असुद्ध चित्त, जओ सो एय चित्तइ-जइ पसुघणस्स सहारो भवेज्जा  
तथा चम्माइ सुलहाइ, विणा मुल्लेण लब्भते । एय भावस्स अवि-  
सुद्धीए बाहिर भोयाविओ । पच्छा पुणो आगया, तथा घयवाणियस्स  
पसुघणविणासवियारणाए सो बाहिर ठविओ, चम्मघाणियस्स पसुघ-  
णवुद्धिवियारणाए गिहचमत्तर ठविओ ” । एव भावस्स विसुद्धीए  
अविसुद्धीए सम्माण असम्माण च नायत्तव ।

उवएसो--

घयचम्मकिणंताणं, सम्माण चावमाणणं ।

जाणित्ता ‘ भावसुद्धीए, जत्तं कुणेज्ज सन्वया ’ ॥ ४ ॥

परिणाममणुलक्खिअ सम्माणाऽवमाणणोवरिं बुद्धाए

चउत्थी कहा समत्ता ॥ ४ ॥

*अथ*

जिणदासस्स कहा पंचमी— ॥ ५ ॥

पावोदएण नस्सति, सपयाओ सुरक्खिआ ।

पुण्णोदएण जायति, जिणदासो नियसणं ॥ ५ ॥

अथि विविहजिणवरणोगेअवरालक्खि घम्मपुरीए जिणदासो  
दाणसीलो सेट्ठिवरो आसि । तस्स सीलालकारविहूसिआ जिणमई  
घम्मपत्ती, ताण दुण्णि पुत्ता, एगो जिणदत्तो अवरो अ जिणरक्खिओ।  
अहिगदाणगुणरजिण निवेण नयरसेट्ठिपय दिण्ण, तेण लोगमाणणीओ  
सो सजाओ । एगया दाणगुणरजिआ लच्छी

बेबी मन्हारलीए तस्स रसवाईचरे आगण्य टोपन कुण्डे टोपन  
 सोपना सङ्गी नियायेइ मन्हारलीए को दुक्ली पोयइ ॥ निबमम्भ  
 चङ्गाविज बीर गहिअम्भ तब आगण्डइ, रोयनकराव पुच्छइ । सा  
 कहइ—“ तुम्हा राजशुकरभिका जम्भ बाब तब येरे पुण्डपुण्डाकडा  
 सुईए छिजा । अहुण्ड ते पण्ये ग्रीये तनो ई तब गेहाओ गमिस्समि  
 ति पेसकडा पुच्छिजे जागवा । सेहुिज करत—“ एमसरिखी  
 जयत्वा कस्त होइ ? तब कि चोम्भ ? सुख गण्डसु हुं ।  
 कच्छिनेबी तच्छासकडा बयइ—“हजो अहुमे निजे पच्छिस्से, तब  
 हुं मयस कियए कोच्छे निक्कस ति बोण्य सुणअय गवा ।

पण्णसे सेङ्गी विपारेइ— अइ कच्छी निप-हच्छए मच्छइ तथा  
 निक्कसज्जमेव वरे'ति विठित्तइ, वरछारवारवृषि येसओ धारिं  
 निक्कसिज बीजणहपुहिअम्भ बाय दाई पण्णो । एवं सत्तमिं  
 बाब अहुमे निजे निहणे बाजा तब टाई जयकओ नवरओ कीई  
 संज्ञाय नईअसिअ निबपसावे सपरीबानो यनो । तब रलीए  
 हुसकपमाववाण्णई मेहो बुझो । अछपूरेव नई पवत्तीया पसाव-  
 क्कंठरअकण्ठेसमेव जियवसखओ पडिओ । सण्णइ वरवृषि कळे  
 क्वाहेमायि । सेङ्गी जीवरपकाकवे मयस-पुत्तहुगसंहुओ क्कण्ठमाकओ  
 पवत्ति नई पसइ । तब सपसावजम्भानो निम्भं सुवण्णमाळ-  
 गण्डत्वअमी मईए करत देवत्तइ, वैमिकाया निम्भइअम्भ कोत्वअमव  
 धाकिमेय करिअइ । विजयपच्छिअयाए धाकियाए कंठरअ हत्थे  
 जागओ । कोत्वअओ पवत्तिओ कळे । से कळे निबतिरवेहरी  
 निक्कओ । नई-पवत्ते जण्णगूढ क्कण्ठमा जयवरिअ त्ते सण्ण गामे-  
 कर निम्भक, बमिकाया पुत्ता । तब पण पुत्ते सेङ्गी कंब बाटोवेइ,  
 अम्भ च सेङ्गी । मण्णहरे सुण्णसिजियाय पुत्ताय अण्णअम्भ अण्ण-  
 विता सेङ्गीसङ्गीये जमओ पडिआ । एवं जहरे अहरे गमवा  
 निबविसण्णओ बुबुर निम्भ ति ।

‘बुहक्खा-दुक्खद्विया भमता विमलपुरीए वाहिर समागया । तत्थ पुरवरीए एगो धम्मदासो सत्थवाहो परिवसइ । सो कयाणगाइ गहिऊण समुद्दमग्गे वाणिज्जत्थ गओ । रयणदीव वव्वरकूलाइ भमतो वहुधणमुवज्जतो पच्छा सविसयसमुद्द समागच्छमाणो अत्थि, तया अस्स जिणदाससेट्ठिवरस्स ज धण नइप्पवाहेण पघाहिअ, त सव्व समुद्दभतरे समागय, त सव्वधण गुत्तरयणभरिअपट्टगसणाइ तह य सो सुवण्णथालगकोत्थलगो तस्स सत्थवाहस्स सपत्त । तीए समिद्धीए महारिद्धिवतो नियनगरे समागओ, जमि दिणे सो जिणदासो सकुहुवो नयरवाहिरे थिओ अत्थि । तहिणे व्विअ तेण सत्थवाहेण सव्व गाम जेमाघिउमारद्ध ।

भोयणावसरे सां जिणदासो टुण्ह पुत्ताण कत्थवि चणगे लद्धूण भोयणाए अप्पेइ । तया गामवासिणीओ इत्थीओ जलत्थ गच्छतीओ तं दट्ठण कहिति- “भो लोगा ! किमत्थ चणगे खाएइ ?, अज्ज नयरसि सत्थवाहो सव्व गाम भुजावेइ, तुम्हे वि तत्थ चलह, सात्तरस च भोयण भुजह ” । तेण जिणदासेण उत्त — ‘अम्हारिसाण पारद्धे त नत्थि, तेण इणमेव सेदठ ’ । ताओ गामे गच्चा सत्थवाह कहिति—“ तु सव्व गाम भुजावेसि, किंतु गामवाहिरे केवि परदेसवासिणो आगया, ते भोयण करिउ नागच्छति, वुमुक्खिआ एव चिट्ठति, त न वर ” । त सोच्चा सत्थवाहो ताण वोद्धवणत्थ पुरिसे पेसेइ । ताणमईव अग्गहयसेण जिणदासो सकुहुवो तत्थ गओ । सत्थवाहो वि आगय त जिणदास सम्माणेअ अप्पणा साद्धिं भुजावेइ ।

एत्थ किं जाय तमाह-सो सत्थवाहो नियकुहुववग्गस्स परविसय-वासिणो य जिणदासस्स नियरिद्धिवित्थारदसणत्थ ताओ सुवण्णथालीओ भोयणत्थ कट्ठावेइ । सकुहुवज्जिणदासस्स भोयणत्थ थालीओ दिण्णाओ । भवियव्वयानिओगेण सा चिय खदियथाली भोयणाय



सव्याओ गणिआओ। धत्तीमा ताओ सजायाओ परिपुण्णाओ। सेट्टिणा  
 चित्तिअ- निरत्थअ एसो ताहिओ। जिणदास कहइ--‘एतच्चो मे  
 अवरारो?, सहसा अविआरिअ फज्ज कय’ जिणदासेण उच्च-‘नत्थि  
 ते दोमो, मम एव, जेण पुण्ण विणा तव गेहे भोयणाय समागओ।  
 जइ पारद्धे मिट्ठन्न न सिया, तथा तम्मस भोयणे विवरीयमेव सिया’।  
 तओ तेण सेट्टिणा खटिअकठथालीविसओ पण्हो पट्टो। तेण उच्चं  
 --‘खडियथाली भोयणाए मम समागया। त द्दट्ठण किं इमा मम न  
 वा? इअ जाणणत्थ मम समीवत्थिओ थालीए कठखटां तत्थ दिन्नो,  
 निभगययाए तत्थ विअ थिरो जाओ, मण न गाहिओ’ इअ  
 सव्यवुत्ततकद्धणपुव्व वण्ह-‘एमो रिद्धिप्रित्थरो मम एव’ जइ तव  
 मका होज्जा, तथा सच्चावणत्थ कहेमि--‘जत्थ थालीओ लद्धाओ  
 तत्थ तव ताहिं सह अन्न किमपि पत्त न वा?’ तेण सेट्टिणा वुत्त--  
 ‘पमूआणि वत्थूणि ताहिं सह पत्ताइ, अन्न च भारपट्ट-पह्णाइवहुकट्ट-  
 वत्थू च’। जिणदासेण वुत्त ‘जत्थ ताइ सति, म तत्थ नएइ।’ सो  
 सेट्टी तत्थ त नएइ। तत्थ गत्तूण एग थूलपट्ट फाडेइ। तत्थ वहुणि  
 रयणाइ लक्खमुल्लाइ दिट्ठाणि। तथा धम्मदासेण नाय ‘एयाओ  
 सव्विइहीओ अस्म एव’। त वोल्हइ--‘जइ तव एआओ, तथा ताओ  
 गिण्ह’। जिणदासेण उच्च--‘स्त्रीणपुण्णस्स मम सव्या नट्ठा इही तुम्ह  
 पामे समागया, जइ पुण्ण न सिया तथा गहणेण किं?, तीए नत्थि  
 मे पयोजण’। एव वोत्तूण अगगओ चलइ, गच्छत त वएइ--‘कइ  
 रयणाइ गिण्हेइ’। सो न गिण्हेइ। तथा उवगारकरणत्थ दुण्ह वालगाण  
 भोयणाय एगगरयणभरियवरमोयगचउक्क देइ। जिणदासो निसेहेइ,  
 जेण भोयणे भुत्ते समाणे ताडणया सजाया, तथा मोयगगहणण किं  
 सिया? अओ अगहणमेय घर। सो जिणदासो न गिण्हेइ। सो वेइ  
 अह तुम्ह न देमि, किंतु वालगाण भोयणाए देमि। इअ घलक्कारेण  
 लइए देइ। अणिच्छूणे वि जिणदामो उवरोहवसेण गिण्हित्ता गामाओ-





सेढी कम्मकर कन्दविअहट्टे पक्कन्नत्थ पेसेइ । सो वि तस्स चिय हट्टे गच्चा सरस पक्कन्न भग्गेइ । सो कन्दविओ रूपयदुगेण दुण्णि मोयगे अप्पेइ । सो किंकरो गहिऊण सेट्ठिस्स अप्पेइ । नियमोयगे ददट्ठण एगो खट्ठीकओ, मज्झमि रयणमेग दिट्ठ । वीय पि भग्ग, तत्थ वि एग रयण लद्ध । रयणदुग पासित्ता सेट्ठिणा वियारिअ—ते च्चिय मोयगा, जे रयणजुय-मोयगा चररो जिणदासस्स अप्पिआ, कह कन्दवियपासे समागया ?, कह दुण्णि ?, किं वा सेट्ठिणा विक्किया ?, तओ निण्णयत्थ पुणरवि किंकरं कहेइ—जाघंता मोयगा कन्दविअस्स हट्टे सत्ति, तावते मोयगे गहिऊण समागतव्व । किंकरो तत्थ गनूण कन्दवियस्स पासमि भग्गेइ—‘जाघता लद्धुआ सिया, तावते सव्वे देहि, जओ सेट्ठिणो रुइया । कन्दविओ कहेइ ‘दुण्णि चिय मम पामे सत्ति ?’ । तेण गहिऊण सेट्ठिणो अप्पिआ । तम्मज्जे-हिंतो वि दुण्णि रयणाइ निगयाइ । सेट्ठिणा चिंतिअ—‘कन्दविअस्स पासे कह एए समागया ?’ । तन्निण्णयत्थ कन्दविओ वोल्ळाविओ पुट्ठं च । कहिय—‘मए निम्माविया’ । सक्कोह पुट्ठ—‘सच्च निवोएसु, अन्नहा दडिस्स’ । तया सच्चमुत्त कट्ठिहाराहिंतो गहिया । तओ सेट्ठिणा किंकरमहत्तम पेसिअ ते कट्ठिहारा आहूया । किंचि भय दसिऊण पुट्ठ । तेहिं सच्च कहिअ—‘कपि वाणिअ लुट्ठिऊण गहिय’त्ति । सेट्ठिणा चिंतिअ ‘तेण जिणदासेण मोयगगहणे निसिद्धे वि मए वलाओ दिण्णा, तेण तस्स महप्पस्स दुहवाणनिमित्तगो ह जाओ’ । किं करोमि ? । तमि विहाया रुट्ठो अत्थि, तेण दडवविचरीए अणुकुल पि विचरीय जायइ । अल चिंताए । ज भावि तमवस्स होही, इअ चितयतो निच्चित्तो जाओ ।

तस्स ठक्कुरगामे वसतो सेढी जिणदासो एगया वासासु गामतरे गओ । सप्पाए पच्छा वलतो ममो नई आगच्छइ, जलपूरभरिअनधं

वृत्तिर्न कथयतो यदपि ननुवृत्तिर्न कथयमायतो । तत्र मारुत-  
विषयो निवसति । ते कैरिष्य ?

एगोमरा विमिश्रा, विषया मन्त्रमासिषो ।

मारुतविषयो, तेहि मि मिमलसुखेभ्यः ॥

तत्र एवो कथयमायतो निवसितं पुण्यं इ विम । कथं किं  
कथयन् कथं कथिष्यत् ? । पुण्यमारुतेन पुण्य-हे पुण्य । ननुवृत्तिस्तो  
पुण्यं तत्र केहि मुनिष्यो समायय । इमस्त कथयत्त हेमिन् यदपि  
विषयं तेहि विविहयामन्त्रवृत्ताओ कथयओ । एतेन मुनिष्य कथि-  
“अहमि एवमन्त्रविमलसुखेभ्यः कथो कथिष्य रमिष्य । तत्र आचार्य-  
मारुतसुखं कथं-एवस्त तस्मिन् हेमिन् कथं कथिष्य कथयओ  
विमलसुखं तत्र कथिष्यमायतो कथिष्य । एतन्मन्त्रविमलसुखेन  
कथिष्यिष्यो कथं कथिष्य पथिष्य, तत्र तत्र मुनिष्यो कथिष्य । ननु-  
मन्त्रविमलसुखेन कथिष्यमायतो तस्मिन् एव संवत्सरा । एव इमाओ  
कथयओ मन्त्रविमलसुखं कथिष्य । एतन्मन्त्रविमलसुखं मारुतसुखं  
मुनिष्यो विमलसुखेन वि कथिष्य इमा मन्त्र । तत्रो कथं  
कथय तदप्यो कथिष्य कथिष्य कथयन् मन्त्रविमलसुखं  
ननु कथिष्यमायतो तेहि समाययओ । एतन् विमलसुखेन विमलसुखं  
“पुण्यमारुतसुखेन कथिष्यो मन्त्र ननु पुण्यमारुतसुखेन कथिष्य  
विमलसुखे, तेन एव संवत्सरे कथिष्य किं कथिष्यो ? । कथं कथय विमलसुखं  
वि कथिष्य पुण्यमारुतसुखेन वि कथिष्य तत्रो कथं कथय मन्त्रविमलसुखं  
संवत्सरे ? । पुण्यमारुतसुखेन कथिष्यो मन्त्रविमलसुखं कथयओ वि न कथय  
एतन्मन्त्रविमलसुखं तेहि कथिष्य विमलसुखे कथिष्य विमलसुखं कथिष्य  
विमलसुखं कथिष्यो मन्त्रविमलसुखं कथिष्य विमलसुखं कथिष्य विमलसुखं  
विमलसुखं कथिष्यो मन्त्रविमलसुखं कथिष्य विमलसुखं कथिष्य विमलसुखं

एतन्मन्त्रविमलसुखं कथिष्यो मन्त्रविमलसुखं कथिष्य विमलसुखं कथिष्य  
विमलसुखं कथिष्यो मन्त्रविमलसुखं कथिष्य विमलसुखं कथिष्य विमलसुखं

स्थ कस्स वि दिज्जइ तथा सोइण । अहुणा मज्झोवरि गामठक्कुरस्स  
महोवयारो अत्थि, तेण वासाय घर पि दिण्ण, तस्स किंए हट्ठ  
मद्विय कयविककय कुणतो इ घण पि किंचि लहीअ, तम्हा गामठक्कु-  
रस्स देमि त्ति ” धियारिअ भज्ज कहेइ--“ अज्ज दुण्णि लड्डुए  
सुगधजुत्ते निम्मवेहि । तेसु लड्डुएसु इमेसिं दुण्ह लयापण्णाण चुण्ण  
भिन्न भिन्न पक्खिवेज्जाहि, जेण ठक्कुरस्स पुत्तदुगस्स दिज्जइ ”,  
एव कहिऊण लयापण्णाण चुण्णदुग दाऊण कज्जत्थ निग्गओ ।

जिणमईए चित्तिअ--‘ मम पुत्तेहिं कयावि मोयगा न भक्खिया,  
तेण पुत्ताण भक्खणत्थ अहिग करोमि ’ त्ति चित्तिऊण चउरो लड्डुआ  
निम्मविआ । दुण्णि ओसहिसजुत्ता, दोण्णि य ओसहिधिहीणा कया ।  
ओसहिजुत्ता मोयगा नीसरणीए उवरि ठविआ, ओसहिहीणा नीसर-  
णीए अहमि रक्खिआ, मज्झण्हकाले दुण्णि पुत्ता जया पाढसालाओ  
समागया, तथा ताण माया हट्ठे कयविककय कुणती यिआ अत्थि ।  
बुहुक्खिआ ते पुत्ता नीसरणीए उवरि गया, दिट्ठा ते लड्डुआ । तेहिं  
ओसहिसहिया मोयगा एगमेग पुण्णप्पहावेण भक्खिऊण गया पाढसाला ।  
तयणंतर सेट्ठी वि घरे समागओ, कचि काल ठिच्चा नीसरणीए  
अहमि ठविए दुण्णि मोयगे गहिऊण ठक्कुरस्स अप्पणत्थ गओ ।  
ठक्कुरस्स समीवे गच्चा कहेइ--“ सिरिमत्तस्स अप्पणत्थ लड्डुअदुग  
गहिऊण समागओ म्हि । इमा लड्डुआ सप्पहावा सति, न उ सामन्ता ।  
एगस्य भक्खणे सत्तदिण्णते रज्ज होइ, अवरस्म भक्खणे जया सो  
रोवेइ, तथा तस्स नेत्ताहिंतो मोत्तिआइ झरति, जओ ओसहिमिस्सिया  
मोयगा एरिसा पहावसहिया सति, नन्नहा मम वयणसिया ” । तओ  
ठक्केण ते दुण्णि मोयगा पुत्ताण भक्खणट्ठ दिण्णा, भक्खणाणतर  
दुण्णि पुत्ता ताडिया, कस्स वि अच्चीहिंतो मोत्तिआइ न निग्गयाइ ।  
रुढो ठक्कुरो जिणदास कहेइ--“ तए मम पुत्ताण ताडणाय एव कय;

तव पुच्छं पुच्छार्थं ह्यभिस्सामि । , इव कश्चिज्ज एवमस्सामो विवा-  
सस्स दुवे पुच्छे कोस्स विज वदत्तं वेदाज्जय अण्णिमा । कश्चि व-  
दे वेदाज्ज ! इमे हणिय्मसु ज्ञाह तुमपि ह्यभिस्सामि । । वेदाज्जो  
विजवासस्स दुप्पि, पुच्छे वेत्तुव वदह मज्जो । विजवासो वि विदेह-  
" किं रिस्सिमे वप्पे जसक्कं ज्ञात्तं ? कश्च निम्मज्जवाह मम व-  
ज्जत्तं ? किं क्खेमि ? , मय निमित्तो पुच्छार्थं वदो ज्ञात्तो के सत्तं  
गच्छादि ? दुप्पिज्जस्स मज्ज जम्पो एव सत्तं ज्ञा सत्तज्जिज्जस्स  
मम पुच्छार्थं पुच्छं होस्सह तथा सोत्तं होही । इहहविवादेव ज्ञात्तं  
विदीद्वत्तं पचप्पिदिक्किमेतं ज्ञात्तं निदे गज्जो मज्जप दि सत्तं  
कश्चिज्ज । एव पुच्छविज्जणेण सुप्पिज्ज, पुणपि वेत्तं पचा सेट्ठिज्ज  
जम्पोवत्तज्जमेव ज्ञात्तसिज्ज । उच व-<sup>१४</sup> " के जाविमो जावा मज्ज  
ह्मि, दग्ग सोत्तं ज्ञा, जम्पपत्तं सत्तं सत्तं होह " एवं कश्चिज्ज  
दुप्पि जम्पपत्तं सत्तं सत्तं ज्ञात्तं । सो ज्ञात्तो विजवासस्स दग्गि  
पुच्छे गद्दिता वदत्तं समागज्जो । पुच्छेहि जे सोत्तं मज्जिज्ज वा हेह  
मज्जिज्जज्जमेव एवमज्जज्जज्जज्जो निदेव विजवासेव मज्जिज्जो  
ज्जत्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं विजवासेव मज्जिज्जो । मज्जे गच्छंता  
हे विवात्तं-किं विवात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं वदत्तं वेदाज्जय अण्णिमा ।  
सत्तं दुप्पि मज्जंति तथा ज्ञात्तं विजवासेव ज्ञात्तं  
सोत्तं ज्ञात्तं । सोत्तं ज्ञात्तं वदत्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं  
ताह मिज्ज । सो ३ वेदाज्जो तात्तं पुच्छार्थं ज्ञात्तं- " तुम्हाय वदत्तं  
ज्जत्तं ज्ञात्तं, तुम्हाय मिज्जज्जज्ज ज्ञात्तं " । विदो ज्ञात्तं-  
निरवत्तं मज्जमेव किं पचोत्तं ज्ञात्तं ? , तत्तं कोवि ज्ञात्तं  
न ज्ञात्तं ज्ञात्तं ? ज्ञात्तं निरवत्तं ज्ञात्तं वेदाज्जय अण्णिमा वि विवात्तं  
वदत्तं ज्ञात्तं सो एव विदेह-<sup>१५</sup> " इं ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं  
ज्ञात्तं ? ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं  
तथा ज्ञात्तं मं वि ह्यभिस्सह । ज्ञात्तं ज्ञात्तं ज्ञात्तं वि ज्ञात्तं

पुण्णप्पहायेण तस्स असी न चलेइ तथा पाउवमुयदयापरि  
 णामो ताण कहेइ- ‘ तुम्हे जइ मम वयण अगीकरिस्सह, तथा तुज्जे  
 न हणिस्सामि ’ । तेहिं उक्त ‘ किं त ? ’ । चढालो कहेइ- ‘ इओ  
 सिग्घ जइ गच्छिज्जाह, कियापिण अस्सि गामे न आगच्छिस्सह  
 तथा तुम्हे न हणिस्सामि ’ । तस्स वयण अगीकरिअ उवयारत्थ कइ  
 मोत्तियाइ दाउण ते जिणदत्त-जिणरक्खिया तओ सिग्घ निगया  
 अढविं पत्ता । तथा जिणदत्तो सोलसवासिओ, जिणरक्खिओ तेरह-  
 वासिओ अहोमि । अढविं गच्छता ते दोण्णि तओ गामाओ बहुदूर  
 जाव निगयत्ति । तत्थ सझाए अणेगसाययणभीसणाए अढवीए  
 कासइ महारुक्खस्स अहमि थिआ वियारति-‘ एयमि रण्णे रत्ति  
 कह नेस्सामो ?, ममीवत्थो कोपि गामो न दीसइ । तओ एत्थ  
 तरुस अहे वसण वर । जिणदत्तेण जिणरक्खिओ उक्तो-“ अम्हाण  
 सह सुवण न जुत्त, अओ अणेगकूरपाणिगणभीसणा एसा अढवी  
 अत्थि । तओ अह जग्गिस्सामि, तु अईव गिलाणो सि, तेण पुव्व  
 सुविज्जाहि, पच्छाह सुविस्सामि ” । जिणरक्खिओ वएइ ‘ ह तुह  
 लहू वधु न्हि, तु मम जिट्ठयरो वधवो सि, जेट्ठो वधू पिउ- तुह्मदिट्ठीए  
 दसणीओ, तओ पुव्व तुम्हे सुयेह, मज्झरत्तीए तुम उत्थाविअ अह  
 सुविस्स ’ । तत्तो अईव निव्वधेण जेट्ठो सुत्तो । लहुवधू जागरमाणो  
 जिट्ठवधव रक्खतो चिट्ठइ । एगमि पहरे गए रुक्खस्स विलाओ  
 एगो भीसणो सप्पो निगमो । तत्थ सुत्त जिणदत्त ढसिऊण थिलमि  
 पविट्ठो । मज्झरत्तीए जिणरक्खिओ जिणदत्त जग्गावेइ, सो न  
 उदढेइ । तेण चित्तिअ-“ गाढनिहाए पहिओ एसो, तओ पच्छा  
 जग्गाविस्सामि ” एव तइअपहरे गए पुणरवि उदढावेइ, सो नोदढेइ,  
 ताव पभाय पि जाय । जाए पच्छूसे नियवधव निषेदठ विसमइअदेइ  
 ददूण-किं मम वधुस्स जाय ? ’ अहवा सप्पदढो दीसइ ।

पावटिबं बंधुं वासिष्ठा कर्तुं रावद् बोधेर—“इदमेव पुत्र्य मातृपित्र्या  
सह पित्रेभ्यो कृतां बहुणा बहुपात्रि सह हा'हा' किं करोमि ? कथं  
जामि ? कं सुरज गच्छामि ? एवं सा रावमाणा विवदम्यं तत्र  
विभो । आसत्सज्जनायणो केषिं तस्स नरिण । अप्याज विरं कच्छ  
चित्तम्— निवर्तयुज्य मरुतिव्य करमि पच्छा जामिह्य कश्चिमि ।  
ममीत्य कोचि गामो जन्नि न वा इव जायजस्य कच्छमारुज्यं चरित  
यस्य । वादिपदिभाण समीपस्य गामे पाठ्य । निवर्तयुज्य  
देह तस्मो साहाय बत्थेय बंधिज्य सो वादिपदिसय चरिजा ।  
यामि जायजे गय दया एवं महानवरमागय । तामि सा कथिदो ।  
ममंतो याम्यस बजबत्तस्य विवदस्य चरगले यत्ता । सा सङ्गीत  
क्षिप्यपिज्जं वासिष्ठा पुच्छ्य एव कुत्रा किमत्य तुं जामाता सि ? ।  
सा त्वंता वेद— “मम वैदो वच् चरन्ते सप्यय दृष्टा मयो  
जासि तन्त मय्यजिज्जयत्तं सामाणि यद्विं जामो मि हे  
दृष्टा । ममुवादिं विवो किवा मय्यजिज्जयत्तं मय्य देदि'ति  
द्वंतो बोधेर । तथा तस्स नेसाहिता मोचिजाय पठंतायं चरुज  
मोचिज्जोद्विषावगदिजो तं सिज्ज निज्जतरं नेह । निवर्तयुज्य  
करस्यमाय बोधेर ‘एवं उपरितर्धमि नरुदि' सो किंजो तं ज्वरिं नवाह,  
विज्जयदेही पच्छा ज्वरिं गत्ता तं क्षिप्यपिज्जं क्कामो मत्तममूमिद्वे  
मेज्जय एगाय मेज्जमाय पविक्कवेह । सो तत्र विभो चित्ते—

अहुणा किं चार्थं ? कुरो सेम्टी वीमह, मोचिज्जोदेव इ एव  
पविक्कत्तो जजो वीसरजं कर्त्तुं समवेज्जा ? । मम बंधुस्य मरणाकैर्य  
कर्त्तुं कज्जामि ? एवं कथ्यो मेज्जमाय विभो जन्नि । विज्जयदेही वि  
पच्छयं तं वादिर निज्जयसिज्जय क्कसापारेण ताप्तिता मत्तविता  
पठंतायं मोचिजाय गधेर, तथा साउपरं माय्यं मुंवाप्तिता  
पुक्कपि मेज्जमाय पूरे । एवं तस्स विनायं हुक्कमेव पच्छंति ।

एत्थ जिणदत्तस्स किं जाय, त कहिज्जइ-तमि रण्णे मज्झण्हकाले  
 गारुलविज्जाधारिणो कइ गारुलिया तत्थ समागया । मग्गपीरस्समा-  
 वणयणत्थ तस्स तरुस्स अहमि थिआ । परूपर सलाव कुणतेहिं तेहिं  
 गारुलिएहिं रुक्खस्स साहाए वधिओ जिणदत्तो पेक्खिओ । तओ  
 उवरिं चडिअ त जिणदत्त अहे अवयारिउण त निच्छेद्व पासेइरं ।  
 नीलवण्णसजुयदेह दट्ठूण निण्णिअ, सप्प दट्ठो एसो । सप्पदट्ठपुरिसो  
 छम्मास जात्र जीवइ । तेण इमस्स गारुलियमतेण जीवदाण दाउ जुत्त,  
 परोवयारेण अम्हाण जीवणपि सहल होउ त्ति वियारिअ गारुडमतेण  
 सो निव्विसो कओ । खणतरेण सुत्तो इव जागारिओ सतो समीवत्थिए  
 गारुलिए पासइ, नियवधु न पासेइ । ते पुच्छिआ मज्झ वधू कत्थ  
 गओ ? । तेहिं उत्त-‘अम्हे अहुणा एत्थ समागया, रुक्खवधिअ  
 सप्पदट्ठ त दट्ठूण गारुलमतेण तु निव्विसो कओ । एत्थ तव वधू  
 अम्हेहिं न दिट्ठो’ । त सोउण जिणदत्तेण चिंतिअ-‘नूण मम वधू  
 म सप्पदट्ठ दट्ठूण रुक्खपसाहाए वधिउण कत्थवि गओ होज्जा ।  
 कत्थ त परिमग्गेमि’त्ति ? वियारमग्ग त गारुलिया पुच्छति-किं  
 चित्तेसि ? । तेण मव्वो वुत्ततो कहिओ । तुम्हाण पच्चुवकरणे ह  
 असमत्थो, किं करोमि ? । तेहिं उत्त अम्हाण कावि इच्छा नत्थि ।  
 तवोवरिं कओ उवयारो भवतरे कल्लाय होउत्ति कहित्ता ते गारुलिया  
 इच्छिअमग्गे चलिआ । सो जिणदत्तो लहुवधुणो मग्गणत्थ अग्गे  
 चलिओ । कत्थपि सुद्धि अपात्रतो सत्तमादिणे जमि नयरे सो  
 जिणरक्खिओ किवणस्स घरे थिओ अत्थि, तस्स नयराओ वाहिर  
 आगओ । तया तस्स नयराहिओ अपुत्तो अकाले मच्चु पत्तो । तेण  
 पहाणेहिं रज्जजोग्गपुरिसमग्गणाय छत्तचामराडविहूसाजुओ गओ  
 अलकिओ । सो गयदो नयरे भमतो कमेण नयराओ वाहिं जत्थ सो  
 जिणदत्तो तरुस्स साहाए अत्थि, तत्थ समागओ । सो गयदो त...



त्रिनयनं कथमन्य आभिमिच्छन् सर्वं विषयं हर्षं हरिश्चाह वामदे  
 सुखमयं वीर्यमिति । गच्छन् वरपत्न्यं तं गच्छिष्यन् तस्मै पुंमप्यर्पयति ।  
 मन्त्रिपुत्रा पञ्चभ्यः अदिनर्तं नर्तितं हरिरेव नर्मयति । सम्यक्सर्वं उक्तं  
 वदेमिति । रत्नसङ्घातं रत्नाभिनयणं अदिशितवति । एवं रत्नराजं  
 आसन्निर्याज्यं न कश्चि नगरे महामाया काया । निषण्णुगवत्समं  
 सञ्जातं वरपुत्रिणा पतिव्रतादि कथादि तस्मै पञ्चटी न उदरकः ।  
 ज्ञानो मन्त्रं कथयुक्तमयं बुद्धिजा कठुप्य विवक्षे मेह ।

एवमिदमप्येहिगच्छ विविधलाहणार्थं सर्वथा उच्यते। यममृत्तिसिद्धे विना  
 कर्तुं कथं विष्णुं गच्छ । तस्मै मन्त्रिपुत्र एवो आदिपुत्रा अर्पय  
 मा जम्बायां योगी आत्मा । मेव सः विवक्षतेऽपि तं मृत्तिसिद्धं रत्नराजं ।  
 हौय कथं— मम पुत्रा आह्वयं हवर्षता अर्पय । तस्मैपुत्रि कथं नि  
 विष्टिराता न कथम्या तय मृत्तिसिद्धे अर्पयता अर्पय । तस्मै हवर्षता  
 साध्या वरपुत्रा सम्यं पश्यति । एवं तस्मै पुत्रस्य वरवर्तं सेव्यं  
 सपीवनवर्तितवामी हवर्षता निवर्तता— सीतवर्षराजावर्तं विवक्षति  
 एवेह । कर्तुमर्ह्यं कर्तुमर्ह्यं, वरपुत्रस्य सीतवर्ष विवर्षते  
 विवर्षते । नः विवक्षते विवर्षते— कथं तं कथं ?  
 कथिपुत्रस्य सुहृदं वरं कथं वदेमि ? अहं विवर्ष तय  
 मन्त्रिपुत्रस्य काया अर्पय एव विषयं मम पुत्रस्य अर्पे विवर्षते  
 पञ्चटी सम्यं मेहणं ह्यती । एव विवर्ष मन्त्राय विवर्ष तं मन्त्रिपुत्र  
 कथं— तु मम पुत्रस्य सीतवर्षकथं पश्यिष्यन् अर्पयति, तथा ई  
 नमेह विवर्षति । तय कथिं नीय कथं वीर्यं अर्पे कथं  
 मन्त्रिपुत्रं कथिपुत्रस्य । एवमेव अर्पय कथं मम अर्पे कथं  
 अर्पय । तथा विवर्षते कथं— कथं एवं न कथिपुत्रं तथा ह्यती  
 कथिपुत्रा तु मम न कथं, निवर्षते कथं एव कथं ?  
 मन्त्रिपुत्रं एव मन्त्राय अर्पयति अर्पयते कथं कथिपुत्रं

एव मोऊण मरणभएण तेण मोत्तिअञ्जरेण चित्तिअ—“ किं करोमि ? ज भावि त अन्नहा न होइ, तीए कन्नाए एरिसा भवियववया, तेण एरिसो पसगो उवट्टिओ, अओ अहुणा एअस्स वयणस्स अगीकरण चिय वर, पच्छा जहोइय करिस्सामि ” । एव विआरिउण क्विणसेटीहस्स उच्च—‘ अह परिणैउण तव पुत्तस्स कन्न दाहामि, तुम्हे पि नियवयण सम्म पालिस्सह, ’ एव सोऊण क्विणसेटी परिउट्टो । घरमि विवाहमहूसवो वि पारमिओ । नरिंदगे गच्छा नियपुत्तविवाह-करणत्थ पाहुड दाऊण अलकारजुत्तहत्थि—तुरग—रहाइ—सव्यविवाहु-वक्खर गिण्हित्ता घरमि समागओ । पत्थाणदिणे हत्थिरयणे त मोत्तिअञ्जरग उवघेसिअ, नियकोटियपुत्त च वसणढक्किअरहे आरोवित्ता नयरमञ्जेण निग्गओ । पउरा मोत्तिअञ्जरणमुह ददूण मसस काउ लगा—‘ धण्णो एसो सेटी, जस्स एरिसो रुववतो पुत्तो अत्थि ’ । एव मोत्तिअञ्जरस्स रुवसलाह सुणमाणो सेटी कमेण कन्तानयरे सवत्तो । सो रयणसेटी वि हत्थिरयणे थिअस्स मोत्तिअञ्जरस्स रूप ददूण अहियधरो तुट्टो । मोत्तिअञ्जरण—सीलवईकन्नाण विवाहो वि समह सजाओ । करमोयणसमए जामायरस्स बहुदव्व दिण्ण । एव विवाहमहूसवे समत्ते तआ सव्वे निग्गया । मा मीलउई मायपिउण पाएसु नमित्ता, सिक्ख गहिउण मोत्तिअञ्जरेण सद्धि रहवरमारुढा निगच्छइ । नियपइणो अब्बमअ रूप ददूण नियजम्म सहल मन्नेइ, पामत्थिआए दासीए अगगओ सिलाह अकासी —“ मम पिओ रायकुमारो इव दीसइ, इत्थीसु किलाह पुण्णवई, जओ पुण्णोदएण एरिसो मए भत्ता पत्तो ” । सोवि मोत्तिअञ्जरओ किंपि न वोहेइ, अथिरमणो इओ तओ विलोएइ । मा सीलवई चचलचित्त नियप्पिअ ददूण पुच्छइ —‘ हे पिअ ! अहुणा विणोयसमए किमेव अथिरमणो लक्खिअज्जइ ? मोत्तिअञ्जरओ कहेइ—“ हे वाळे ! अह तव न भत्ता, भाइएण मए तु परिणीआसि । जओ एसो क्विणसेटी मोत्तिअलोहेण

निमपरसप्तमभूमिषडं मञ्जुसारं मं पुरिष्णं रक्षतः । रिपे रिपे  
 व्यट्मपजागेत्य मञ्जुसं जच्छीदितो पईताइ मोतिजाई निष्ठाइ । अदुप्य  
 व माहप्य व परिमेठ्य तम्सं च्छिद्यपुत्तस्य जप्तिस्तमि तया सो  
 क्षिणसेट्टी ये मोइस्साइ । एतेषु वि सवीवत्तो क्षिणसेट्टी राज्ञो  
 जववरप्याव सप्यं वेइ जज्ञो इं गच्छिस्तमि एव च्छिद्यं से  
 मोतिजस्तय राज्ञो ओवरिद्यं जप्ताइमाक्का । तया सक्षिप्त से  
 कोटिजो पुत्ता राजमुपवसिषं समागता । सीकराई दासीइत्येव रां  
 वइव व पाछेइ । पुण्यवि वदिह ज्ञागच्छइ एव पुण्यवि दासी  
 ववम्य व पाछेइ । सा ववतो वत्त विजो । क्षिणसेट्टी वत्त ज्ञागतो  
 जप्ते वि ज्ञा ज्ञागता सीकराई वदइर कि एव कोटिसे ? । ए  
 कोटि— न मम एतो कोटिजं भन्ता मण परिणीता मत्ता अईव  
 सवपद्य तया वइ एतो ज्ञागच्छिस्तइ तया ज्ञां निष्ठाइस्तइ,  
 एवं तमि वत्त दासीइत्येव ज्ञाव । मञ्जुसत्तपुरिसेदिं वदिह— एव  
 क्षिणसेट्टीयेव, व ज्ञागच्छं तं वरमि ज्ञागच्छं एव ज्ञामि सप्यं  
 सुप्यं संयाव । ज्ञागच्छं निष्ठागच्छं सप्यं ममागता । सीकराई ववम्य  
 एतो दासी जप्तिजो वत्त दासीइत्या सीकराई वदइ । ज्ञामि रिपे  
 पिण्येदिता सा कोटिजो पुत्तो सीकराई सवीव ज्ञागच्छतो दासीव  
 ज्ञागच्छिजा ववम्य मीसत्तर्पाव ज्ञो क्षिणसे । तस्स ज्ञागच्छं वि  
 कुण्डिज्जाई एवं ज्ञा सा ज्ञागच्छइ, तया तया दासी व विदुमि  
 क्षिणसे । तव तज्ञो एवं पिण्यजो ज्ञो वता वि एव न ज्ञागच्छिस्तमि  
 एव रिपामि गच्छंति । सा सीकराई ज्ञामि ववम्य न मन्नेइ ।  
 एताया सो क्षिणसेट्टी विदइ— वइ ज्ञागच्छं तया एवं कोटिइ, तया  
 जवसे सा मच्छिस्तइ एवं विदित्यं सप्यं सुप्यं वरिदग्गाता गंज  
 ववहार राज्ञं विवस्यं वुत्तं वदइत्यं पुत्तवद्दाइत्यं ववमं  
 जप्ती । राजमाज्जीअच्छेव विवेव तस्स वरमि ज्ञागच्छं ज्ञागच्छं  
 वत्त व- वदमि रिपे इं ज्ञागच्छिस्तमि । क्षिणसेट्टीया वरे

आगतूण नियकुडुविजणस्स पुरओ नरिंदागमणवत्ता कहिआ ।  
 वीयदिवसे पहाणपमुहपरिवारजुत्तो नरिंदो किवणसेट्ठिघरे आगओ ।  
 सेट्ठिणा तस्स नरिंदस्स सुट्ठु सागय कय । अन्तरे पवेसिअ  
 पासायमब्जठवियसीहासणे थिओ नरिंदो ' परत्थीण मुह न दट्ठव्व '  
 ति प्रियारेण जवणियन्तरे सेट्ठिणो पुत्तवहु आहूय ठवेइ । ठविऊण  
 त कहेइ—' हे पुत्ति ! कुलवहुण एगो च्चिअ मामी आजम्म होइ,  
 जारिसो तारिसो वि पिओ माणणीओ होज्जा, तस्स अवमाण क्यावि  
 न कायव्व । तए विस अप्पणो भत्ता देवो इव आराहणिज्जो । ' सा  
 सीलवड्ढ कहेइ—' हे नरिंद ! तुम मज्झ पिउसमो, तेण तुम्हाणमगओ  
 अकहणिज्ज किं पि नत्थि, सन्च कहिस्स, ममोत्तर जोग्ग दास्सह,  
 पुव्व तु पुन्नामि—' इत्थीण परिणीओ भत्ता होज्जा वा अपरिणीओ  
 भावणेण गहिओ वा ? ' । निवो कहेइ—' सव्वजयसिद्ध एय, इत्थीहिं  
 परिणीओ जो स न्चिय भत्ता होइ, नन्नो ' । तथा सीलवड्ढ कहेइ  
 —' मम परिणेया भत्ता किवणसेट्ठिस्स पुत्तो न, किंतु जस्म अच्छीहिंतो  
 मोत्तिआइ झरति, सो चिय मे भत्ता ' । नरिंदो तीए मुहाओ मोत्तिअज्झ-  
 रणवत्त सोऊण नियवधुसकाए पुच्छइ—' सो कत्थ अहुणा वट्ठइ ? ' । तयाणिं  
 किवण सेट्ठी वोळेइ—' एसा मम पुत्तवहु अथिरमणा, ज वा त वा वण्ड,  
 इमीए वयणे वीसासो न कायव्वो ' । नरिंदो परन्तव्वरेहिं कहेइ—  
 ' हे सेट्ठि ! तए किंपि न वोत्तव्व, ह सव्व जाणामि ' । पुणोवि सीलवड्ढ  
 पुच्छइ—' हे पुत्ति ! तु कहेहि, सो अहुणा कत्थ अत्थि ' । सा कहेइ—  
 " अणेण किण्णसेट्ठिणा अस्स पासायस्स उवरिं सत्तममालके मज्झसाए  
 मज्झामि सो मोत्तिअज्झरगो मोत्तिअलोहाओ पक्खित्तो अत्थि " । एवं  
 सोच्चा नरिंदो सपरिवारो उवरिं गतूण मज्झस उग्घाट्ठिअ नियभायर  
 पासइ, पासित्ता बाहिर निक्कासिअ हरिसेण आलिंगेइ, बहुवरिमे  
 नियवधुस्स मगमाओ सपरिवारस्स नरिंदस्स अप्वो अउहो अ  
 आणदो मजाओ । मोत्तिअज्झरस्साधि तहेव अक्खहा वधुमिलणे

विनेमत्रा ज । सद्रूपपुष्प मण्यद्विधा आरभ्य निषकृष्टवृत्तं नरैः  
 उभं नमसु वृत्तं पुच्छत । तत्र जम्भ सेद्विभ्रं चर जगामवाग्यो  
 आरभ्य सीतार्धपरिणयनं जाय वृत्तता कर्हिभो । तत्रा स्य नरिरो  
 द्विषणमस्मिन्नुरि अर्धं वृत्ता मद्रुवचरग सेद्विभ्रं बहव आदिमद् ।  
 तत्रा द्विषणमिभ्रम्य दक्षिण्यमीकयाप तमिहभुजभायजय त्रयवार्ध  
 नरिह र्ध-वर्धनं तं रवययेत् । तत्रा गन्वा न सत्यं नरिह जगद्विभ्र  
 निम्बिमत्रा जगता । नरिहा निषकृष्टवृत्ता सीतार्धं च वृत्ता इति  
 बलवन्म आर्द्रं निषमरिह समगता । वृत्तस्य संपर्का द्विषणं  
 दिरेमु अर्द्धविभ्रम्यसया कर्हिभा । तत्र तमि आर्द्रं दिवसा  
 गच्छति । एतत् चित्र तत्र वृत्तं ज वृत्तां जाद्विभ्रं विभ्रता ।  
 सचंधरो नरिहा मायाविभ्रमिभ्रम्य अर्धं वृत्तं विभ्रता जाय । जा-  
 नसमाचर्ध कर्हिभा इति-गुरंग-रघुपद्विभ्रम्यवृत्तं वृत्ता विभ्र-  
 जभाप विभ्रता । यज्जाम साम-राम-धप-विभ्रम्यार्द्धं एतर्धं वि-  
 नरिह र्ध-वृत्तं वृत्ता वृत्तं विभ्रता जाय । तत्र गाम निषमाच  
 निषत संत । त्रमात्रा वादि नंवाचरो द्विभ्र । वृत्तुरादि यद्वृत्त  
 वत्तन जगाम्यनं सया भवभोत्रा नवपत्रा जगाम्यनं सचंधुरिभ्रप  
 नमद् । पादुं रघुपद्विभ्रम्य जगाम्यनं वृत्तं विभ्रता । कर्हिभाप द्विषणं  
 रज्जा पुर्ध- वृत्त नवर का वि वृत्तिभा जगति न का ? । तेन वृत्त-  
 " यत्र नवर द्विषताता जाय वृत्तिभा जगति सा कर्हिभाप्यो पुर्ध  
 वृत्त जगाम्यनं वृत्तिवृत्तं वृत्तं विभ्रता । नरिहो वि तस्य  
 सेद्विभ्रं जगाम्यनं जगं नेतद् । सा द्विषताता जगाम्यनं सचंधु  
 मरिहं पजमद् । नरिहा वि तं पुच्छद्- हे सेद्वि 'तु जगं कि परि  
 जगाम्यति ? । सेद्वि जगद्- 'जगंगलिरिभ्रद्विषतावृत्तं त जगाम्यनं  
 का न जगाम्य ? । नरिहो कर्हि- 'वृत्तं न, किन्तु जगं सचंधपत्रयेन  
 पच्छामि । तत्रा सो द्विषताता वृत्तं सचंधु नरिहं पुच्छताप वृत्त-

क्खेइ, किन्तु कद् कदिज्जइ 'तुम्हे मम पुत्त'ति । तओ सेट्ठी मोणेण थिओ । तथा सबधू नरिंदो सीढामणाओ उत्थाय पिउस्स पाए पडिओ कहेइ—“पिअ ! अम्हे एयावत काल पिउमुहदसणपरिहीणा निव्वमगा तुम्हाण पाए पणमिमो, अज्ज अम्हाण दिवसो सहलो, ज पिउपायद-सण जाय । मायायि त रुमायार लोगमुहाओ जाणिऊण सिग्घ तत्थ आगया । सहसा आगय मायर द्दूठूण ते दुण्णि वि माइपाएसु पडिआ । मायावि यण्ण झरती अच्छेहिंतो हरिसेण असूणि मुचत्ता नियपुत्ते सहरिस आलिंणइ । जिणदत्तनरिंदोयि मायपियर सीढासणे ठविऊण कहेइ—‘तुम्हाण पुण्णप्पहावेण मए रज्ज लद्ध, तुम्ह सतिअ एय रज्ज, तम्हा तुम्हे अगोकुणेह, अम्हे वि तुम्ह चरणे सेविहामो मायापिउणो कहिति—“ हे पुत्ता ! आजीवण सम्म आराहिअस्म जिणधम्मस्स एय फल, तओ तुम्हे वि निर्णिददेवगुरुधम्माराहणे मया तप्परा होह । पुत्तावि धम्मसम्मुहा जाया । ठक्कुरो वि ‘सेट्ठिणो एए पुत्ता, जे मए वहाइ चढालाय अप्पिआ’ इअ नाउण समीओ सपुत्ताजिणदासस्स पाए नमइ, नियावराह गमेइ । नरिंदो वि तस्स सव्वमपराह खमेइ, आसयदाणाओ ठक्कुरस्स वि पच्चुवयारकरणत्थ गामे देइ । जिणदत्तनरिंदो मायापियवधुजुत्तो नियनयरामि समागओ । जिणदत्तनरिंदो वधुजुत्तो पिउस्स निव्वधेण सीढामणे उव्वेसिअ नाएण रज्ज पालेइ । जिणमइए जुत्तो जिणदासोवि जिणपडिमाओ अशतो, आयरियमुहाओ जिणवरकदिअधम्म सुणतो, वयाइ पालतो सुहेण कड वि वासे गमेइ । पज्जते धम्मघोससूरिणो पासे सभज्जो दिक्ख घेत्तूण, सम्म आराहिअ देवलोग पत्तो । कमेण सिज्झिस्मइ । सो जिणदत्तो नरिंदो जिणरक्खिअजुत्तो जिणवरचेइआलकियाइ नयराइ कुणतो, साहम्मिअजणवच्छइ समायरतो, दीणाणाहे उद्धरतो सद्धम्मकिञ्चेहिं जिणसासण पहावतो, सावयधम्म परिपालतो सुहेण

कहाँ गयाइ । बाहसपज्जति पुनस्त रत्नं जपिअनं सबबुद्धिओ पम्पअं  
गुणओ समीचे सिद्धिआ सम्यं परिपाछिअन समस्तुइ पओ कमेय  
सिद्धि पाबिस्सइ ।

सुवएसो—

त्रिषदासस्स विट्ठलं, उक्कमारसमस्सिअं ।

सुपिआ भविआ ! तुम्हे, दाबकम्मे अएअइ ॥ ५ ॥

दाबकम्मेअरि त्रिषदाससेदिठओ पंचमी कहा समया ॥ ५ ॥



अवियारिआएसे नरिंदस्स कहा छट्ठी ॥ ६ ॥

अवियारिय—आएसो, सप्यार्थमि पदेअ वि ।

साअएसे कुंममारं च, हुंभित्वा निर्वर्णं कहा ॥ ६ ॥

कह वि नवरे फौज नरिरेण त्रिषदासे आएसो रिण्यो—  
“ गाम्मअओ फो देवाअजा अणि । पुरीए माएजा वा नहस्सा वा  
अपिआ वा सुरा च वा अवरवाअियो के कोगा संवि वेई देवाअए  
परिअिअ एवं वंदिता पठअं अजहा वस्त बहो भविस्सइ” । फो  
कुंममारो अमाअम अजाअिअ गहमाअिअ एअे अगुइ सिद्धिआ  
अजाराअिअ पच्छइ । तज देवाअए सो बेओ न बरिओ । एओ कहा  
सुरा तं सिद्धिअ नरिंदमाओ अविओ । नरिंद एअ बहो  
निदिडो । अहअंमि सो नीओ । मरणअएले एअ मरणं बिआ  
फलजातिअ किअइ, पलजातिओ पुरिअन बदिअर एवं त्रिषमो  
निवेअ अजो अलि । एरा सा कुंमारो नि पुच्छिअइ तज पलजातिओ  
कि अइअइ तज अर्थ— अई नरिंदस्स समीचे मयिस्सामि ।  
सो एअ नीओ । नरिंद पलजातिअ मया ति अइअं । सो

कहेइ—‘एग तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुवभोयणत्थ पन्नरलक्खरूपगाइ पेसेह । वीअ तु जे जणा वदीकया ते सव्वे मोएह । निवेण सव्व कय । तइअपर्यणावसरे तेण —‘सहमज्झत्थिअनरिंदपमुहसव्वजणाण एण लगुटेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ’ । रण्णा चित्तिअ—अह किं करोमि ?, एसो थूलो, दडोवि थूलो, एगेण पहारेण अह मरिस्सामि । तओ ‘अजुत्तो एसो आएसो’ इअ चित्तित्ता वदणाएसो निक्कासिओ, उरिं दाणमहिअ तरस अपिप्ता तरस बुद्धीए सतुट्टेण निवेण समाण गिहे मोइओ । एव अविआरिओ आएसो—कयापि अपवहाए होइ ।

उवएसो—

अवियारिअकज्जस्स, पासित्ता अप्पियं फलं ।

कयाई न तहा कुञ्जा, जइ तुम्हे सुहेच्छवो ॥ ६ ॥

अवियारिआएसे नरिन्दस्स छट्ठी—कहा समत्ता ॥ ६ ॥



सीलवईए कहा सत्तमी ॥ ७ ॥

कालो गओ जो धम्ममि, सो णेओ सहलो चिअ ।

निप्फलो मयलो सेसो, वहू एत्थ निदंसण ॥ ७ ॥

कम्मि नयरे लच्छीदासो सेट्ठी वरीयट्ठ । सो बहुधणसपत्तीए गन्विट्ठो आसि । भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि वम्म न कुणेइ । तस्म पुत्तो पि एयारिसो अत्थि । जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिगहण पुत्तस्स काराविय । सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तथा तीए पिउपेरणाए साहुणीसगामाओ जिर्णासरधम्मसवणेण सम्मत्त अणुवयाइ च



गद्दीवाई विजयपत्ने आईव विजया संभावा । जया सा समुद्राये  
 जागवा दया समुद्राई बम्माजो विमुद्र ददूय तीर बजुदुई संभाई ।  
 कइ धम निरवयमस निज्याओ हाजा ? कई वा देवगुणविमुद्राई  
 समुद्राईव बम्मोवयमो मचेज्जा, एवं मा विवारेइ । जया संसरो  
 जसरा कच्छि विजमाया देहोपि विजस्तया जया बम्मा विव  
 परछोगपवम्माज जीवापमाहाक'ति इवमस्तमेय विजमया  
 विविदयमेव वासिजा कजो । एवं नामूयवि कच्छेनरे बजइ ।  
 समुद्र परिबोधिई मा समर्थ मजोइ ।

जया तीर बरे समजगुम्माजोअंदिनो मरुबई नाजी जोज्यपत्तो  
 एगो छातु निरवयमस समभाजो । कच्छये वि गद्दीवयई सई ईई छातुं  
 परमि जामर ददूय जागरे विज्यमाजवि तीर विवारिई-  
 जोज्यज मरुवई महापुछई कई एवय नईमि जोज्यजत्तमे  
 गद्दीय' ति परिकलय समस्माप पुछे- जहुया जमया न  
 संभाजो कि कुछं निभावा ? । तीर द्विपकावमार्त नाज्य छातुवा  
 बर्त-समदभाज- कया मरुहोमसार ति नातेव देव समवेविज  
 निभाजो । सा उत्तरे नाज्य छातु मुखिय वि सा पुछ कइ बरिस्ता गुन  
 संभावा ? । मुखिस्त पुछ्यमाव नाज्य बीसचासेसु जाय्हु वि तीर  
 बारसंवाश्चि ठठ पुजयवि दक्षामिस्त कइ वासाज्यर नि ? पुछे ।  
 तीर निवस्त पञ्चीसचासेसु जाय्हु वि पच वासा जता एवं सामूर  
 जम्मासा कइया । समुद्रस्त पुच्छाय सो जहुवा न ठय्मनो  
 जमि । एव बहू-छातुव बहू जेछठिएव समुद्रव मुना । जहुमिच्छे  
 छातुंवि गर से आईव कोहाओ संभाजो जजो पुजवृ म छरिस्त  
 न जाइ ति कोइ । जहो सो पुत्तल कइज्यई ई गच्छइ गच्छेव समुद्र  
 स बय- मोह्य ई समुद्र' तुं गच्छमु । समुद्रो कोइ 'जइ ई व  
 कइय मि, तवा कई भावने बल्लेमि-बल्लेमि इव कइय्य से  
 गवा । पुत्तल सज्यं पुत्तव कोइ- एव जती हुणवाव जस्यवरक्य

अथि, अओ त गिहाओ निक्कासय ' । सो पिउणा सह गेहे आगओ ।  
यहु पुच्छइ- ' किं माउपिउणो अवमाण कय ? , साहुणा सह वट्टाए किं  
असच्चमुत्तर दिण्ण' ? । तीए उत्त- ' तुम्हे मुणि पुच्छइ सो सव्व  
कहिहिइ ' । मसुरो उवरसए गतूण सावमाण मुणि पुच्छइ- ' हे मुणे ।  
अज्ज मम गेहे भिक्खत्थ तुम्हे किं आगया ? ' । मुणी कहेइ- ' तुम्हाण  
घर न जाणामि, त कुत्थ वसासि ? , मट्ठी वियारेइ ' मुणी असच्च  
कहेइ ' । पुणरवि पुट्ट कत्थ वि गेहे वालाण सह वट्टा कया किं ? ।  
मुणी कहेइ- ' सा वाला जिणमयकुमला, तीए मम वि पारिक्खा कया ' ।  
तीए ह वुत्तो ' समय विणा कह निग्गओ सि ' । मए उत्तर दिण्ण-  
समयस्स ' मरणसमयस ' नाण नत्थि, तेण पुण्ववयमि निग्गओ न्हि ।  
मए वि पारिक्खत्थ सव्वेसिं ससुराईण वासाइ पुट्टाइ । तीए सम्म  
कहियाइ । सेट्ठी पुच्छइ- ' ससुरो न जाओ इअ तीए किं कहिय ? ' ।  
मुणिणा उत्त- ' सा चिय पुच्छिउज्जउ, जओ त्रिउसीए तीए जहत्थो  
भारा नज्जइ । मसुरो गेह गम्भा पुत्तवहु पुच्छइ- ' तीए मुणिस्स  
पुरओ किमेव वुत्त- ' मे मसुरो जाओ वि न ' । तीए उत्त-  
" हे ससुर ! वम्महणिमणूम्मस्स माणवभ्वो पत्तो वि अपत्तो  
एव, जओ सद्धम्मकिञ्चेहिं सहलो भवो न कओ सो मणूसभवो  
निप्फलो चिय । तओ तुम्ह जीवण पि धम्महणि सव्व गय "   
तेण मए कहिअ- ' मम ससुरस्स उत्पत्ती एव न, एव सच्चत्थनाणे  
तुओ वम्मभिमुहो जाओ । पुणरवि पुट्ट- ' तुमए सासूए छम्मासा  
कह कहिआ ? ' । तीए उत्त- ' सासु पुच्छइ ' सेट्ठिणा सा पुट्टा । ताए  
वि कहिअ- " पुत्तवहुण वयण सच्च, जओ मम जिणधम्मपत्तीए  
छम्मासा एव जाया, जओ इओ छम्मासाओ पुण्व कत्थ वि मरणपसगे  
गया । तत्थ थीण विविहगुणदोसयट्ठा जाया । एगाए वुट्ठाए उत्त  
' नारीण मज्झे इमीए पुत्तवहु सेट्ठा । जोव्वणयए वि सासूभत्तिपरा  
धम्मकज्जामि स एव अपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नत्ता एरिसा । ।

इमीं साम् निष्पन्ना लुगिणीय धातिवचउक्ताय पुत्तवहूप वि धम्मकवे  
परिअमाणाणि धम्मं म बुण्ह, इयं साकण्य वहुगुणरंजिता लीय  
मुहाया धम्मो वणा । धम्मवर्त्ताय उम्मासा जाया ठओ पुत्तवहूप  
उम्मासा कट्ठिया वे सुत्तं । पुत्ता वि पुती तमवि कत्तं- " दत्तीय  
सववधम्मामधम्मफराय मज्जाय भेमातामार्गमयीय मोयविद्यासम्भ  
व परिवाम्भुदराइत्तणेय वासायईपूरुगुह्णवधनज्जल व वेइस्स  
नयम्मगुरत्तवेय ज्ञयमि धम्मो एव धम्मत्ति उवविष्टे ई  
विजयम्माराउरुओ जाओ वाज्ज पेव वाप्पा जाया । तमा बहूप मं  
उहिस्स पेववामा कट्ठिया, ठ मयं । लभं बुक्कवरस धम्मवर्त्तीय कट्ठ  
विजर्मण्य व पुत्तवहूप अट्ठवचन सोकण्य उच्छीरास्से वि पट्ठिपुत्ता  
बुत्तये वि धम्म जगदिज्ज सगाई वओ सवविचारो । ठवएसो

सीलधर्म्म दिदंठो, ससुत्तमविचयेम ।

सोण्ण धम्मेष जप्पानं वाविजं इय सम्भया ॥ ७ ॥

ससुत्तमम्मपालने सीलधर्म्म सत्तमी क्ख समत्ता ॥ ७ ॥

दाणंमि थरे-थेरीण क्खो अदठ्ठी- ॥ ८ ॥

दाण्णं निज्जहरयेज, परो वाधि वा म वा ।

बुद्धवर्षमिदंठो विक्खामो एत्थ बुच्च ॥ ८ ॥

एगामि मवरे निज्जणो वेरो वयिओ जपुत्तो जग्गि । विवहीकुम्भज्ज  
ठस्स वेरी मज्झ बुद्धा विज्ज । तेज वयिणज्ज निज्जज्ज वपा वि दाणं  
म विज्जं । एगवा तेज विजिज्जं- दग्गेज विजा परळोमे दुई म होही  
विजि वि इह धमे दाणं वाक्खं । वि विचारिज्ज तस्स वरे एवो

जच्चतुरगमो अत्थि, तस्स विक्कएण ज दव्व होहिइ, त वम्मत्थ मए  
 अप्पियव्व, एव चित्तमाणस्म कियतो कालो गओ । जया तस्म  
 मरणसमओ आगओ, तथा महायण वोल्लविऊण काहिअ “ मम  
 मरणाओ पच्छा मम भज्जा एय जच्चतुरगम विक्केऊण ज दव्व पाविम्सइ,  
 त दव्व परलोगसुहाय तुम्हाण दाम्सइ, त दव्व तुम्हेहिं सुहक्कममि  
 निओइयव्व ” ति काहिऊण सो मरण पत्तो । तस्स बुद्धा भज्जा  
 नियमत्तुणो मरणकिञ्च विञ्चा विअरेइ- “इमस्स जच्चतुरगमस्स विक्कएण  
 रूपयसय होठी, त तु महायणस्स अप्पण भविम्सइ, मम पासे किं पि  
 न होम्सइ, तओ एव कायव्व जेण सव्वधण मईयपासे चिय ठाड ”  
 एव चित्तिऊण एगो मजारो पालिओ । विक्कयकाले मजारस्स रूपयाण  
 नवनवई ठावेआ, तुरगस्स एग रूपय ठावेअ । जो कोवि वयणत्थ  
 आगच्छेज्जा तस्स सा एव कहेइ- “ मए एए मजारतुरगा सह  
 विक्केयव्वा, एकमेक्क कस्म वि न दायव्व, जस्स गहणेच्छा सिया,  
 तथा मजारस्स रूपगाण नवनवई दायव्वा, तुरगमस्स एग चिय रूपय ।  
 एगमेग तु न विक्केस्सामि । लोगा तुरगमस्म गहणेच्छाए आगच्छति,  
 सा पुव्व मजारगहणाय कहेइ, पच्छा तुरग । मजार को वि न  
 गिण्हेइ । एगया एगो वणिओ आगओ । तीए तारिम वयण सोच्चा  
 मजारस्स नवनवईरूपय दिण्ण, आसस्स रूपय एग दिण्ण । सा  
 रूपयसय गिण्हत्ता घरे आगया । महायण वोल्लविऊण जया एग  
 रूपय देइ, तथा पुच्छइ किमेव ? । सा कहेइ- “ तुरगमस्म विक्कएण  
 दव्व रूपय लद्ध, नवनवईरूपय तु मजारविक्कएण लद्ध । मम  
 भत्तुणा वि एव काहिअ- तुरगमस्स विक्कएण ज दव्व होज्जा, त  
 अप्पियव्व, मए उ त दव्व तुम्हाण दिण्ण । एव बुद्धाए महायणो वि  
 वचिओ । त च सव्वदव्व, अइलुद्धत्तणेण उअभोग अनिच्चा चिय,  
 विविहकिलेस सहमाणा, मरणकाल वि द्वावमाणा अट्ठोदञ्जाणपरा  
 मच्चुपत्ता । तसो निएण हत्थेण ज दाण दिण्ण, त परलोअसुहवर होइ ॥

इमीए सासु निष्पन्ना परिशीए भयिष्यच्छासु पुत्तबहूए वि बम्भकजे  
 वेदिअमाप्पवि बम्भं न कुणेइ, इमं सोळ्ळ बहूगुजएंअिआ तीए  
 मुहाआ बम्भं पत्तो । बम्भपत्तीए इम्मासा आया ततो पुत्तबहूए  
 इम्मासा कयिआ ठे सुत्तं । पुत्तो वि पुत्ते तेजवि वत्तं रत्तीए  
 सयवबम्भोएससफ्फाए भज्जाए संसात्तासात्तईसमेअ ज्जेगविआसायं  
 न परिणम्मदुइइइत्तयेअ वासाअईपूरुत्तुत्तुअवत्तयेअ न इहस्स  
 कायभगुरत्तयेअ जयमि बम्भो एअ सएत्ति । इअत्तिष्ठे ई  
 जिअबम्भत्तएगा जाम्भो जज्ज वेअ वात्ता जात्ता । ततो बहूए यं  
 इहिस्स पंचचासा कइवा त सत्तं । एअं दुत्तुवस्स बम्भपत्तीए बट्ठे  
 विअत्तीए न पुत्तबहूए अट्ठपववणं सोळ्ळ कम्पत्तिस्से वि पविदुआ  
 सुत्तये वि बम्भं अण्णहिअ सप्पाइं पत्तो सपरिचारो । सपरसो

सीलवर्जं विदंती, ससुत्तम्विबोधि ।

सोत्ता बम्भेअ जप्पामं वासिअं कुय सप्पया ॥ ७ ॥

ससुत्तबम्भपाक्ये सीलवर्जं सत्तमी क्ख्वा समया ॥ ७ ॥

दाणमि परे-पेरीण कइअ अट्ठमी- ॥ ८ ॥

दाण्णं निअहत्तेअ, परो वाहिअ वा न वा ।

इइअरपरिदंठो विक्खामो एअ इअर ॥ ८ ॥

एगमि नयए विअप्पो वेत्ते वयिअो अणुत्तो जत्तिव । निक्खीकुसअ  
 तस्स बरी मज्जा इइअ विअअ । तेअ वणिज्ज विअमेअ ववा वि दाणं  
 न विण्णं । एगअ तेअ विअिअं- दाम्भेअ विआ परअेओ इइअ न अेओ  
 नेअि वि इह भवे दाणं वायअं वि निवदिअज्ज तस्स बरे पयो

जञ्चतुरगमो अत्थि, तस्स विक्कएण ज दच्च होहिइ, त वम्मत्थ मए  
अप्पियच्च, एव चित्तमाणस्म कियतो कालो गओ । जया तस्स  
मरणसमओ आगओ, तथा महायण बोद्धविउण कहिअ “ मम  
मरणाओ पच्छा मम भज्जा एय जञ्चतुरगम विक्केउण ज दच्च पाविस्सइ,  
त दच्च परलोगसुहाय तुम्हाण दास्सइ, त दच्च तुम्हेहि मुह्वममि  
निओइयच्च ” ति कहिउण मो मरण पत्तो । तम्म बुद्धा भज्जा  
नियमत्तुणो मरणकिञ्च विष्वा विआरेइ-“इमस्म जञ्चतुरगमस्म विक्कएण  
रूपयसय होही, त तु महायणस्स अप्पण भविस्सइ, मम पावे किं पि  
न होस्सइ, तओ एव कायच्च जेण सव्वधण मईयपासे चिय ठाइ ”  
एव चित्तिउण एगो मजारो पालिओ । विक्कयकाले मजारस्स रूपयाण  
नवनवई ठावेआ, तुरगस्म एग रूपय ठाविअ । जो कोवि कयणत्थ  
आगच्छेज्जा तस्म सा एय कहेइ-“ मए एग मजारतुरगा मह  
विक्केयव्या, एकमेक्क कस्स वि न दायच्च, जस्स गहणेच्छा मिया,  
तया मजारस्स रूपगाण नवनवई दायव्या, तुरगमस्स एग चिय रूपय ।  
एगमेग तु न विक्केस्सामि । लोगा तुरगमस्स गहणेच्छाए आगच्छति,  
सा पुव्व मजारगहणाय कहेइ, पच्छा तुरग । मजार को वि न  
गिण्हेइ । एगया एगो यणिओ आगओ । तीए तारिस वयण सोच्चा  
मजारस्स नवनवईरूपय दिण्ण, आसस्स रूपय एग दिण्ण । सा  
रूपयसय गिणिहत्ता घरे आगया । महायण बोद्धविउण जया एग  
रूपय देइ, तथा पुच्छइ किमेव ? । सा कहेइ-“ तुरगमस्म विक्कएण  
दच्च रूपय लद्ध, नवनवईरूपय तु मजारविक्कएण लद्ध । मम  
भत्तुणा वि एय कहिअ- तुरगमस्स विक्कएण ज दच्च होज्जा, त  
अप्पियच्च, मए उ त दच्च तुम्हाण दिण्ण । एव बुद्धाए महायणो वि  
यंचिओ । त च सच्चदच्च, अइलुद्धत्तणेण उवमोग अकिञ्चा चिय,  
विविहकिलेस सहमाणा, मरणकाले वि शायमाणा अट्टराहज्जाणपरा  
मच्चु पत्ता । तओ निएण हत्थेण ज दाण दिण्ण, त परलोअसुहवर होइ ॥

उपएसो—

दिदुर्लभं येर-येरीय, सोचा सम्पन्नजो सया ।

जहुषं मे तव दिग्गजा, मायं नैव समापरे ॥ ८ ॥

दायमि येर-येरीय जहुषी कहा समया ॥ ८ ॥

दाणविलम्बोवरि जुहुदिठ्ठ

भीमसेणाणं कहा नवमी- ॥ ९ ॥

‘दाणवम्मस्त वेठाए, विठ्ठं न समापरे ।’

कळे दाणं पयच्छिस्तं, जुहुदिठ्ठकयं कहा ॥ ९ ॥

जुहुदिठ्ठमरागरीरो मज्झमं अथ पडुमिने दायं देह । दाणा का  
वि निदुमे मोहणं जहुषाकां जाणव जुहुदिठ्ठमरागस्यधाय समत्तपाय  
मज्झमसमय पविट्ठो । पंचेव पवणा राजसद्वयण विज्झति । तथा  
पम्मपुत्तय मज्झमस १०- कळे ददिमि । एवं सोच्य निदुसो  
बंनयो गजो । तथा भीमसेणव विविधं- न जुहो रोव विठ्ठं  
तथा मज्झमं कोदेमि इव विनिष्ठम सिगं तथा जहुष जायन्मज्झम  
गजो । तस्य पया विज्झवद्वयका अथि । अथा वा वि देसो विविधो  
तथा स्य वाइमज्झ । वाइमज्झमाज्झ वजाय पजेदिं अविमज्झ । अज्झ  
का वि १० पंवेदिं जिजा । भीमसेणे वि मयं तं वदं महादिज वाइ  
अज्झ । तथा स्य वज्झम जहागज्झरयो वाइदिं सुजा । जुहुदिठ्ठ  
वि मुज्झो । स निदर— अज्झ इव को विमये वाण ? ।  
वासरवज्झ नरे पुच्छ । स नरे निरिज्झमज्झ वायज मज्झ  
वरि वदे— हे महासाय ! अज्झ भीमसेणया विज्झवद्वयं वाण ।  
पम्मपुत्तो भीमसेणं वाहीवद्वय पुच्छ— हे माधव ! अज्झ को

अउव्वो वेसो केण विजिओ ? , जेण सय तु विजयढक्क याएसि ।  
 भीमसेणेण उच्च--‘हे महाराय ! तिन्थक्केहिं केयलीहिं जोगीहिं  
 महारेसीहिं च जो कया वि न जिओ, सो अज्ज जिओ, तेण इमा  
 विजयढक्का मग वाडज्जइ’ । धम्मपुत्तेण पुट्ट ‘किं तए जिअ ?’ ।  
 भीमसेणो कहेइ--‘निग्गलम्स मम अजेअ त जेउ सत्ती नत्थि’  
 पुणरवि पुट्ट--‘तो केण जिअ ?’ । भीमसेणो कहेइ--‘हे महाराय !  
 तुमए सो विजिओ’ । जुहुट्ठिलं पुच्छइ--‘कया मए जिओ ?’ ।  
 भीमसेणो कहेइ--‘अज्ज अहुणा य’ । जया सो माहणो एत्थ  
 आगओ, तया सो भवतेण उच्चो--‘कहे दाइस्स’ । तओ नज्जइ  
 एगडिण जाव भवतेण कालस्स विजओ कओ । पुव्व केण वि महापुरि-  
 सेण कालो न जिओ, तए पुणो सो जिओ । तेण अच्छेरजुत्तेण मया  
 ढक्का वाइआ । नीइसत्थे वि कहिअ--“ज कहे कायव्व त अज्ज  
 करणिज्ज, ज अज्ज सायतणे कायव्व, त मज्झणहे करणीअ, ज  
 मज्झणहे करणिज्ज, त अहुण चिअ कायव्व, जओ मच्चू नहि पइक्खए,  
 अणेण नियकज्ज कय अहवा न कय, तओ सुहाण कज्जाण करणे  
 विलयो न कायव्वो” । त सुणिउण धम्मपुत्तो महारायो निय पमाय  
 जाणित्ता, त धमण सिग्घ बोह्माविऊण बहु धण दाहीअ । एव दाणे  
 विलयो न कायव्वो । उवएसो

वयण भीमसेणस्म, दाणे जुत्तिसमन्नियं, ।

सुणित्ता भविया ! तमि, पमायं परिवज्जइ ॥ ९ ॥

दाणविलवोवरिं जुहुट्ठिल-भीमसेणाणं नवमी कहा समत्ता ॥९॥





किञ्चित्म-नेहोवरिं बुद्ध्याए कदा दसमी - ॥ १० ॥

दिया छेए निय-प्यामा, म पुचपवर्षधवा ।

अमस्त पुचओ रुप्यो, बुद्ध्याए कदा वसिओ ॥ १० ॥

अस्मि मयरे पया बहिर बसइ । छीए पुचो पगो बहिरबसा  
विज्जइ । सो पया रोयपेकिओ मग्गवा वि छविठे बससो अओ ।  
स बहिरा बाहिरीकिअ पुचें बहूव एवं भित्तेइ- पुचविहीणए मम  
विज्जओ कई होस्सइ अओ मए विच बरे । तओ सइ एवं पवेर-  
हे अमएअ । मं बपवा मम पुचें न नेहसि । छीए म्हुण  
कम्म पुचें मुअं अय मएवासो हाम्म तथा मसिअरुपेअ अमएअ  
अमाअइ मएअमुअे पडिअं अवं नेहमएअइ । पयअ मग्गरुए  
पुचो सग्गविओ अस्मि बुद्ध्या पुचमुअें बहूव पवेर हे अमएअ ।  
मं मएअि अम पुचें न नेहसि एवं पुचो पुचो कएअं कुअंटी मिअें  
पया । तथा समीअएअ मसिअं मुअिओ मएअो केएअं अविअिअरे  
परेअि पविओ । सो मसिओ गाअमुआए बुद्ध्याए अमएअस्स अएअं  
आइसहमेअ अएअिमइ । बुद्ध्या अगारिअ समाअ मसिअं अवेअं  
पसिअा विअएअिअ- पुचस्स पएअअ अगआ अमएअो मुअअ मं  
अरिसेइ । तथा छीए अतं- हे अमएअ । इ तु नीएमेअ मि मम  
पुचो रोयपेकिओ एअ सग्गाए पिआं अस्मि एअ मिअएअि, तु मुअेअ  
एअ कि अमओ सि ? । छीए तं बपवं सग्गविओ पुचो वि मुअेअ,  
विज्जारेइ-मम माअस्स अिअिओ केरिओ ममुअरि नेओ अस्मि अमं  
संसअरेअे निअएअइअएअ वएअविमुअ इअि अओ अइ वि नीएमेअे  
होस्सअमि तथा सिअं अएअो अएअं सअिअमि एवं मुअिअिअए अमेअ  
नीएमेअे अओ । अमं अइअए पएअेअमएअइअो अओ । उअएओ-

बुद्धाए कारिमं नेहं, नियपुत्ते वि पेक्खिअ ।

पयट्टेज्जा निए हिए, 'सत्यमंसो हि मुक्खया' ॥ १० ॥

कित्तिम-नेहोवरिं बुद्धाए दसमी कहा समत्ता ॥ १० ॥



जोगाण संजोगे चोरस्स कहा एगारसी - ॥ ११ ॥

विरुद्धदंपर्हणं हि, संवधो नेव सोहए ।

अओ जोगोऽणुस्सुवाणं, जहा चोरेण कारिओ ॥ ११ ॥

धाराण नयरीण भोयनरिंदरज्जे एगामि घरे पुरिसो कुरूओ निग्गुणो

अ, तस्स य भज्जा सुक्खा सुगुणा । सा इत्थी धम्महीणपट्टस्स जोगेण  
निध दुक्खिअ अत्थि । अन्नमि गिहत्तरे भज्जा कुरूआ निग्गुणा, तीए  
य पर्ह सुक्खो सुगुणो । निग्गुणाण भज्जाण सो दुहिओ ममाणो कट्ठपि  
छल नेह । एगया चोरेण ताण गिहाण यत्तपयाणे अणुगुणजुत्ते दुवे  
दपदणो दददण मुत्तइत्थिदुगाण परायदृण कय । जाण गुजोगो जाओ,  
वे विराओ उवियग्गा तया पसण्णा सजाया । अन्नेण निग्गुणेण  
भोयनरिंमहाण गवूणू 'हे नरिंद' । मम भज्जा सुक्खा केण वि हरिअ  
त्ति मम ताओ नायत्तां । इअ जाणाविअं । एण्णा नयरमि पट्टहुग्घोसो  
पयो—'अस्स भज्जा केण वि हरिआ होज्जा, तेण अक्खस्स एत्थ  
आगतव्य, अत्तह पत्था सत्स नद्धादरो टोहिइ' । सो पोरो पट्टहुग्घोस  
मोषा नरिंदमहाण आगच्छ कट्ठे मए अस्स इत्थि हरिअण सुग्गयस्स  
जोगस्स अपरम्म टिक्का । अओ उतो—

मए निमिन्नदिण, परदव्यावहारिणा ।

तुतो विहिक्खो मग्गो, जोगो जोगेण जोहअ ॥ १ ॥

इमं स्तेच्छा विदेण दसिअण स पनाणीकयं ति ।

उपदेशो—

विहिता र्वा कर्म कर्म, चोरेण कर्ममन्त्रहा ।

तं साठ्ठम अद्वाभोग्गं, ओपए मर्म सया ॥ ११ ॥

ओम्मात्त संभोग चोत्तस्स एमारसी क्खं समया ॥ ११ ॥

~\*~\*~

भवन्स असारयाए नागदत्तेसिट्ठणो

कहा दुवाल्समी ॥ १२ ॥

अन्त्यावरिजा खेगा पेक्खेत्ता म हियादियं ।

वे इमि र्भवि साहूदि, नाम्मदयो एव सुदिट्ठो ॥ १२ ॥

मिरिअच्छेत्तं नयत्तं महारत्तो नाम महारिद्धिमत्तं सद्धं करिबत्त ।  
 तस्स अत्तोमई नाम्मा यत्ता कत्ति । एव इदिअवेत्तन्तुअस्समत्ते  
 खेगाविद्धासेदि क्खं नपइ । क्खत्ते क्खत्ता चक्कम्ममि सुम्मा' पि  
 क्खत्ते एव कोदिअक्कवण्ण क्खत्तवरिसेदि मत्तमात्ताओ मत्तमात्ताओ  
 निम्बविओ । एव क्खत्ताओ क्खत्तसो क्खत्ताओ अस्स क्खत्तवत्त वरिक्कं  
 सद्धस्स क्खत्त क्खत्ताओमि न म्मेत्ता । निम्बत्त क्खत्ताओ विक्कत्ते  
 खेगाविद्धत्त विक्किअर-वार्तामिरिअत्तात्तं विक्कत्तवत्तं मिक्किअ  
 मत्तापिआ । ए विक्कत्ताओ वि अक्कत्ताओमत्ताओ वेगविक्कत्तवरिअविक्किओ  
 कुम्भत्त । अक्कत्ताओ पक्कम्भत्त एव मत्ताओ विक्कत्ताओ विक्कत्तवत्तं वेग  
 एव एव वेगि विक्कत्ताओमत्ताओ म्मेत्ता' साहू आगत्ता ।  
 सुत्ताओमत्ताओमि विक्कत्ताओमत्ताओ एव मत्ताओ वरत्ताओ विक्कि विक्किअ  
 मत्ताओ विक्किओ । मत्ताओमि विक्किओ—“ विक्कत्ताओ वेगं कुम्भं म  
 निक्किअक्कत्ताओ विक्किओ कुम्भं विक्किओ । मत्ताओमि क्खत्ताओ विक्किओ

न हसेइरे । मइ एआरिस किं दिट्ठ, जओ हसिऊण गओ । पच्छा अस्स कारण उवस्साए गतूण मुणि पुच्छिस्सामि ” इअ विआरिऊण खणतरे सो चितारहिओ जाओ । पुणरवि मज्झण्हसमए सो साहू भिक्खतथ तस्स घरामि समागओ, तथा भुजमाणस्स नागदत्तसेट्ठिणो उस्सगे तस्स पुत्तो कीलेइ, तस्स भज्जा जसोमई भावओ मुणि सक्कारिऊण निरवज्ज भिक्ख दाहीअ । तथा पिउस्स अके रममाणेण पुत्तेण मुत्तिऊण साट्ठिस्स भोयण वत्थ च मुत्तणेण भरिअ । मुत्तण अवसरिअ भुजतो नागदत्तो बोलेइ—‘हे पिए ! अणेण पुत्तेण मम भोयण वत्थ च खराटेअ’, एअ बोल्हमाणे समाणे स साहू नागदत्तमुह पासित्ता किंचि वि हसित्ता निगओ । हमत मुणि दट्ठूण नागदत्तो पिअ कहेइ—“ हे पिए ! इमा मुणी म पासित्ता हसिऊण गओ, तथ किं कारणमत्थि, अहव हसणसीलो सो अत्थि । पहायकाले वि चित्तगराण विप्रिहचित्तकरणतथ पेरत म दट्ठूण हसिओ, अहुणावि हसिऊण गओ ” । जसोमई वएइ—‘ हे नाह ! धिणा कारण मुणिणो क्या वि न हसति, अवस्स किं पि एत्थ पओअण होज्जा ’ । नागदत्तो आह—‘ तओ अवम्स ह मुणिस्स समीवे गतूण हसणकारण पुच्छिस्स ’ एअ वोत्तूण भोयण काऊण हट्ठे गओ । अवरण्हकाले हट्ठे थिओ नागदत्तो क्याविक्कय कुणतो अहेसि, तथा रायपहे एअ वक्कर गिण्हत्ता गच्छमाणस्स चटालस्स हत्थाओ छुट्ठिअ सो वक्करो हट्ठत्थिअ नागदत्त पासित्ता तस्स हट्ठमारुढो, तस्स पच्छा अयगगहणत्थ चटालो वि हट्ठ आगतूण नागदत्त कहेइ—“ इमो वक्करो अम्हच्चओ, तेण मज्झ अप्पेह, जइ तस्सुवरि किवा होज्जा, तथा तस्स मुल्ल जोगा दाऊण गिण्हेह ” । चटाल दट्ठूण सो वक्करो भयभतो धें धें करतो हट्ठस्स अठ्ठमतरे पविट्ठो । सेट्ठिणो कम्मगरेहिं पि अतो पविसिअ दहेण त ताहिऊण याहिर निकासिज्जमाणो वि सो अतो अतो पविसेइ । तथा नागदत्तो

मये इदम् तस्मै अवस्य कर्तुं विविक्षा वक्ष्य इष्टाया इत्येव ।  
 निदमा सो वित्तु—“ एवं विविक्षे जीवे रक्ष्येति एवं जीवानं रक्ष्ये  
 मम वने शीघ्रे होय्या, बंशयो वि सखा एवं कुञ्जं तेन निषक्यन्  
 विजय वरं ” । एवं विविक्षा वं वे कुञ्जं सो इष्टाया भीमप्रियो ।  
 निम्मारिग्रमात्रं, कञ्जो विजय भंगुई मुंभमात्रं, सेद्विस्म तम्बुरं  
 वामिद्वय इ रक्ष्यु । म्बुविर । अस्मै वक्ष्यन्त इत्याद्या य म्बुविरमु  
 इष्ट म्बुविर वक्ष्यन्तं य वक्ष्यन्त गदिष्टय बंश्या म्बुविर । अथा म्बुविर  
 इष्टाया भीमप्रियमात्रो वक्ष्यन्त आसी तया सां म्बुविर बंश्यात्रं  
 गच्छन्त पुनरपि मेद्वि वं विविक्षे इत्येव गता । तया म्बुविरा वि  
 वक्ष्यन्त इत्येव गच्छन्तं मुनि वामिद्वय वित्तु— वसा मुनिवरे  
 अस्मै वक्ष्यन्तं विविक्षो वक्ष्यन्त वि इत्येव गता एव वक्ष्यन्तं  
 विविक्षे वक्ष्यन्तं होय्या । तयो वक्ष्यन्त म्बुविर इत्येव वक्ष्यन्तं पुनरपि  
 एवं विविक्षा इष्टाया म्बुविर म्बुविर वक्ष्यन्त रक्ष्यन्त वक्ष्यन्त ।  
 सद्यः वक्ष्यन्तं पुनः—“ मुनिविर ! अस्मै वक्ष्यन्तं विविक्षात्रं  
 विविक्षात्रं वक्ष्यन्तं मं वक्ष्यन्तं वि वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं । सन्ते सन्तं  
 निषक्यन्तं वि वक्ष्यन्तं वि वक्ष्यन्तं ? सो वक्ष्यन्तं वेन वक्ष्यन्तं इत्येव  
 वि ? पुनरपि वक्ष्यन्तं इ । मुनी वक्ष्यन्तं— वे नक्ष्यन्तं ! इ  
 म्बुविरात्रं म्बुविरात्रं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं विविक्षात्रं विविक्षात्रं  
 वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं विविक्षात्रं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं  
 वि वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं  
 म्बुविरात्रं वि मुनिविरात्रं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं म्बुविरात्रं पुनरपि—  
 इ म्बुविर ! मम वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं विविक्षात्रं ? । मुनी वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं  
 वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं । वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं  
 वक्ष्यन्तं । म्बुविरात्रं पुनरपि ‘वि वक्ष्यन्तं ! इ वक्ष्यन्तं वा वक्ष्यन्तं  
 वा वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं ? । मुनिविरात्रं वक्ष्यन्तं— ‘वक्ष्यन्तं ! वक्ष्यन्तं वक्ष्यन्तं

तव मत्थए सूलपीडा होम्सइ, त असहेज्जसूलपीड तीहिं दिणेहिं  
अणुभविअ मरण गमिहिसि ” । नागदत्तो त सुणिअ, महप्पाणमग्गओ  
अप्पाण हसणपत्त गणितो, अप्पकेरासब्भपउत्तीए धिक्कार कुणतो,  
नेत्तेहिं असूइ मुचतो साहुं कहेइ-“ हे भदत ! किल सच्चो ह  
हसणीओ जाओ, दुइह माणवभव पावित्ता मए पोग्गलिअसुहपसत्तेण  
किं पि परलोगाराहण न कय, निप्फलो गमिओ मणूमा भवो, अहुणा  
किं करोमि ? ” इइ वोळिउण रुयतो मुणिपाएसु पटिओ । समणोवि  
नागदत्त कहेइ-“ हे सावग ! जह रणे महास्क्खो अत्थि, तत्थ  
सहाए दूरयराओ आगच्छिउण पक्खिणो माहासु वसति, पुणो पहाए  
मजाए उइउण अन्नत्थ मचलति, पुणो मिलेज्ज न वा मिलेज्जा, एव  
भवे एयारिसो कुडुवमेलो जाणिचव्वो । अप्पणो एव अत्थमाहणाओ  
सत्थिआ मव्वे ससारिणो जणा नायव्वा, तुम पि अप्पम्स अत्थ  
साहेहि ” । नागदत्तो पढमहासस्स कारण नच्चा अप्पाण अहण्ण  
मण्णमाणो वीरवार-हसणन्स कारण पुच्छइ । तया मुणी कहेइ-“ हे-  
नागदत्त ! भज्जापुत्ताईमु मूढप्पाणो ससारमस्स न जाणेइ, जओ तु ज  
पुत्त मन्नेइ, जेण पुत्तेण आणदिओ होज्जा, जस्स मुत्तणंण भरियपि  
भोयण पिय गणेइ, सो तुव्वं पुत्तो परभवे तव भज्जाए जारपुरिमो  
आमि । नायमस्सवेण तए एसो हणिओ समाणो, मरिउण तव भज्जाए  
पुत्तत्तणेण समुवन्नो । तु सत्तु पि पिय पुत्त मन्नेइ, जो तुम पुत्तो  
जोळ्यणत्थो होस्मइ, तया सो तव वरुधक्खरज्जअमव्वपामायं विक्केहि-  
इ, तव भज्जाए विस दाउण मारिम्सइ, तुम्ह पुत्तो कुल्ले कुल्लगालो होई ।  
संसारिणो एरिमी टिई ’ इअ चित्तिउण मए विइयवारं पि हसिअ ।

एअ सुणित्ता नागदत्तो कहेइ-“ हे भगवत ! पुच्छीए भज्जाए,  
पुत्तत्तणेण य उप्पत्तस्स सत्तुणो मस्स जाणिउण किल भोगेहिं ह यचिओ  
मिह । अहुणा मज्झ त कहिज्जाइ, ज मए हट्ठाओ निस्सारिज्जमाण

कर्करं दद्रुष्य तुमप हसिष्य । सुनिबरो कथेद् — " नागरत्त ।  
 ण्त्ते कर्करो पुण्यमप तव पिवा अयि केव महापरिमाहसिष्य  
 मूढ्या कवीरूप बहुरूपं संवेद्य मरणकाले तुम्ह सम्बद्धम्  
 कल्पिष्य पञ्चकमन्त्र पसो कर्करं सञ्जाओ । अस्स चण्डकत्त ण्त्ते  
 केव द्रुपदमाह्वयेन जप्ता कण्ठसु अयिष्या तव पसो रिक्तमोचकम्  
 अस्स चण्डस्स हत्त आगओ । अय्य चण्डस्स एवे कर्करं कथेद्  
 एवमिमे गच्छओ कथेदि, तथा ण्त्ते कर्करं अण्णमे इह पुत्र व  
 मिमन्तिष्य अर्धमरण पवित्रं तुम सख्यमाताओ । चण्डस्स  
 कर्करं तु करिओये कथेये तुमप न कथेओ । तेव मप हे  
 नागरत्त ! दद्रुष्यारं पि हसिष्यं । एवं साध्या— पिवा वि न  
 एविष्याति मण्डवे बी बी करितो म्माव मित्तं चण्डकपरे गपिउअ  
 कथिं । चण्ड ! अविच्छिन्नं द्रव्य गदिह्य कर्करं मच्छ वेसु ।  
 वेसु— सेट्ठि ! सो अहुणा एव इओ कर् अण्णेमि ! एवं सुनिब  
 अण्णं निवृत्तो सुनिबरस्स पण्णेमि गच्छिन्ता पुट्टु— मम पिवा मरणे  
 पवित्रं कं गद् पओ ? । सुयी कथेद्— सख्यमागवस्सं पिउस्स  
 अरक्कमण्णं तुमं चण्डकरितो अस्सार्ककमण्णं मरण पवित्रं निर्व  
 गओ " । तथा नागरत्ता पिउस्स बुभारुं स्वेप्पा मित्तबुद्धओ कीवो  
 सुनि कथेद्— हे मगवेत्त ! म कारण मे कारण सत्तविजेमं इ किं  
 करिस्स ? कर् अण्णम् कारणस्स ? हे एवामेकार ! मम खण्डं देसेदि  
 देसेदि पि । सुनिबरो कथेद् " हे नागरत्त ! ण्त्तविचरं पि सत्रमण्ण  
 केव मण्डवीओ अण्णस्स वेमाज्जिओ होय्या किं पुण सत्तविजेमं ?"  
 एव साध्या संसारस्स असारं भावितो मत्तकप्रेसेसु निज्जण  
 अण्णत्ता विज्जमन्तिरे अहुदिआमाहोयओ विष्णा एवस्स सुनिबरस्स  
 सगाये संज्जं निवृत्त । अण्णमण्णं तुमप चण्डरि विव गवा । कम्म  
 तस्स सिद्धिं यद्वापुच्छेय्य अस्संय्या यावा । पुण्णरत्त

वयगमुहावुट्टी ममभाषेण वेषेण सहंतो ममाहिणा कल किञ्च  
वेमाणियट्टेयलो सोहम्मकप्पे देयत्तणेण ममुप्पत्तो । एव आउमस्स  
मत्तदिणं मेमे वि संजम पालिउण आरहणो नागदत्तो जाओ ।

उवएसो—

नागदत्तकहं मोच्चा, भवस्वपयमिणि ।

‘कामभोगाद्वञ्चं चिन्ता जण्ह संजमे वरे’ ॥ १२ ॥

भवस्स अमारयाए नागदत्तमेदिठणो दुवालममी कहा ममत्ता ॥ १२



गेहेसूर-सुवण्णयारस्स कहा तेरसमी ॥ १३ ॥

गेहेसुरा जणा गेहे, नियमामत्थदमगा ।

बाहिरे कायरा ते त्थ, सुवण्णारनियमणं ॥ १३ ॥

एगामे गामे सुवण्णयारो पसइ । तन्म रायपटन्म मज्झभागे हाट्टिगा  
पिञ्जइ । नया मज्झरत्तीण मा सुवण्णभरिय मज्झम गहिउण नियघरमि  
आगच्छइ । एगया तस्स भज्जाण चित्तिअ— “ एसो मम भत्ता मवय्या  
मज्झम गहिउण मज्झरत्तीण गेहे आगच्छइ, त न वर, जअं कयावि  
मग्गे चारा मिलेज्जा तथा किं होज्जा ” । तओ तीण नियमत्तारो  
वुत्तो— “ हे— पिअ ! मज्झरत्तीण तुज्झ गिहे आगमण न मोहण ति  
मज्झ भाइ, कया पि को पि मिलेज्जा तथा किं हाज्जा ? ” । सो वहेइ—  
“ तु मम चल न जाणासि, तेण एव बोद्धेमि । मम पुरओ नरस्सय पि  
आगच्छेज्ज, ते किं पुणेज्जा ?, ममग्गओ ते किमपि काउ न ममत्था ।  
तुमए मय न कायन्व ” एव जुणेउण तीण चित्तिअ— ‘ गेहेसूरो मम  
पिओ आत्थि, समए तस्स परिक्ख फाहिमि ’ । एगया सा नियघर-  
समीपवामिणीए खत्तियाणीए वरे गवूण वहेइ— ‘ हे पियमहि ! तु तव  
भत्तुणो सव्व वथभूम् मज्झ अप्पेहि, मम किंपि पयोयण



अति । त्रीण तृतियाणीण अप्यस्य विजस्य अमिमार्तिरि सिरवज-  
 करिपुण्ड्रमुदरचमं सख्यं समपिबे । मा गृहिण्य मद् गवा । कप-  
 र्त्तण मग्न कमा गवा तथा मा तं मख्यं मुदरचसे परिहृय अति  
 यदिह्य विस्वेषम रायपुमि विनाथा । विजस्य ह्युमा नागरे  
 कन्धस्य पच्छा अप्यात्रे आचरिज डिजा डिपेसपाठ म्प त्पच्छा  
 हु हु संवर्ति मंशूमे च ह्यस्य यदिह्य सा मखमंतो इतो तयो  
 पामंता सिख्यं गच्छंता ज्ञात त्पम कन्धस्य मर्माथं आस्यतो, तथ  
 पुरिमचमपातनी मा म्भमा नीसुरिड्य मन्थय तं विम्वच्छं-  
 " हु हु मख्य मुचदि कम्पा मारुत्सं । सा अकन्दा रविजा मप्य  
 बरबराता ये न मासु, म न मासु इज करिह्य मशू  
 अपिजा । तमा सा मख्यमर्दिजबलमप्यपाथ करवात्तनी तस  
 वच्छंति ठविह्य सखाय वसपां पि क्त्वाचइ । तथा से पंदिज-  
 डिपड्वमनो बाभ्य । तमा सा कन्धुव पि मरजमथं इतिह्य  
 क्त्वाचइ । म्प अहुया बाभो इव नमो बाभ्य । मा कन्ध यदिह्य  
 वरमि गवा, वरदरं रिदिह्य अना विजा ।

सौ मुचप्यपाता मन्थ केप्याय इतो तथा अचकन्ता मय  
 आचकन्तीण गच्छंता कमेण जवा सागवाचरिजा हुसमीचकन्तो  
 तथा कम जयम पन्थविध्मई वाहिर पमिज्जत तं तु तस्य मुचप्य  
 वात्स्य पिपुमनी कपिजं । तथ नाथं केप्यावि अइ पुरिजो ।  
 पिपुमने ह्यस्य पम्पेड तथ विध्मह्यम रस बीमाई च चप्तिह्य  
 विचरिजं अता इ गणवरचरिजो रि, तथ वाप्य म्प म्येविजं  
 पि निज्जं म्पम कौतगावि ममुपजा, एवं अचमपातको हुमिं  
 नुरिजं गच्छंता वरदर ममागजा । रिदिज परदरं पामिह्य निचम-  
 म्पम आचकन्थ इचपपाम कदेड- इ मचपस्य मातर । वारं अवा-  
 र्दि, वारं चपाइदि । सा अचममर्दिजजा हुमंती पि अमुमंती  
 पिपि कर्त्तं विजा । अहुचक्योसय सा आचक्य वारं चपाइज एवं

पुच्छइ-‘ किं बहु अक्कोसासि ? ’ । सो भयमतो गिहमि पविसिअ  
 भज्ज कहेइ-‘ दार सिग्घ पिहाहि, तालग पि देसु ’ । तीए सव्व  
 काऊण पुट्ट-‘ किं एव नग्गो जाओ ? ’ । तेण वुत्त-‘अवभतरे अववरगे  
 चल, पच्छा म पुच्छ’ । गिहस्स अतो अववरए गच्छा निर्व्वित्तो  
 जाओ । तीए पुणो वि पुट्ट-‘ किं एव नग्गो आगओ ? ’ । तेण कहिय  
 चोरेहिं लुट्ठिओ, सव्व अवहरिअ नग्गो कओ ’ । सा कहेइ -“पुव्व  
 मए कहिअ-हे सामि ! तए एव मज्झरत्तीए मज्जूस गहिऊण न  
 आगतव्व, तुमए न मन्निअ तेण एव जाय ” । सो कहेइ-‘अह महाव-  
 लिट्ठो वि किं करोमि ? ’ जइ पच छ वा चोरा आगया होज्जा, तया  
 ते सव्वे अह जेठ समत्थो, एए उ सयसो थेणा आगया, तेणाह तेहिं  
 सह जुब्बमाणो पराजिओ, सव्व लुट्ठिऊण नग्गो कओ, पिट्टदेसे य  
 असिणाह पहरिओ । पासेसु पिट्टदेस, घाएण सह कीडगावि उप्पन्ना ।  
 तीए तस्स पिट्टदेस पासित्ता गाय- चिन्महस्स रसो वीयाइ च इमाइ  
 सति । भत्तुम्स वि कहिअ-“ सामि ! भयमतेण तए एव जाणिय  
 ‘ केण वि अह पहरिओ, तओ साणिअ निग्गय, तत्थ य कीडगा वि  
 समुप्पन्ना, त न सव्व ’ तु चिन्महणे पहरिओ मि, तस्स रसो वीयाइ च  
 पिट्टदेसे लगाइ ” ति , तओ तस्स देहपक्खालणाय सा जल गहिऊण  
 आगया नियपइस्स देहसुद्धि करेऊण परिहाणवत्थप्पणे ताइ चंव वत्थाइ  
 अप्पेइ । सो ताइ वत्थाइ पासिऊण धिट्ठत्तणेण कहेइ- हु हु मए  
 तयच्चिय तुम नाया, मए चित्तिअ-‘ मम मज्जा किं करेइ ? त्ति ह  
 पासामि’ तेणाह भयमतो इय तत्थ थिओ, सव्ववावहरणमुवेक्खिअ,  
 अन्नह मम पुरओ इत्थीए का सत्ती ? । सा कहेइ- ‘ हे भत्तार !  
 तव धल मए तया चंव नाय, गेहेसूरो तुम असि, अओ अज्जयणाओ  
 तुमए मज्झरत्तीए मज्जूस गहिऊण क्यावि न आगतव्व’ति मज्जाए  
 वयण सो अगीकरेइ । उवएसो—



कुणिब्जसु' । जोगी कहेइ- 'तुम मम य पिउसतिअ नत्थि, तुमए पुण्णुदएण लद्ध, मम किंचि दाउण सव्व त गिण्हाहि' । लोहधो वणिगो त अरिपउ नेच्छइ । तथा सो कहेइ- 'जोगी अह, अगाहिउण कयापि न वंघिस्सि' ति कहिउण तस्स सम्मुह उषविट्ठो । तयणतर तत्थ एगो रायसुहडो तेण मग्गेण गच्छतो ते दुण्णि तहाथिए पासेइ, पासित्ता कहेइ- 'किमत्थ तुम्हे कुणिब्जाह' । तथा सो जोगी कहेइ- 'एत्थ भूमीए दीणारभरिओ चरू अत्थि, अणेण सो लद्धो, मए किंचि वि घण जाइओ, एमो न देइ, तेणाह अत्थ थिओ' । सो रायसुहडो तत्थ आगच्च वणिअ पुच्छइ- 'किमेत्थ' । वणिगो कहेइ- 'किमवि एत्थ नत्थि, जोगी असन्च लेवइ, तुम्हे तव मग्गेण गच्छह । तथा मसको रायसुहडो वणिअ कहेइ- 'इओ अवसरसु' सो नावसरेइ, इत्थे य चरूवरिं ठविऊण तत्थ थिओ । तेणुत्त- 'भूमीए ज घण सिया त रायसतिअ होज्जा, न तव, एव कहिज्जमाणो वि जया सो न अवसरेज्ज, तथा उवाणहजुत्तपाणण पिट्ठेसे ताढेओ मो हा' ॥ ११ ॥ मारिओ हं ति बुद्धता मुत्तो जागरिओ समाणा सुहडस्स पायप्पहारेण सक्ख किल तस्स सयगे उच्चार-पासयणाइ सम्भूआइ पामेइ न जोगिं, न सुहड ति । एव सुत्रिणे वि आगया लच्छी अणट्ट करेज्जा, तथा जागरमाणस्स किं किं न कुणेज्जा ? । उवएमो--

तिव्ववित्तपिवासाए, पामित्ता कहुअ फल ।

परिचएज्ज त लोगा, ! 'सतोसो परम सुह' ॥ १४ ॥

तिव्वधणासत्तोए निद्धणवाणिअस्स चउदसी कहा

सम्मत्ता ॥ १४ ॥



चठजामायरणं कहा पण्णरसमी ॥ १५ ॥

परण्यमोयमे अवा-सची नहि सुवासा ।

समुत्तरोहवासीय, जामायराय मायमं ॥ १५ ॥

कच वि गामे नरिबत्त रज्जसंति-कचयो पुणेहिजो व्याप्ति । तस्य  
सोपे पुच्छं पच न कजगाओ संति, तज्ज चकरो कजगाओ विज्जसा-  
इणपुत्तावे परिण्यविवासा । कचारि पंचमीकजगण पच विवाहमासो  
पारहा । विवाहे चकरो जामाअवा समान्ता । पुण्ये विवाहे जामाअवेहिं  
विज्ज सज्जे संवधिमो निण्वनिचवरेसु गवा । जामाअरा मोवज्जुआ  
ग्गे गहुं न रज्जसंति । पुणेहिजो विवाहे- सासुए जईय विवा  
जामाअठ तज्ज जहुआ पंच क विवाह पच विज्जु पच्छा पच्छेज्जा ।  
ते जामाअरा जज्जरसकुआ ठजो गच्छिअ न इच्छेज्जा । पक्कमं ते  
विवाहे- समुत्तरोहनिवासो समातुत्तमं नराजं ॥ किं एसा  
मुची सज्जा एव विविज्जं एगाए विचरि एसा मुची विविजा ।  
एसा एव मुचि समुत्तरेण वाइज्ज विविज्ज- एव जामाअरा जज्जर-  
सकुआ कचारि न गच्छेज्जा, ठजो एव वाइज्जया एव विविज्ज  
तस्य निज्जमपावस्य विहुमि पावसिगं विविज्जं-

‘ अहं वस्यं निवेगी पंच सज्जा दिवाहं,

इदिपयगुहठ्ठा मासमो वसेज्जा ।

न इवां नगुहो मायमो मायहिमो ॥ १॥ १ ॥

तेहिं जामाअवेहिं वावसिमं वावजं वि जज्जरसकुआउपेव ठजो  
गहुं मेच्छसि । समुत्तरे वि विवाहे चरं एव बीसारेज्जा । साम्मो-  
एवरा एव जज्जरसमाय मायवीय सति तेज्ज मुचीए निज्जमसपिज्जा ।  
पुणेहिजो विव मग्गं पुच्छ- एवसि जामाअयं मोवज्ज वि

देसि' ? सा कहेइ 'अइपियजामायराण तिकाल दहि-घय-गुडमी-  
सिमन्न पक्कन्न च सएव देमि'। पुरोहिओ भज्ज कहेइ- 'अज्जयणाओ  
आरब्भ तुमए जामायराण वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो'  
पियस्स आणा अणइक्कमणीअ त्ति चिंतिऊण सा भोयणकाले  
ताण थूल रोट्टग घयजुत्त देइ । त दट्ठूण पढमो मणीरामो जामाया  
मित्ताण कहेइ- 'अहुणा एत्थ वसण न जुत्त, नियघरमि अओ  
साउभोयण अत्थि, तओ इओ गमण चिय सेय, ससुरस्स पच्चूसे  
कहिऊण ह गमिस्सामि' । ते कहिति- "भो मित्त ! विणा मुल्ल  
भोयण कथ सिया, एय वज्जकुडरोट्टग साउ गणिऊण भोत्तव्व,  
जओ- 'परन्न दुल्लह लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ ? , तव  
इच्छा सिया तथा गच्छसु, अम्हाण ससुरो कहिही तथा गमिस्सामो"  
एव मित्ताण वयण सोच्चा पभाए ससुरस्स अगो गच्छित्ता सिक्ख  
आण च मगोइ । ससुरो वि त सिक्ख दाऊण पुणावि आगच्छेज्जा,  
एय कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्ण देइ । एव पढमो जामायरो  
'वज्जकुडेण मणीरामो' निम्सारिओ । पुणरवि भज्ज कहेइ-  
'अहुणा अज्जयणाओ जामायराण तिलतेल्लेण जुत्त रोट्टग दिब्बा ।  
सा भोयणसमए जामाऊण तेल्लजुत्त रोट्टग देइ । त दट्ठूण  
माहवो नाम जामायरो चित्तेइ घरमि वि एय लब्भइ, तओ इओ  
गमण सुह, मित्ताण पि कहेइ- ह कल्ले गमिस्स, जओ भोयणे  
तेल्ल समागय । तथा ते मित्ता कहिति- 'अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि,  
तेण सीयाले तिलतेल्ल चिअ उयरगिदीवणेण सोहण, न घय,  
तेण तेल्ल देइ, अम्हे उ अत्थ ठास्सामो' तथा माहवो नाम जामायरो  
ससुरपासे गच्छा सिक्ख अणुण्ण च मगोइ । तथा ससुरो गच्छ  
गच्छ त्ति अणुण्ण देइ, न सिक्ख । एव 'तिलतेल्लेण माहवो',  
यीओ वि जामायरो गओ । तइअचउत्थजामायरा न गच्छन्ति ।

‘अथ एष निष्कमस्यमिमां’ इति चिन्तिता सङ्ख्यायां समुपे द्यते  
 पुच्छत— एष आमाप्ये रक्षीय सप्यय कथं जागच्छति ?  
 तथा पिता कथं— कथा इक्षीय पदरे गप आमाप्येय्या, कथा  
 इक्षिपदरे गप जागच्छति । पुरोहिजो कथे— अथ रक्षीय  
 तुम्य दारं न उभादिष्यथ अहं जागरिस्ति । तं दैव्यि आमाप्य  
 संज्ञाय गामे निक्षिपि गप विनिर्द्वयमामो कुर्वता नृगई च उक्तं,  
 मक्षरक्षीय निक्षिपदरे समजाया । विनिर्द्वयं दारं इदं दारं दारं  
 इत्यत्र इक्षिपदरे अक्षयसंज्ञि — दारं कथंतेसु, ’ ति । तत्र  
 दारसंज्ञिने सप्ययया पुण्ड्रिजो जागरतां कथं— मक्षरक्षीय कथं  
 कथं तुमे विज्ञा ? अदुष्टं न कथादिस्ति अथ कथंदिक्षरं  
 कथि तत्र गच्छत एव कथिथय म्येय्य विज्ञा । तथा हे  
 कुम्भि समीपस्थिवाय तुरंगमामय गप । तत्र अक्षरजामने  
 अक्षिपदरेय्यादिना तुरंगमपिष्ठसङ्ख्यायादरययत्वं यदिथय दूर्माय  
 मुता । तत्र विज्ञयामेय आमाप्या चिन्तिता— एतत् सारं  
 यत्नं उक्तं न दृश्य । तथा सो मिथ कथे— हे मिथ ! कथं  
 सुखसंज्ञय क ? इमं मृकान्मयं च यत्नं ? अतो इतो एतत्त विज्ञ  
 वरं । तं मिथो कथं—‘एवमिदं सुखे वि परं कथं ? अरं इ  
 पक्षं अदिस्ति । तुमं गेमुमिपक्षि अहं, तथा गच्छसु’ । ततो स  
 पक्षस पुरादिभसंज्ञिने गप सिकल अगुण्यं च मय्यिथ । तत्र  
 पुण्ड्रिजो सुदुष्टं ति कथे । एव सो विज्ञयामा भूसनश्चय  
 विज्ञयामो’ ति चिन्ताया । अदुष्टं कथं केस्यो आमाप्ये तत्र  
 विज्ञो सता ग्नुं अक्षय । पुरोहिजा वि केस्ययामाप्य निक्षयतय  
 पुति विज्ञाये । एतया नियपुतस्य कथं चिन्ति वि कथिथय  
 कथा केस्ययामाप्ये माक्ययं कथिथो, पुरोहिमस्त व पुता समीपे  
 ठिजो नृगइ तथा पुरोहिजो समाययो समायं पुतं पुच्छत—‘एवम् !

एत्थ मए रूपग मुत्त, त च केण गहिअ ? ' । सो कहेइ—'अह न  
जाणामि ' । पुरोहिओ बोलेइ—'तुमए श्रिय गहिअ, हे असञ्चवाइ ।  
पार । धिट्ठ । देहि मम त, अन्नह त मारइस्म ह ' ति कहिऊण सो  
उवाणहं गहिऊण मारिउ धाविओ । पुत्तो वि मुट्ठिं वधिऊण पिउस्स  
सम्मुह गओ । टोण्णि ते जुज्झमाणे ददूण केसवो ताण मज्झे  
गतूण मा जुज्झह मा जुज्झह त्ति कहिऊण ठिओ । तथा सो पुरोहिओ  
हे जामायर । अवसरसु अवसरसु कहिऊण त उवाणहेण पहरेइ ।  
पुत्तो वि केसव । दूरीभव दूरीभव त्ति कहिउआण मुट्ठीए त केसव  
पहरेइ । एव पिउपुत्ता केसव ताडिति । तओ सो तेहिं धक्कामुक्केण  
ताडिज्जमाणो सिग्व भग्गो, एव ' धक्कामुक्केण केसवो ' सो  
अकहिऊण गओ । तहिणे पुरोहिओ निवसहाए विलवेण गओ ।  
नरिंणे त पुच्छइ—' किं विलवेण तुम आगओ सि । सो कहेइ—  
विवाहमहमवे जामायरा समागआ । ते उ भोयणरसलुद्धा चिर  
ठिआवि गतु न इच्छति । तओ जुत्तीए मन्वे निक्कासिआ ।  
त एव—

“ वज्जकुडे मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो ।

भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ॥ १ ॥ ” त्ति  
सव्वो वुत्ततो नरिंदस्स अगगे कहिओ । नरिंदो वि तस्स वुट्ठीए  
अईव तुट्ठो । एव जो भाविआ कामभोगविसयवामूढा सय कामभोगाइ  
न चाण्ज्जा, ते एवविहदुद्धान भायण हुति । उवाएसो—

जामायरचउक्कस्स, सुणिऊण परामव ।

ससुरस्स गिहावासे, सम्माण जाव सवसे ॥ १५ ॥

ससुरगेहम्मि भोयणासत्तचउजामायराणं

पण्णरसमी कहा समत्ता ॥ १५ ॥





निव्वहिस्स ?' एव दुहुमणुभवतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे  
ओ । अप्पणो पराभवदुह तस्स कहेइ, नित्थरणुवाय च पुच्छइ ।

सुवण्णगारो बोलेइ—“ भो मित्त ! पुत्ताण वीसाम करिऊण सव्व  
णमपिअ, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्ज ? । सहत्थेण कम्म  
ह्य, त अप्पणा भोत्तव्व चिअ ” । तह वि मित्तत्तेण सो एव उवाय  
सेइ—तुमए पुत्ताण एव कहिअव्व—“ मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे  
रूपय दीणार-भूसणेहिं भरिआ एगा मजूसा मए मुक्का अत्थि,  
अज्ज जाव तुम्हाण न कहिअ, अहुणा जराजिण्णो ह, तेण सद्धम्म-  
कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए धिणिओग काऊण परलोगपाहेय  
गिण्हिस्स ” एव कहिऊण पुत्तेहिं एसा मजूसा रत्तीए गेहे आणावि-  
यव्वा । मजूसाए मज्झे ह रूपगसय मोहस्स, त तु मज्झरत्तीए  
पुणो पुणो तुमए सय च सहस्स च रणरणयारपुव्व गणेयव्व, जेण  
पुत्ता मन्निस्सति—‘ अज्जावि बहुधण पिउणो समीवे अत्थि, ’ तओ  
धणासाए ते पुव्वमिअ भर्त्ति करिस्सते । पुत्तवहूओ वि तहेय सक्कार  
काहिन्ति । तुमए मन्वेमि कहियव्व—‘ इमीए मजूसाए बहुधणमत्थि ।  
पुत्तपुत्तयहूण नामाइ लिहिऊण ठवियमत्थि । त तु मम मरणते  
तुम्हेहिं नियनियनामवारेण गहिअव्व ’ । धम्मकरणत्थ पुत्तेहिंतो वण  
गिण्हिऊण सद्धम्मकरणे वावरियव्व । मम रूपगसय पि तुमए न  
विस्सारियव्व, एय अवसरे दायव्व । सो थेरो मित्तस्स वुद्धए तुट्ठो  
गेहे गक्खा रत्तीए पुत्तेहिं मजूस आणाविऊण रत्तीए त रूपगसय  
सय-सहस्स दससहस्माइगुणणेण त चिय गार्णिति । पुत्ता वि विआ-  
रिति-पिउस्स पासे बहुधणमत्थि, ते घहूण पि कहिति । सव्वे ते  
थेर वहु सक्कारिति सम्मार्णिति य । अईवनिव्वधेण त पुत्तवहूआ वि  
अहमहमिगयाए भोयणाय निति, साउ सरस भोयण दिति, तस्स  
वत्थाइ पि सएव पक्खालिति, परिहाणाय धुनेआइ वत्थाइ अप्पिति,  
एव वुद्धस्स सुहेण काला गच्छइ ।



विज्जाहरी अ विमाणेण गच्छति । सो निद्वणो तेहिं दपईहिं दिट्ठो ।  
 विज्जाहरी त निद्वण ददूण नियभत्तार कहेइ—“हे पिअ ! एसो  
 निद्वणो अम्हाण दिट्ठिपहामि जइ समागओ तथा एसो अवम्स सुह  
 पावियव्वो ” । विज्जाहरो कहेइ—“एसो निद्वणो निव्वग्गो अत्थि ।  
 निव्वग्गो वि निव्वग्गयाए सो निद्वणो होज्जा ” । विज्जाहरी  
 कहेइ—“पिय ! तुम कियणो असि, तेण एव कहेसि ” । विज्जाहरो  
 कहेइ—“ह सच्च वणमि, हे पिअ ! तुम्ह वीसासो न होज्जा, तथा  
 पयस्स पारिक्क कुणेमो, जमि पहे एसो गच्छइ, तयग्गओ किंचि वि  
 दूरे पहामि कोडिमुल्ल एय कुडल ठविस्सामि, जइ सो त गिण्हेज्जा तथा  
 तस्स इम कुडल ” एव कहिऊण सो विज्जाहरो तस्स निद्वणस्स  
 नाइदूरे नच्चासण्णे त कुडल मग्गे ठवीअ । गच्छतस्स तस्स त  
 कुडल जया समीवमागय, तथा सो भग्गहीणयाए एव चित्तेइ—  
 “अधो कह चलज्ज ” एव चित्तिता मो अधो भविऊण मग्गे ताव  
 चलिओ, जाव त कुडल पच्छा ठिअ । सो निद्वणो सम्मुहत्थ पि  
 कुडल निव्वग्गयाए न पायीअ । त च कुडल विज्जाहरेण गहीअ ।  
 एव भग्गहीणा पुरिसा सम्मुहत्थ पि ढव्व न पासिति । उवएसो —

निव्वग्गस्स कह एयं, सुणिऊण जणा मया ।

‘सोहग्गकारणे धम्मे, उज्जमेज्जा हियदिठणो ’ ॥ १७ ॥

दिव्वकुडलपत्तीए निव्वग्गस्स सत्तरसमी कहा समत्ता ॥ १७ ॥



अमंगलियपुरिसस्स कहा अट्ठारसमी ॥ १८ ॥

अमंगलमुहो लोगो, नेव को वी-ह भूयले ।

वहाइदूण भूमीसो, अमंगलमुहो कओ ॥ १८ ॥

एगामि नयरे एगो अमंगलिओ मुट्ठो पुरिसो आसि । सो एरिसो  
 अत्थि, जो को वि तस्स मुह पासेइ, सो भोयण पि न

करोम्या । पश्य वि पश्यसे कथं वि तस्स भुरं न विवर्तति । मर्या  
 व्याव जमयस्त्रिपुरिससस बहा सुमिमा । परिक्कथ मरिरेव लव  
 पमाक्याडे सो ब्राह्मणा तस्स भुरं विद्धं । जवा एवा भ्याक्यापुरं  
 विहा, करलं च भुरं यविजराड तथा अविजमि नवरे जमय  
 परक्कमएव इकवाडा जाओ । तथा मर्या वि भाव्यं विवा सव  
 कवाव ससेप्पो नवरासा धादि मिमाओ । मयधरममरदहन पु  
 पच्छा जाममा सममा गरिहा विहेइ— अत्त जमंगाळेअत्त  
 सव्यं मर पक्कका विद्धं, उओ एसो इत्थमा ” एवं विविज  
 जमंगाळेवं बोद्धविजम कइव चवाअत्त जप्पेइ । जवा एवो एवो  
 सव्यं मिहेइ कइप्पेव उइ पच्छंता जमि । तथा एवो कइविजं  
 बुद्धिबिहाओ बहाइ मेइजमयं व इद्धुं कइरं जवा तस्स एवजम  
 कप्पे विवि कइप्पेव उवावं वसेइ । इतिउत्त जवा बइत्तमे उविजे  
 तथा कइप्पे ॥ पुच्छइ— जीवणं विवा उप कवि इत्थं सिम  
 तथा मविाज्यं । स जप्पेइ— मक्क गरिमुत्तंसनेच्छा जमि ।  
 तथा स गरिउत्तंसनीवमाणीमा । गरिहा तं पुच्छइ— किमत्त जम  
 गपओप्यं । स जप्पेइ— इ गरिह ! पश्यसे मम भुरं  
 इत्तमं भावज न जमयइ, परंतु तुम्हाय भुरंक्कमयेव मम व  
 मविस्सइ, तथा जवा किं कइस्सति । मम भुरंता विविजं  
 भुरंसंयं केरिस्संयं सज्जं नाकरा वि पमाए तुम्हायं भुरं क  
 कविहिरे । एवं तस्स ववक्कुत्तीए संतुहा गरिहा बहाएसे जिजे  
 उव परिहोमिं च इत्थं तं जमयस्त्रिं सवसीअ ॥ उवाएओ—

जमंगलमुहस्तेवं, रक्तावं पीमया कयं ।

एवा तुम्हे तहा ‘दोह मयए कन्धसधमा’ ॥ १८ ॥

जमंगलपुत्रिहस्स अट्ठमसमी क्वा समया ॥ १८ ॥





कसेहे—“ जहा केरिसो हरिचहारसो काईय साह बजवरा भवि ।  
 तीय बचन बरपासबाधिया प्याय मोयाहिएय मिछिच्छेय सुबे ।  
 बीजविष्य हावि हरिचहारससबपत्तं महुस्स सधीय गजो । कस  
 कसो कया महुसा हरिचहारस सुपत्ति । सो वि मिछिच्छो प्यंति  
 कोयमि उबेसिअ हरिचहारस सुगेइ । तथा कस्स ज्ञापेदा न ज्ञात्रो  
 कयाएय निद पत्तो । तथा कस एगो कुम्कुटो समगजो । से  
 निदायंत्तस कस्स विचारियमुदे काइसज्ञापेय एी पज उई काइय  
 सुत्तिअय ममो । सो ज्ञातरमात्ता विहेइ—“ तीय महुर्जाह उच-  
 हरिसो महुणे साह बसि इमो उ ज्ञारो वि ? । तथा सो  
 कथाइ महुर्जीसमीने गजका कइइ—“तु सवा कयेसि जं हरिसो  
 काईय साह महेहो बसि परतु महु हरिसो ज्ञात ज्ञापको ।  
 तीय कस्स सक्कं ज्ञापिअय कर्त- सुमं कस निरहुवात्ता देव  
 क ज्ञातो एसो समगज । एवं पमाएये धम्मपत्ती न मिअ  
 अपमत्तेय पम्पो सोबम्पो । उवएयो—

पमाएयो मिछिच्छस्त, मोक्खा एय कइ कया ।

‘सहुम्भर बणे तुम्हे पमार्य परिवत्तइ’ ॥ २० ॥

धम्मसबने मिछिच्छस्त बीसरमी कहा समता ॥ २० ॥

अज्जयात्यास्म कहा एगवीसहमी ॥ २१ ॥

सुज्जयो जीविबंठे वि, न-महायं न दूषइ ।

अज्जयात्तम-विदुयं विदुंठो एय बुण्णइ ॥ २१ ॥

जातो अज्जयात्तगो विहरमाणो मरिहने गजो । कस महुअके उरिअं  
 विदुयं पगतं इदहुय कस्स दिवने कया ज्ञाता । ज्ञात्रो वाकल्ले वि  
 बंणइ सो अज्जयात्तगो काईसाय सुत्ताई पाविओ जहा—“विदेवेदि

पाणादयायाओ हे पुत्त, पिरमेहि मुसायायाओ हे पुत्त । ' इच्छाई ।  
तओ अक्षतकारुणिओ मो विंहुअनिक्कामणा जले पडिअ विंहु  
इत्थेण गिण्हइ । तथा मो जाइमहायओ त टमिअण जले पडिओ ।  
वीयपार पि त जलाओ निस्मारिअ जण्ह, तथावि सो बालगो दसिओ ।  
तर्णीइ अगणितो तईयपार पि त निक्कामिअ उज्जमेइ, तथावि मो  
वट्ठो, तह वि चउत्थपार सिग्य त जलाओ नीसारेइ ।

तथा तथ ग्गो रयगो उत्थाइ धुवतो अहेसि । त तारिअ ददहण  
कहेइ—“ मुरुक्ख । जयमि तुम्हारिमा जणा कई मति, जेण प्यारिम-  
मुत्तुअविममअजतुद्धरणत्थ तुम उज्जमेमि ” । अज्जबालगो आह—  
‘ तुम मम मुक्ख कहेमि, तत्तओ नाह मुरुक्खो, जओ खुहोवि  
वैहुओ मरणते वि नियजाइमहाय न मुचेज्जा, तथाह मणूसोवि  
गेइअण मम परदुक्खविणामरुव उत्तममहाय कह चणमि ? ’ । अत्र  
उत्तमपुरिमा मरणतं वि नियउत्तममहाय न मुचति ॥ उवएमो—

अज्जबालगदिदटत, परदुक्खविणासणे ।

सोच्चा ‘ भवेह तुम्हे वि, तह कारुणपेमला ’ ॥ २१ ॥

परदुक्खविणासणे अज्जबालगस्स एगवीसइमी कहा

ममत्ता ॥ २१ ॥

सडियधण्णदाणंमि दाणसीलसेट्ठिस्स कहा

वावीसइमी—॥ २२ ॥

जारिअ दिअए दाणं, तारिअ लब्भए फलं ।

सडियऽण्णपयाणमि, सेट्ठिणो एत्थ णायगं ॥ २२ ॥

‘ कम्मि नयरे ग्गो दाणसीलो सेट्ठिषरो आसि । सो सया विवे-  
नारहियत्तेणण । आणमि दीणाण सडिय कुदिय च जव देइ । जणा



आर्जुना वि सेद्विस्स पवकत्वं न कदिमि । कयात् सेद्विस्स विजयं  
परिणाविमो । परमि पुत्तवद्दु समयमात्ता । सा समुत्तस्स एवार्थी  
दाये ददुव विता— मम मभुरां अयमा दाणी वि कदिमं स्वं  
परमत्पाविआरजमुत्तम सविमं दुद्विमं च वत्तं दीणाम रेह, ईं  
अभुत्तं कदं वि दादयम्मी ” । आत्ता मा त सविमं अचवत्तं दीसिअ  
छाईं अद्वय मूदगारस्स रोद्वयअत्तव अविमं कदिमं च— ज  
समुत्तं अवेत्तं अत्ताअत्तमा तथा तम्म मए एसां अचवत्तं  
अत्तमा रोद्वय अत्तमा अद्द पुत्तवद्दु तथा मम नामं कदिमं ॥

सुवत्तं वि अत्ता मेद्विं आचवत्तं अविद्विं तथा तं विज रेहं  
परिवत्तेह । सेद्विं आचवत्तं तं वासिअत्तं सुवत्तं पुत्तवद्दु—“विज  
अत्त मम एसा पुत्तवद्दु निस्साओ एत्ता दिता ? । से कदेह ।  
न आत्तामि एत्ताअत्तं पुत्तवद्दु आत्ता । सेद्विं सत्ता वात्ताविमं तं  
च विमोय रिण्णं ? । सा कदेह—इं समुत्त । अत्तिस दाये विज  
छाईं विज मवेत्तं अत्ता अत्तो अत्तमेत्तं तुम्ह वि सविमं तुम्ह  
अचवत्तं रेह, मवत्तरे तं विज छविद्विस्सा । तथा अद्वया एत्त  
मीरत्तपुत्तवद्दुअविमं अत्तमत्तं न कदिस्सत्तं तथा कत्तो  
अचवत्तं तुम्ह कदिममं कदं एवविह ति मय विज ॥” । इ  
सेद्विं पुत्तवद्दु विजयं सत्तस्स सुवत्तं सोत्ता विजय  
विजयं तं पत्तवत्तं तथा विजयं आत्तम दाये दीपत्तं मेद्विं  
वत्तं रेह ॥ उवत्तो—

दायसीत्तस्स सेद्विस्स सुत्तिता चरियं इमं ।

दायं मे छरिसं दज्जा परत्वे—इं सुईं अत्ता ॥ ९९ ॥

सद्विपत्तदायमि दायसीत्तसेद्विस्स वात्तीछम्मी कद्द

समत्ता ॥ १०० ॥

सोमन्तो जाओ पढिमाओ निम्मवेड, तासु तासु पिआ कपि कपि  
 मुल दसेड, क्या पि सिलाह न कुणेड । तओ सो सुहमदिट्टीण सुहुम  
 सुहुम सिप्पकिरिय कुणेऊण पियर दसेड, पिया वि तत्थ वि कपि  
 एल्लग्न दसिसेड, 'तुमए सोहणयर सिप्प कय' ति न कयार्ई त पससेड ।  
 अपससमाणे पिउम्मि सो चिंतेड- 'मम पिआ मज्झ कल कह न  
 पससेज्जा ?, तओ एआरिस उवाय करेमि, जेण पियरो मे कल  
 पससेज्जा । एगया तस्स पिआ कज्जप्पसगेण गामतरे गओ, तथा सो  
 सोमन्ता सिरिगणेसस्स सुदरयम पढिम काऊण, पढिमाण हिट्ठमि  
 गूढ नियनामकियाचिन्ह करिऊण, त मुत्ति नियमित्तहारेण भूमीए  
 अतो निक्खेव कारेड । कालतरे गामतराओ पिआ समागओ । एगया  
 तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एव कहेड- 'अज्ज मम सुमिणो समागओ,  
 तेण अमुगाए भूमीए पढावसालिणी गणेसस्स पढिमा अत्थि' । तथा  
 लोमोहि मा पुढवी गणिआ, तीए पुढवीए सुदरयमा अणुवमा  
 गणेसस्स मुत्ती तिग्गा । तहसणत्थ वहवो लोगा समागया, तीए  
 सिप्पकल अईय पससिरे । तथा सो इददत्तो वि सपुत्तो तत्थ ममा-  
 गओ । त गणेसपढिम दट्ठुग पुत्त कहेड- "हे पुत्त । णम्मच्चिअ सिप्प-  
 कला कहिज्जइ । केरिसी पढिमा निम्मविआ, इमाण निम्मवगो खलु  
 धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि । पासेसु, कत्थ वि मुल्ल खुण्ण च  
 अत्थि ? । जइ तुम एआरिसिं पढिम निम्मवेज्ज, तथा ते सिप्पकल  
 पससेमि, नन्नहा" ।

पुत्तो वि कहेड- "हे पियर । णसा गणेसपढिमा मए कया । इमाण  
 हिट्ठमि गुत्त मए नामपि लिहिअमात्थि" । पिआवि लिहिअनाम  
 वाइऊण तिन्नहियओ पुत्त कहेड- "ह पुत्त । अज्जयणाओ तु णरिस  
 सिप्पकलाजुत्त भु-२ जओ ह तय  
 मिप्पकलासु भु-२ फरणतहिच्छो

पादमेवाहं कृतः । सद्भिषा तथा माय- मम दिव्या सत्त्व-  
 गुण- मया कर्मणः समुद्भिन्न- मदी पुण्या- ज्ञा तथा वि-  
 गता १ । न मुनिना मेदिपुत्रा पित्र- ज्ञे विनि न पुत्र-  
 यत्न वि न रत्न गामि नु रत्न तथा अग्न्य परपुत्र- वि मयं एव-  
 नि विभिन्न- मेदिपुत्रा कदे- 'यमा कथा न तथा किनु गुण-  
 वणिजा गद- विषा तच्छात्र- । न च मय- मित्र- उरग-  
 ममानो निवर्तमान- कदे- 'विनि राज- ज्ञो विम-  
 निम- वि । तथा दिव्य- मेदिपुत्र- तं कथा- राज-  
 निवर्तमान- । न मेदिपुत्रा न गद- निवर्तमान- कदे- 'मुनि-  
 मेदिपुत्रा मय- कथा दुःखि, दुःखि विर- विर- इव-  
 म- मेदिपुत्रा कथा मय- कथा मय- । उर-—

विनि-मेदिपुत्रो मायं सत्त्व- विनि- ।

मय- कथा मय- कथा मय- कथा मय- ॥ २३ ॥

विनि-मेदिपुत्रो मेदिपुत्रो कथा मय- ॥ २३ ॥

XXXXXX

निष्कलावृद्धी- विनिपुत्र- कथा

चतुर्विंशती- ॥ २४ ॥

विनि- विनि- पुत्रो पतं कथा कथा ।

विनि- कथा मो हो- कथा विनि- ॥ २४ ॥

विनि- पुत्रो पुत्रो कथा मय- विनि- विनि-  
 विनि- कथा विनि- कथा । कथा विनि- कथा विनि-  
 कथा पुत्रो पुत्रो कथा । सो विनि- कथा विनि-  
 विनि- विनि- विनि- कथा विनि- कथा ।

सल्लिअपाओ तया पढिओ, त सोहण जाय । अन्नहाह तमि पवहणे  
गच्छेज्जा, तया ममावि केरिसी अवत्था होज्जा, ह पि जले निमग्गो  
सिया । एव ' तस्स पुव्व दुक्ख पि, पच्छा सुहजणग मजाय ' ति ॥  
उवएसो—

धणिपुत्तस्स दिट्ठत, परिणामसुहावह ।

जाणिता ' पत्तकालमि, समभावेण चिद्धए ' ॥ २५ ॥

परिणामसुहावहकज्जम्मि धणिअपुत्तस्स पणवीसइमी

कहा समत्ता ॥ २५ ॥



गयाणुगइगोवरि मयणमच्चुकाणस्स कहा

छुव्वीसइमी— ॥ २६ ॥

गयाणुगइओ लोगो, परमदूठ न चित्ठइ ।

मयणमच्चुकाणे वि, सव्वे लोगा समागया ॥ २६ ॥

कम्मि नयरे कुमारस्स भज्जाए मह नरिंदरणीए सहित्तण अहोसि ।  
कुंभगारभज्जाए एगा गइही अईव वल्लहा आसि । गइहीए पुत्तो  
जायइ, किंतु सो जायमेत्तो मरइ । तेण कुभगारभज्जा स एव शूरेइ ।  
एगया तीए गइहीए पुत्तो सजाओ । सो अईव सेयरुवो अत्थि ।  
तीए तस्सुवरिं वहू नेहो अत्थि, तओ तस्स नाम मयणु त्ति दिण्ण ।  
त मयण सम्भ पालेइ, एगमि वासे जाए समाणे सो वि मयणो मच्चु  
पत्तो । तया सा कुभगारी अईव रोयइ । तीए रोयमाणीए तप्परिवारो  
वि रोवेइ । तमि काले नरिंदभज्जा किंपि कारणत्थ कुभगारीगेहे दासिं  
पेसेइ । सा दासी तत्थ आगया सपरिवार कुभगारिं न्यतिं ददहूण  
चित्तिअ— ' नूण - ' कोवे कोवि मओ, तेण सव्वे स्यति ॥ २६ ॥

मन्त्रं मन्त्रं मित्ये कुर्वन्ता जगन्मि, तत्र तत्र मित्रकथाणि वदन्ति  
 हवीज । अह्ना 'मम मित्रकथा मन्त्रो' इह मन्त्रार्थेण तुम्ह पञ्चमी  
 मित्रकथा म मन्त्रविरहित । एवं ता मन्त्रार्थे मित्रकथा सोम्य  
 पणमु वदन्ति पित्रता पर्ममन्त्रकथापञ्चमनिजापदाई कावेइ वदु स  
 मोमन्त्रतो वजा कावन्त्र कर्मिणि मित्रकथा वदं जसमन्त्रा जगो ॥  
 उच्यते—

दिश्या मित्रपुत्रस्य, मया गुणगण्यते ।

'पुत्रार्थं वयसं मात्ता, पट्टिच्छं न किञ्च' ॥ २४ ॥

मित्रकथावद्विणी मित्रपुत्रस्त चउविदमी च्छा

ममवा ॥ २४ ॥

परिणामसुहावदकज्जमि पणियपुत्रस्त कदा  
 पणवीदसमी— ॥ २५ ॥

तस्मिन्ने दुक्खवेडं वि परिणामे सुखं सुखं ।

अनाया मन्त्रे दुक्खं, वहा सेदिच्छापुत्रजो ॥ २५ ॥

पणो पणियपुत्रा पञ्चमपण्य अनायाये गत्तु वीरिं पइ पणियो ।  
 ममा गच्छता पणियपण्यो पणियो तेण अहं वीर्य संजाजा ।  
 तयो पण्य मित्रपुत्रस्य क्खेण वरमि समानाया समाने विदेइ— 'हा'  
 किं वदं ? अइ पणिये न पणियस्त तया मम महापण्यो होमन्त्र,  
 अह्ना मम वदन्ते पण्यमन्त्रि किं वदं ? एवं विवातो दुक्खेण  
 विवसे तेइ ।

पण्य तेण सुखं— तं पण्यं अनाया निमुहु अणि आरेदिअ  
 पण्यं वरमिं हं वदति । तया तस्य क्खुजान्त्रो संजाजा, जगो इ

पासित्ता ' सुपरिस्वित्ता, कज्ज किमवि साहए ' ॥ २६ ॥

गयाणुगइगोवरि मयणमच्चुकाणस्स छव्वीसइमी कहा

समत्ता ॥ २६ ॥

धम्मोवएससवणे पुत्तलिगातिगस्स कहा

सत्तावीसइमी ॥ २७ ॥

सद्धम्मस्सवणे जोग्गा, सोयारा कहिया तिहा ।

पुत्तली-तितयस्से-ह, दिट्ठतो पण्णाविज्जइ ॥ २७ ॥

भोयनरिंसहाण एगया फो धि वइणसिओ ममागओ । तथा  
तीण महाण कार्ळादासाइणो अणेगे धिउसा तत्थ सति । सो धेणसिओ  
नरिं पणमिअ कहेइ- ' हे भोयनरिंस ! अणेगविउसवरालाकिय  
तुय मा नच्चा पुत्तलिगातिगमुत्तलकरणत्थ तुम्ह समीवे ह आगओ  
म्हि " एव कहिउण सो समुच्च-चण्ण रुय पुत्तलिगातय रण्णो करे  
अप्पेइ । कहेइ- " जइ सिग्गिताण विउसयरा एआसिं उइअ मुहं  
करिन्सति, तथा अज्ज जाव अन्ननरवरसहासु जण मण लद्धा  
जे विजयककिआ लक्खचदगा ते दायव्वा, अन्नह अह विजयकचिन्हिअ-  
सुवण्णचदगमेग तुम्हाओ गिण्हिस्स " । रण्णा ताओ पुत्तलीओ  
मुहकरणत्थ त्रिउमाणमप्पिआओ । को वि विउसो कहेइ- " पुत्तलि-  
गागयसुवण्णस्स परिक्ख णिहसेण हे मणिगारा । तुम्हे कुणेह, तुलाए  
वि आरोविउण मुह अक्केइ " । तथा सो वइणसिओ ईसिं हसिउण  
कहेइ- " एरिसप्पयारेण मुहनिरुवगा जयमि वइवो सति, अम्स  
सच्च मुह ज सिया, त णाउ भोयनरिंसभाए समागओ म्हि " एव  
... लिगाओ करे गहिउण सम्म निरुविति, परतु



पवट्ठति, एरिसा सोयारा धीअपुत्तलिगा मरिसा नायव्वा ” तओ धीअपुत्तलिगाए मुल्ल मए रुप्पगमेग कहिअ २ ।

तइअपुत्तलिगाए कण्णे पक्खित्ता सलागा वाहिर न निग्गया, परतु हियए ओइण्णा, सा एव उयदिसइ—“ केप्पि भव्वजीवा मम सरिच्छा इधति, जे उ परलोगहियगरवयण उवउत्तो सम्म सुणेइरे, धम्मकज्जेसु जइसत्ति पवट्ठते, एरिसा सोयारा तइअपुत्तलिगाए समाणा नायव्वा ” तओ मए तइअपुत्तलिगाए मुल्ल लक्खरुप्पग ति जाणाविअ ३ ।

एव कालीदासस्स वयण सोच्चा भोयनरिंदो अन्ने वि य पडिआ तुट्ठा । सो वड्डएमेओ पराडओ समाणो त चदगलक्ख नरिंदगाओ जेइ । राया त सब्ब कालीदासस्स अप्पेइ ॥

उवएसो—

पुत्तलीतिगदिट्ठतं, नच्चा सन्नाणदायगं ।

‘धम्मस्मवणकम्मंमि, हियएण पवट्ठह ’ ।

धम्मोवएससवणे पुत्तलिगातिगस्स सत्तावीसइमी कहा

समत्ता ॥ २७ ॥

समावराहचोराणं सिक्खाए कुमारमंतिणो

कहा अट्ठावीसइमी—॥ २८ ॥

“ जारिसो माणवो होइ, सिक्खणं तत्थ तारिसं । ”

समावराहचोरेसु, कुमारस्मेह नायगं ॥ २८ ॥

पाट्टलिउत्तनयरे जियसत्तुनरिंदस्स कुमारो नाम चउवुद्धिनिहाणे पहाणो आसि । सो जारिसा अवराहिणो आगच्छति ताण परिक्खिअ, तारिस दढ एगुया कोट्टवालेण चउरो चोरा कुमारमतिणो पुरओ



इतिहा । कुमारमदी तसिं बुदीए परिणयं करिइय इइ शरीर अ-  
पमचारस ३८- तु मइमा नि होइय परिमं अकयं कां पुं  
किं पुं ? तं तव प्ये मोहेइ ? गच्छसु तुं मा करायं नं  
कुंय्या ॥ इय बोनुय सो विसमिमा । ननिं चारं माइव मीए  
सावमाय परसमकरपुरसरें पुं- ॥ सुइलमकरं । सुइलमकरं  
गाइव सुइय परिस कयं कय किं वे कय । नि नमाय । गच्छसु  
मुं मरीए सिम्सु, मा सुं पुंवे इसिमु । स ? ॥ सो तव विसमिमा ।

तइयं चोरं कोइनिअ, कचल पहरिअ तुम्हाओ पय्पयेनि  
छाह्यो इय मरिरककर कयकयन निकडनिमा । चरुय तु  
पय्पयसुं किवा गरुमायोहिअ नकरमकरमि ममाहिमाओ ।  
अवरइस्त एगल मिन्नाभिमरवा एणसिं कयं रिन्ना कुमारमिनि  
अचरिअसुजा सथे सहाय्य जाया । तोसिं किं कयावनां माइव  
चरुय चाएव किं काय सि निहकयं एण्य चरुयमो पडिमा ।  
एगच्छांवि गर स चरुयिमा समागजा समाओ नरिं कय- दे  
महाएव । पडमो कोमकय वकयेव कयकमिमा सहा गेइ गभय,  
कयं वि इयकम असांय बीइ इति विमिइय मचुं पत्तो । बीओ  
पय्पयसुं विरककरिओ सो कय कयावे मर न इसिम्सि  
सि अदिअय विपसं गया ।

तइमा ओ स्यामअ ताहिमा सो मिहाओ वरिं गमुं न इच्छया ।  
चरुयो व ओ गरुमायोहिअ नकरमकरमयाओ सो व गरुयविं  
परुयसुवयेसिअ नकरं ममां अमाओ विनिहायमाय कयेइ व पय्पय  
इकिंयमाया निहया मिपयरसयिं समागजो सहा सो लक्ये-  
अइयसकयमयवनिजमयं कय- जाइपय अचरिअसुजिअनइमा  
ममिं सिमं काययिस्सं एओ तुमं कयं सिमं कयं इयिमु इय  
चरुयिअकयिअसुजिअसुजिअ सथे कुमारमिनि पुंवे पयसमि

उवएसो—

मव्भाव च असव्भाव, चउचोराण पेक्खिअ ।

तुम्हे कुमारमंतिव्व, ' होह तह परिक्खगा ' ॥ २८ ॥

ममावराहचोराण सिक्खाए कुमारमंतिणो

अदठावीसइमी कहा समत्ता ॥ २८ ॥

तरणव्भासे सेट्ठि—नाविआणं कहा

एगूणतीसइमी — ॥ २९ ॥

सुट्ठु नाणं सुहा लच्छी, रमणी सुदरी तहा ।

निष्फल त विणा धम्मं, एत्थ सेट्ठिस्स नायगं ॥ २९ ॥

एगया कोवि वणयतो सेट्ठी नायमारुहिऊण समीपदीय वच्चतो  
अत्थि । तस्म पासे महावडिआलय वट्ठइ । नायिगो वडिआलय वट्ठु  
तत्थागओ । सेट्ठि पुच्छइ—' हे सेट्ठि ! अहुणा कइ ममओ मजाओ ? ।  
सेट्ठिणा वुत्त—' किं तुम वडिआलय न पामासि ? ' । पासामि अह,  
फित्तु वडिआलयनाणकला मम नत्थि । पुणो वि सेट्ठिणा पुट्ठ—  
' वयहारनाण तुमए सिक्खिअ न धा ? ' । तेणुत्त—' वीणस्स मम  
को सिक्खण देज्जा ? ' । सेट्ठिणा भणिअ—' जह तुम न भणिओ,  
तेण तय जीवणस्स चउत्थमागो मुहा गओ ' । पुणरवि सेट्ठिणा पुट्ठ—  
' किं तु परिणीओ मि न या ? ' । तेणुत्त—' कट्ठेण जीवणनिव्वाह  
करोमि, एरिमाए वीणावत्थाए मज्झ को कल दास्सइ ? , कयावि  
कोवि कल देज्जा, तह वि दुक्खेण उयर भरतो ह तीण निव्वाह कइ  
करिस्सामि ? ' । सेट्ठिणा उत्त—' इत्थि पुत्त च विणा संसारे किं सुह  
इओज्जा ? , अओ तुम्ह अद्वजीवण निष्फल गय ' । पुणरवि सेट्ठिण

पुनः~ इ मुक्तः । तत्र वाताय-दम्बज्जणकम्भा आगच्छन् न वा । ।  
 तेषुतं मय भावावाक्यं विना किमपि नागच्छेय्या । तेषुतं त्वं  
 वत्-<sup>५</sup> तुम्ह पाञ्चोपनिषत्वं निष्कलं गव्यं । परिसङ्गताय विष्णुमात्म  
 समानीय त्वया ज्ञान्यवमन्समि पञ्चदो वाञ्छो पञ्चमुञ्छो, पञ्चवी  
 सवसिक्कटमधुचा इत्यस्यैति याज्य न्यायिण्य वत्- हे सेहि ! तुम्ह  
 तरुनाय्य वत्ति न वा । । तेषुतया वत्ति- इ सव्यं वत्तं वाचमि,  
 किन्तु तरुनाय्य मम नत्ति । तत्रा न्यायिगो वत्- हे सिरिरेह ।  
 आधुचा इमं पञ्चदो मम वाञ्छीयं नत्ति आईव पञ्चदवाय्य प्येष्टवं  
 समीपवद्विचिक्कन् पुट्टिस्तह सवसिक्कट व इतिस्तह, मम  
 पाञ्चोपनिषत्त गव तुम्ह व सव्यं वीचवं गव मम हि तरुनाय्य  
 वत्ति तेषा समुद्रमम पार पाविस्त तुम्ह सव्य समुदे पुट्टिस्तसि इव  
 वत्तिता से न्यायिगो चिक्कन्पञ्चिक्कनात्वाय वीचवंद्विज्जवात्वाय समुद्र  
 पञ्चिक्कन् तरिक्कन् पारं पतो । सेहि व तरुनाय्यवाय समुद्रमि पुट्टिगो ।  
 एवं सव्यनाञ्छो वत्ताया चिचिद्विक्कन् वज मवसमुद्रवाय्य वम्मन्पञ्च  
 न चिचिक्कन्ना से सेहि विर भवसमुदे मम्ह ॥ उपदसो-

सरीरमाह न्यु पि, जीवा कुण्डल न्यायिगो ।

संसारो ज्ञान्यवा पुचो व तरनि यरेसिवा ॥

वम्मन्नायवीहीयस्त सेहिठमो वद्विमन्नाय ।

वद्विष्टं 'तरुनाय्यसे थापञ्छो उज्जमेह मे ॥ २९ ॥

तरुनाय्यसे सेहिठमाविवाय्य एगुवतीस्यमी वत्ता सवता ॥ २९ ॥

# तिव्वपावोदण् कालमोअरिअस्म

कदा तीसडमी -॥ ३० ॥

घारेहिमापमत्ताण, समाही न कया मिया ।

कालसोअरिओ नाय, मच्चुफाले मटच्चुओ ॥ ३० ॥

गयगिहे नयगमि मेणिओ नाम राया आनि । तस्स नयगे  
कालमोअरिओ नाम मूणारट्ठुअत्थि । मो अमच्चो णिणे णिणे  
मम्मिपचमय वहेड । तओ तेण घोरहिमाण सत्तमीनग्गपुह्णीओ वि  
अभहिय पावसुअत्तिअ । चरमकाले मो मोलममहारोगेहि गहिथो ।  
अडत्तिव्यामुहकम्मोदण्ण मा पच यि उदियत्थे विपरीण वेण्ड,  
सुहविसह असुहे जाणेड । तस्स सुल्लमो नाम पुत्तो अमय-कुमार-  
मत्तिस्स भोगेण वस्मिट्ठो मजाओ । सुव्यायरेण पिउस्स पटियार कारेड ।  
वह यि मो कत्थ विरड न लहेड, ताहे सुल्लमो नियमित्त अभयकुमार  
पुच्छेड । अभयकुमारो भणेड-“हे भट्ट । तस्स पिउणा जीवहिमाओ  
घोरपाय समज्जिअ, त असुहकम्म डह भवे उडण्ण, ता इदियाण ज  
पडिक्कल त कुणसु-“कट्टकमेज्जाण णअ ठवेहि न उ सुहमिज्जाण,  
असुहमलमुत्ताडणा यिल्लिपेगु मा चट्ठणेहि पिवायसु गारत्तिकवदुग्गघनी-  
राड न उ माउजल, जेण मो रड पावेड ” । सुल्लसेणापि तहाकण  
पत्तपरिओमो कचि काल जीविउण मच्चु पापिअ सो कालमोअरिओ  
सत्तमनरगपुह्वि समुप्पओ । मयणेहि तस्स पण मो सुल्लसो ठविओ,  
मणिओ य अगीकुणेहि नियजणगाजीविग । मो यि निअपियराणुभूय  
दुह सभरतो ‘न तरामि पायफलाड सोदु’ ति जपमाणो नेच्छेड ।  
सयणा भणति-‘पाय अम्हे विमागेण गिण्हिहिमो’ । तओ तेमि  
चोहणाय सुल्लमेण तिण्हकुहाटेण निअपाओ निदय ताहिओ ।

कारसंज्ञेन च यमिवा वचनो यः । आ । विमलप्रकाशं, यत्र वेद  
 तीव्रह, जेन ये सुदं दार । मन्त्रार्थं भाषितं—“पुनः । तु  
 मीन्द्रमा बड अन्धसु सक्रमेड किं तु माति इवाजा जेव बालसंज्ञि  
 दुई बालसि मन्त्रेड ” । तत्रो सुकमा कर्तुः— ते किं मन्त्र ‘अन्धे तु  
 पथं विमलस्मान्नो सि धर्तं तत्र बुद्धा संशयिज्याया तुमिष्टा सि  
 मन्त्र । बीरार्थसाधो विरजा या सुकस्तुमारो अमपकुम्भे  
 मन्त्रो महावीरस मयीवे सावगधर्म गच्छिजा । विरिया तप्त  
 यद्विज्य देवद्वयो पत्ता ॥

उदरयो—

अर्चतमुद्रकम्मस्स कळमरय परत्थ य ।

अभिधा द्वियमिच्छतो विरमेसु तुर्यं तत्रो ॥ ३० ॥

विष्णवोदय कळसोअरिजस्स तीसइमी कळ समया ॥ ३१ ॥

सुपत्त-दाणभावणाए सालिमहपुब्बभवन्सु

कहा इकतीमइमी—॥ ३१ ॥

पथे दाणयणे अति पुण्यअम्मंभि आपए ।

सालिमहो कहा एत्थं सुखी अम्मंभि आपए । ३१ ॥

अस्मि तत्परमि मन्त्रसेतु मीति । तस्स वचनं पुत्ता अत्तं य  
 नुसाजो संति । ना सेतुिचरो काहीभरो पि अचरंतो काही वहु  
 कमाद दाणं न दड । एतथा वचनं पुत्तवहुया विमलसंज्ञि  
 विचारं समिज्य विद्याया विमलवाजा अत्रो सुकस्तुमारो इमा तत्रो  
 अमपकुम्भे तत्पत्तंतीनं तासि कळुपुण्यहए एता बुद्धा सेवादिजा  
 पठिजा य । तीण बुद्धाए अमुं चसेदि ।

आहमणेहिं वित्तेहिं धेसेहिं च मयधा तुम ? , तुम्ह पिउणा समुरेण वा कि  
 दीगदुहियाण नान दिण्ण ? , नयरमि कि जमकित्तिकम्म कय ? , जेण  
 प्व न्दत्तणेण चलेसि, गवध म पि समुहत्थ न पेक्खामि ? ' एवं  
 उता समारणी जिणमदिरे चेइआइ धट्ठिता, घरमि आगन्च कोवधा  
 कोवधरमि ठिआ, परिवारेण सह नालयेइ । तथा तीण पिण्ण  
 जेइपुत्तएह कारण पुट्ठा, कारण कहिअ, त मान्चा तेहिं  
 चइहिं पुत्तहिं चियारिअ- ' अम्हाण पिआ लोहवो ' दूर  
 सदम्मकज्जमि दवघओ नाइजेमण पि न करेइ,  
 तेण अम्हाण जमो किती अ कुओ ? , अओ केण वि उवाण्ण  
 नाइभोयण कायव । पिउण्णलेण लहुभाउणा वुत्त- ' अह पियर  
 कज्जयागारे तह ठमिस्सामि, जह सो नाइभोयण न जाणिस्सइ, तुम्हे  
 वि मव्वे नाइजणे आमतिअ पग्गणे सव्वे भोयाधिस्सइ । तेहिं अणुमय ।  
 अण्णमि णिणे कमि महमयपसगे नाइजणा आमतिआ, घरगणे  
 रमव्वे पउणीय्या, मव्वे नाइजणा भोयणत्थ समागया, तमि समये  
 लहुपुत्तेण पिया कयविककयवागाराइकज्जेण रुधिओ अहेसि ।  
 समागयलोहलवोलमणण पियरेण पुट्ठ- ' किं अज्ज जणकोलाहलो  
 सुणिज्जइ ? ' । लहुपुत्तेण वुत्त- किंपि न, कारणपसगेण समागया  
 होज्जा । मन्दिहाणेण पिउणा उत्थाय गाययणाओ वाहिरमउलोइअ,  
 तथा मुजमाणा नाइजणा दिट्ठा, चिंतिअ च किल पुत्तेहिं ह वचिओ  
 म्हि !, ' हा ! हा ! धिद्धि म, किंपि मण सुकय हत्थेण न कय, मण  
 अधिइमावओ मो जिमतलोगपतीए वाहिं दूरट्ठिअ साहुजुगुल भिक्खत्थ  
 भममाण पामेइ, त दट्ठूण तस्स सुहभावो जाओ, धिआरिअ च " वन्नो  
 ह, जणअ मुणिजुगल मम दिट्ठिपहमि आगय, इओ गतूण मुणिवराण  
 पाए पणमिअ सुद्धमाहार देमि ", एवं विचारयतां सुपत्तदाणदिण्णमणा  
 मो नीसरणीए गन्ततो मलियपाओ सहसा हिट्ठमि भूमियले पडिओ  
 तस्स मच्छु पत्तो । आहारदाणचियारणाए

कश्चमपुत्राह स बाह्यरिगते संगमा नाम पुत्रचक्षेण हनुवन्तो । नन  
 म्भूसवे तस्म गते माहुर पुत्रार्थं मन्त्रिणा फलकमप्य रविर्भ । अथ  
 पुत्रस्त बाह्यर कीर परिवसिन् पमाकप्यत्वा ज्ञाहि दरे मया । अथ  
 स्ते संगमा माकप्यत्वं वयविदुः तदा तस्म पुष्पुप्यस्य कोमि पनकप-  
 मासिद्धमप्यकमको पनपविज्म मिचकत्वं मर्मता त्व बाह्यो ।  
 सो संयमो ह महापवसि फलं, पासिना पुत्रमप्यप्यपरिणामपवसा  
 तत्त बाह्यरप्यपरिणामा बाह्य पवस्य प्यमुनिषा ई दान मि  
 ति म्भवात् साहुं कोमविज्म सुहमाकेव सत्वं कप्यं कप्ये । पुत्राह  
 सो मरिह्य सुपचदाप्यप्यप्येव रम्यमिदे वर म्भेयरेडिभि  
 म्भान्नेडिमीर साहिमरो नाम पुत्रा संजातो ॥ सुपचसी-

साहिमरपुरा कर्म, पुष्पापुर्वादिपुष्पर्य ।

मोष्वा सुपचदाप्यमि स-उमेह विवे विवे' ॥ ३' ॥

सुपचदाप्यमाक्याए माहिमरपुष्पमस्स इहतीसइमी

कदा समता ॥ ३१ ॥

दन्वस-रुव-शुद्धि-पुष्पाण मुष्टमि निवाहपुत्ताम  
 कदा वतीसइमी ॥ ३२ ॥

इकप्य-रुव-विभाज, पुष्पाणं चोत्तरोत्तरं ।

मुष्टं नेय इह कोमे रापपुत्तामो कदा ॥ ३२ ॥

कम नि मरि मिच-मिचि-कोमिह्यप्यप्यप्य पत्तारि पुत्रा पविचविता  
 कदाप्यप्यविज्मो बाधि । ते बाह्यमप्यप्येव बाह्यमप्य पि विह्य व  
 त्तिमि । बाह्या ते वम्येति- केव कोमप्यप्यप्यप्य बाह्या-

वे मिलिया पहिदुमगा परोंपर पमगति-कित्तिअ अम्हाण मामन्य ?  
ओ ग्य मणति—

दक्खत्तण पुरिसस्स, पचग मडयमाहु सुटेर ।  
बुद्धी महस्समुट्ठा, सयसहस्साइं पुण्णाइं ॥ १ ॥  
सत्थाहसुओ दक्ख-त्तणेण मेट्ठिसुओ य रुवेण ।  
बुद्धीइ अमच्चसुओ, जीवइ पुण्णेहिं रायसुओ ॥ २ ॥  
उवण्णो- दक्खत्ताइगुणग्गामे. मच्चा पुण्णामिह वगं ।  
लाहट्ठ सयय तम्म, उज्जमेज्जा सुहेसिणो ॥ ३ ॥  
दक्खत्त-रुव-बुद्धि-पुण्णाण मुल्ले निवाइपुत्ताण वत्तीसइमीं  
कहा ममत्ता ॥ ३० ॥

परिणयबुद्धीए बुद्ध-तरुणमंतीणं कहा  
तेत्तीमइमी — ॥ ३३ ॥

‘ नाणं निरत्थय तस्स, जस्स नाणुभवो मणा ’ ।

महीवस्सेइ दिट्ठो बुद्धतरुणमतिणो ॥ ३३ ॥

एगस्म महारायस्स दुप्पिहा मतिणो, बुद्धा तरुणा य । तरुणा  
मणति एण बुद्धा मडमसपत्ता, न मम्म मतिणो त्ति, ता अलाहि  
एगहिं, अन्हे चैव पहाणा । अन्नया तेसिं परिच्छानिमित्त राया मणइ  
“ भो सच्चिवा ! जो मम मीमे पण्हिप्पहार दलेइ, तम्म को दडो  
कीरइ ? ” । तरुणेहिं विआरसुभेहिं मणिअ-“ किमेत्थ जाणियव्व ?,  
तम्म मगीर तिल तिल कपिज्जइ, सुहुयहुयासणे वा हृत्तमइ ” । तओ  
रत्ता बुद्धा पुच्छिया । तेहिं एगते गतूण विआरिअ-“ नेहप्पहाणा



तदवधिमेव समन्वयमुक्तो बुद्धिप्राप्त्यो निबन्धमि गतो ब्रह्मविन्द  
 कृतिहा सूरिक्रमो य बह्वि । तत्र वा माहसाओ मय पुत्रं ते  
 कृतिहा । तर्हि समको मन्त्रिणा मो मामिष ' विष्णवे पुत्रो  
 " ब्रह्मस्य सत्ता कुरुष्वमि पुत्रमेव समाप्त देवतां मरणं पतो एते  
 न ज्ञानं- का मय ज्ञानो ज्ञातसि । तथा निबन्धनमुक्ता सत्ता  
 कृति- मय मयुक्त्य बर्ष मयं विद्वा ज्ञाना ज्ञानं पुत्रो मय ज्ञानो  
 ता मय पुत्र पुत्रा वधिमे वि तीह मिच्छस हीह । एतस्य विष्णु-  
 मिच्छकत्वं तुम्हं समीचे ब्राह्मणार्थं ब्रह्मस्य कुरुष्वमि कुरुष्वमि, ता ज्ञान  
 एतो विष्णो परिचिञ्चन एव ज्ञानसु । ब्रह्मस्य पुत्रं बर्ष एते  
 मय दातव्य मामिष- गत विष्णो ब्रह्मस्यो कां क्षिप्रस्तस्य तुम्हं  
 इह मन्त्रिरे ब्रह्मस्य एव ज्ञानपुत्राय मन्त्रिरे- हे ब्रह्मवर ! य  
 तुम्हामममुक्त्य मिषा, तथा एव विष्णो कां क्षिप्रस्तस्य । ब्रह्मस्यमिष  
 एव ब्रह्मस्यपुत्राय ता वधि मन्त्रिणां मन्त्रिणा- एव बर्ष पुत्रं य  
 कृतिहेह । तर्हि तथा कय उच्यते करवत् ब्रह्मस्य वा विष्णुस्य  
 कया पुत्रस्य दुर्भाग्यवत्ताय मन्त्रिणेमे वाच करवत् ज्ञानेविषं एव  
 सुवर्णवर्णो न ज्ञानं क्षिप्रस्तस्य एव विष्णो नि निविष्टिमन्त्रेण  
 मन्त्रिणा मय- विष्णो विष्णो पुत्र विष्णु य मय हाह सुवर्णवर्णो  
 ब्रह्मस्यमुक्त्य नावे एते मुक्ता इमाह न इत्येव मिषादिका तथा  
 मय विष्णो । पुत्रा बर्ष य मयज्जन्तव्यो ब्रह्मस्य । एव स मन्त्रिरो  
 तस्य करिसकृद्विष्णो मयुक्तो न ब्रह्मस्यपुत्रं मिषमेविय मेवैव ईत्येव  
 स्तस्य तस्य विष्णु । एत ब्रह्म विष्णो एवमुक्तो मय मय  
 ब्रह्मस्यपुत्रपुत्राई मयि तो नाई कयस्य इह विष्णुस्य मयमय  
 विष्णुस्य । मय एवमुक्त्य एवमय तत्पुत्रायाम् ब्रह्मस्य ब्रह्मस्यमेव  
 एवमेव मयुक्त्यो । ब्रह्मस्यपुत्रस्य गतस्य पञ्चता तथा  
 मयि विष्णुस्यो एव यामुक्तो तस्य गतस्य एवमेव तथा ब्रह्मस्य

अवमाण करेइ, नेहरहिया सा जेमावेइ, तह वि मूढो त चिअ पससेइ,  
 एवं काला गच्छइ । एगया जुणभज्जाघरमि भोयणट्ठाए सो समागओ,  
 सा सवभावपुररस्सर सक्कारिऊण तस्स माउ सुरस पक्कन्न थालीए  
 परिवेसेइ । तह वि सो वणइ—“ तुमए मोहण रविअ न, एय मज्झ  
 नीरस आमाइ, तओ तीए नवीणाए भज्जाए घरमि गतूण किंपि  
 वजण आणेहि, जओ तेण वजणेण सह एयमन्नपि मम रोएज्जा ” तओ  
 सा मूढ पिय नाऊण नवीणप्पियाए घरमि वञ्चिऊण पिअस्स हेउ  
 साग मग्गेइ, कहेइ—“ मज्झ रधिअमन्न पिअस्स न रोणइ, तओ  
 माउयर किंपि वजण देसु ” तओ दुट्ठा सा गोमय गिण्हिऊण  
 वेल्लमिरिआईहिं वग्घारिऊण देइ । त च सा गहिऊण घरमि गतूण  
 पइस्स देइ । सो भुजमाणो त बहु पससतो मूढो भज्ज कहेइ—  
 “ केरिस तीए साउयर रधिअ, तुमत्तो वि अईव सोहणयर निम्मिअ ”  
 एय रागयो सो असुह पि सुह मन्नमाणो हरिसेण भुजइ । जुण्णाए  
 भज्जाए ‘ एय छगणनिम्मिय वजण ’ ति मच्च कहिय पि सो मूढो  
 न मन्नेइ ॥

उयएसो—

दिट्ठिरागेण अधस्स, दिट्ठत नाणदायग ।

नच्चा त सुहमिच्छतो, दूरओ परिवज्जए ॥ ३४ ॥

अइरागधे धणिअस्स चउत्तीसइमी कहा समत्ता ॥ ३४ ॥

अणासत्तजोगाम्मि जस-सुजसाणं कहा

पणतीसइमी—॥ ३५ ॥

अणायत्तयजोएण, कम्मवधो न जायए ।

अस्सु तत्ताडबोहदठ, कुलपुत्ताण नायग ॥ ३५ ॥



अवमाण करेइ, नेहरदिया सा जेमायेइ, तह वि मूढो त चिअ पम्सेइ,  
एव फाला गच्छइ । एग्या जुण्णभज्जाघरमि भोयणट्ठाण सो ममागओ,  
सा सच्चायपुररम्मर मक्कारिऊण तम्स माउ मुरस पक्कल थालीण  
परिसेइ । तह वि सो धण्ड—“ तुमा मोहण रधिअ न, एय मज्झ  
नीरस आभाइ, तओ तीण नवीणाण भज्जाण घरमि गनूण किंपि  
वज्जण आणेहि, जओ तेण धजणेण सह एयमन्नपि मम गेणज्जा ” तओ  
सा गूढ पिय नाऊण नवीणपियाण घरमि वधिऊण पिअस्स हेउ  
साग मगोइ, फहेइ—“ मज्झ गधिअमन्न पिअस्स न रोण्ड, तओ  
नाउयर किंपि वज्जण देसु ” तओ दुट्ठा सा गोमय गिण्हिऊण  
वेहमिरिआईहिं वग्यारिऊण देइ । त च मा गहिऊण घरमि गतूण  
पम्स देइ । सो भुजमाणां त यह पससतो मूढो भज्ज कहेइ—  
“ केरिस् तीण साउयर रधिअ, तुमत्तो वि अईव सोहणयर निम्मिअ ”  
एय रागयो सो असुह वि सुह मन्नमाणो हरिसेण भुजइ । जुण्णाए  
भज्जाए ‘एय छगणनिम्मिय वज्जण’ ति मच्च कहिय पि सो मूढो  
न मज्जेइ ॥

उवएसो—

दिट्ठिरागेण अधस्म, दिट्ठत नाणदायग ।

नच्चा त सुहमिच्छतो, दूरओ परिवज्जए ॥ ३४ ॥

अहरागधे धणिअस्म चउत्तीसइमी कहा समत्ता ॥ ३४ ॥

अणासत्तजोगमि जस-भुजसाणं कहा

पणतीसइमी—॥ ३५ ॥

अणासत्तयजोएण, कम्मबंधो न जायए ।

अस्स तत्ताऽवोहट्ठ. कलपत्ताण नायग ॥ ३५ ॥



अणेण भुत्त, कद्द न भुत्त नाम?, अद्दया न जुत्त गुम्पयणावि-  
रुद्धचित्तण, जमेस भण्ड त चेव करेमि " त्ति मपहारिऊण गमा ण्मा ।  
तद्देव भाणिण दिन्नो मग्गो न्हण । ' कढमागयामि ' ? पुच्छिया  
भत्तुणा । तीण वि साट्ठिओ सुजमागमणाइवुत्ततो । भुत्तुत्तरे विसाज्जिआ  
जसेण भण्ड कद्द पयागि?, अज्जावि अपारा चेव न्हं । जसेण वुत्त-  
" सपयमेव भाणिज्जासि ' जड्द भत्तुणाज्जमेक मि पि न भुत्तम्हि ' ता  
महान्ह । मे मग्ग पयच्छाहि " । सुद्धुयार विम्हिआ तद्देव भाणिण  
लद्धमग्गा सुद्धेण पत्ता सगिह । वट्ठिऊण पुच्छिओ साहू- ' भयव ।  
फो ण्त्थ परमत्तो ' त्ति । मुणी भणेइ- " भद्दे ! जड्द रसगिद्धीण  
मुज्जेइ तओ भुत्त भण्ड । ज पुण मज्जमजत्ताहेउ फासुयमेमणिज्ज  
त भुत्त न गणिज्जइ । अओ चंवागमे भणिय- ' अणवज्जाहाराण  
साहूण निज्जमेव उवघासो ' त्ति, एय तुड पट्ठणो वि वभवेरमणो-  
रहमहियम्स तुद्वाणुरोद्धेण कयभोगस्स अभांगो चेव " जओ उत्त--

“ भवेच्छा जस्स विच्छिन्ना, पउत्ती कम्मभावया ।

रहं तस्स विरत्तस्स, सन्वत्थ सुहवेज्जओ ” ॥

एवमायन्निऊण सविग्गाए तीण चित्तिथ-- " अहो ! एस जसओ  
महाणुभावदाक्खिन्नमद्दोयही समारविरत्तमणो वि चिर मए धम्मचरणाओ  
खलिओ, ममज्जिअ महत्त धम्मतराइय । ता सपय जुत्तेमेएण चेव  
सम समणत्तमणुचरिउ " । एय चेव नेहस्स फल ति भाविंतीए  
सपत्तो जसो वि, साहु वट्ठिऊण निसन्नो नाइदूरे । साहुणा दोण्हपि  
सुद्धदेसणा कया । पडिबुद्धाणि पव्यइयाणि । कालेण पत्ताणि सुरलोग  
ति । एवमेस जसो इच्छामेत्तेणावि चरणविसएण पावारमेण न लित्तो  
त्ति ॥ उवएसो --

भारितथम्मसंसत्त, —अस-सुवसनायपं ।

नात्तम 'सम्भक्तव्याहं, अमासचो सुसाइए' ॥ ३५ ॥

अमासचबोगाम्मि अस-सुवसार्थ पक्कीसइमी क्खा

समथा ॥ ३५ ॥

पुण्ण-पावाण षठमंगीए मंतिपुचीए

कहा छचीसइमी ॥ ३६ ॥

सत्थं पुण्णपात्थं, सत्थं लोक्कम्मि हीसइ ।

एत्थ नरिंदपच्चेसु, मंतिपुचीनिर्वसत्थं ॥ ३६ ॥

रायपुरनगरे निस्सम्मसुरो माम् नरिंवा कासि । एत्थ  
ज्जेजानंति—पंडित-नगरसद्विषयविद्विषय महाए क्वचिद्धं नरिं  
सत्तज्जज्जममात्थो यइपरिकसत्थं पुण्णइ—‘ज्जेजानंति जत्थिज्जत्थं  
जत्थिज्जत्थं, न जत्थिज्जत्थं जत्थिज्जत्थं न कि एत्थरिं  
बत्तुं सिंहा, एत्थस पक्कमसुचरे रिक्खाइ । सत्थं छ्वावक  
विचारंति—‘एत्थरिं कि हांवा ?’ विज्जेहिं पि लस्सत्ता नाक्काओ ।  
ज्जे वि के के वि छ्वाय संति वे सत्थं वि चत्तरे हां ज्जमत्ता  
क्कावा । एत्थ कुत्थो नरिंवा सत्थिक्कत्तरे क्कोइ— परिस्सीए महाछ्वाए  
सत्तुचरे हां क्कोहि ज्जो न कक्का इत्थं क्कत्तं पक्कमत्ताइहिं  
विक्कत्तं वि पोत्तं कि सुहा कायं ? विरत्तु एत्थं पंडितत्थं ।

एवं क्वचिद्धं बुद्धिनिदानपद्धतिं क्कोइ— हे मंतिवर ! तुम  
इत्थस उत्तरं दीक्कत्तं हाक्का जत्तइ ते वंजिते, मंतिक्कत्तं न

पतिविराजि । विमलविद्या महा । विताम अवन्तो सो मतिवरो  
 यमि गये । उत्तरदाजिनाइ तम मोयन वि न रणाइ । जया  
 मोरगमण मन्त्रा वि मो भागओ तया गम्य विद्वसी पुनी पंथपता  
 को अट्टगतिआ अवि, सा विद्वय मर्मागमानतुण पण्डे - 'हे  
 विद्व' । शुक्तिपत्रा ८, तओ मिय मोयनाय आगण्डेहि ।  
 मतिना तुल - 'अज्जाहं अहं वितावन्तोहि, तओ तुम पिय  
 मोयन गुणेनु' । तीण पुदु - 'परिणी तुम्हाण अवि विता?,  
 खपर च तुम्हेनु अभुसेनु मा पट भुतिज्ज' । तया नमिणो  
 गतिना पदिओ नरिदम्म पण्डुजतो । तं भाषा ना विद्वसी पुत्ती  
 पण्डे - 'इमस्स पमिणस्स ८ उत्तर नरिदम्म पुरओ दाहिम्म,  
 मा विता पण्डे । अट्टणा मोयनाय उट्टसु' । पुत्तीण ययण मोवा  
 सहरिसो 'पमा किं उत्तर पाहि' ति चित्तयतो उत्थाय तीण सह  
 मोयण काठ लग्गो । मोयणाणत्त पुच्छ - 'हे पुत्ति ! वितास्स  
 उत्तर ?' । सा पण्डे - 'इमस्सुत्तर प्य न पाहिज्ज, रण्णो पुरओ  
 दाहिम्म मपचयक्खं, तुमण सदेहो न पायज्जो । जया नरिदम्महाए  
 पत्तय सिया, तया ह मड नयव्या' ।

मती परितुष्टो पण्ड - 'इओ तट्ठअदिणे अस्म उत्तर दायव्य,  
 जया अह नरिदम्महाए गच्छिस्म, तया तुम मह नेहिस्म' । निध-  
 गओ ण्मा किं काहिहि' ति चित्तमागस्स तओ दिणो समागओ ।  
 पच्चूसममण सहागमणयेलाए नियपुत्तिं घेत्तूण रहसुधेमिक्काण घराओ  
 निग्गओ । पिट्ठणा सह गच्छती पुत्ती रायपहम्मि कपि मेट्ठि  
 पासायघरस्स चउक्किआए मंठाडउण दीणाणाहजायगाण दाण दित्त  
 ददुण नियपियर पण्डे - 'एअ सेट्ठिघर रहे उवयेसायेह, जओ  
 पच्चुत्तरदणे पयस्स पओयणमत्थि' तओ मतिणाट्ठो सो मेट्ठी  
 रहम्मि उवविट्ठो । रहो अगगओ चलिओ । पुणरावि आयणवीहीए



हिमं यो वणिजपुत्रं यमेह जो बज्रगत्य मरने सप्तसिखसमस्तं  
पिडस्रतिजच्छुरम् विषयसेतो बलिष तं पि पासिता यं तं  
कहिअण ठबह ।

पुत्राणि जगो गच्छती स्य वं पि महप्पानं केवलेह । सो मरिसे  
इंदा सजो वषसा बज्रगतं भावेमाये विहरेह, तं पि लज्ज सज्जि  
कांछाविअण सख नेह । तजो जगो गच्छती एो भिक्खुम यमे-  
हो सह बहम्मी जीवहिअणसो परवदाओ भिक्ख मज्झिम गणे  
निज्जहेह । स भि भिक्खुओ पण्णि वरविओ । एवं विज मर-  
वषाकलपमन्हुतो यंती पुत्तीप रहस्सं बज्रगतो विविदलकं पुत्ते  
निवल्हाए गओ । तया बजे भि कइओ नवरत्ता मत्तिस्स पणुज  
बाजल्लं जज ससागवा । स्वप्प कवचिअण गरिअण कइहिअं सने  
सक्कहिअण मत्तिजा सख ससागए पुरिसे इदअण पुअं- निमे  
समावय । मंती कइह- सुम्हम्प पणुत्तराजत्वं ए पुरित  
समावीया । गरिओ मासेह- सिअं मम पत्तिजस्स उत्तरं देहि ।  
मंती वएह- सुम्हं इमस्स पत्तिजस्स उत्तरं मम पुत्ती वरकं  
इमी । गरिअण्हा सा मत्तिपुत्ती पडिमासेह- “ हे नवर । त्वि  
मंतायं बलिषत्तिस्सपयमपण्णस्स उत्तरं कवचं पिअ सेविपणे  
मक्खओ ” ति कहिअण सीङ्गिबरी वसिओ । राइअ पुअ- “ कइमेस्से ।  
स कइह- जगो एसा सेविपणे पुम्भमपसमावरिजबन्धव्यानेव  
कमुअरंते अलि ठह व इह मने भि बाणसीयतवमाव वन्ध सम्मजा-  
राहंते बीज-दुक्खिजजज्ज कइरंते एस्ते वरमदे भि कवचं सुअं व  
कहिहिह । जज्जा जलि-जलि ति पयमपत्तिजस्स उत्तरं इमो मेविपणे  
सिआ ॥ १ ॥

वीरपण्णसुत्तरे बलवत्तत्वं तं वणिजपुत्रं वंशिअण कइह - एस  
वणिजपुत्रो केवले अयमोर्गेहं विपुत्तं विहरेह ॥ १ ॥

सद्वम्मकम्महीणो सत्तयसणेहिं दुह्ह माणवभव निप्फल गमावेइ,  
तओ अस्स पासे अहुणा दव्वमात्थि, भवतरे सो निद्वणो दुही होही,  
तेण अत्थि नत्थिरूवपसिणस्स उत्तर इमो निद्वम्मो धणिअपुत्तो  
वाणियव्वो ” ॥ २ ॥

तह य तीयपच्चुत्तरदाणे सा त महारिसिं उवदसेइ, उवदसित्ता  
कहेइ - “ एसो महप्पा सइ सब्बपावकम्मविरओ उवसतो जिइदिओ  
पस्वयारिक्कतल्लिच्छो सद्वम्मोवएसदाणेण य अण्णेसिं पि कल्लाण-  
करणपरो अप्पडिवद्धो विहरेइ, तम्हा अहुणा अणगारत्तणेण अस्स  
पासे किंपि नत्थि, किंतु भवतरे अणुवम त पाविस्सइ, महारिद्विवतो  
होस्सइ, तेण नत्थि-अत्थिरूवतइअपसिणुत्तरदाणे एमो महप्पा  
निदसिओ ” ॥ ३ ॥

चउत्थस्स पण्हस्सुत्तरे त भिक्खुअमुवदसित्ताण सा मतिपुत्ती  
चेइ - “ एस भिक्खू निद्वसपरिणामो निरत्थयजीववहतप्परो भिक्खाण  
सकट्ट जीवण निव्वहेइ । तओ इयार्णिं इमस्स समीवे किंपि नत्थि,  
भवतरे य पावकम्मेहिं दुगईए गमिस्सइ, तत्थ किमवि न पाविस्सइ ।  
तओ नत्थि नत्थिरूवचउत्थपण्हुत्तरम्मि एसो भिक्खू जाणियव्वु ”  
त्ति ॥ ४ ॥

एव मतिपुत्तिकहिअ पच्चुत्तरं सोच्चा नरिंदो सव्वा य परिसा  
अईव सतुट्ठा सजाया । महिवई यि तीए बुद्धीए परितुट्ठो सहासमक्ख  
चेहु त पससित्ता सुव्वण्णालकारेहिं सक्कारित्ता सम्माणित्ता य  
घरमि गतु अणुण्ण देइ । नरिंदपससिओ मती वि सहारिसिओ  
त्थिपुत्तीए सह गेहे समागओ ॥ उवएसो

युण्णपावाण भगीए, फलं च्चा इहं सया ।

‘ पुष्पापुष्पंभिपुष्पस्त उज्जया इमे जन्मवे ’ ॥ ३६ ॥

पुष्पपात्राज चठमंगीए मंतिपुत्तीए छपीसइमी

कहा समयवा ॥ ३६ ॥



असंतोसे निदृणभिरसुस्स कहा सत्ततीसइमी

॥ ३७ ॥

छच्छीरेवीपसाएव सई पवं वि नत्साइ ।

संतोसाममजो मायं, निदृणो भिरसुजो इइ ॥ ३७ ॥

एते भिरसुजो वम्मज्जकपसुइ पक्कचारसिद्धं केवलं वमज्ज  
 छच्छिणं सेटोसविरद्विजं वंति वज्जिवरं पदद्वयं स्मिइ- तस्मिं स  
 वरं वेत्तं इत्थं ज्ञातं च विंति सरक्खु । अइ पज्जारिसो जन्मठो ।  
 होम्मा, तथा सवासेयं चिद्धामि, वम्मज्जो पक्कचारसौख्ये अ हावयि  
 एवं चित्तमात्रे भिरसुजं च मममायो पुण्णो वदिरं विमज्जो । इव  
 वज्जमज्जो गच्छेत्ति सिरिदेवी तस्स विवज्जयं माज्ज पुरिपत्तं  
 समीपं जगत्तं इदेइ- “ इ भिरसु ! पुष्पा विपसमायो मइ वज्जिजो  
 तेव इच्छइ तुम्हा त्तिं वि इत्थं पाठं इच्छामि तुमे वत्तं पक्कज्ज  
 त्थाइ वीचारे पक्कवेमि । जया तुम्हा संतोसी होम्मा तथा जग्गं  
 ति वपम्मा । परंतु पक्कपवमात्तेसु वीचारेसु अइ पत्तो वि वीचारे  
 भूमीए पक्कित्तइ, तथा सौ जन्मठो होयि । ति वदित्तं स वज्जि  
 देवी वत्तरेइ इत्थं विवज्जयंति वीचारे पक्कित्तं जग्गा । सो  
 भिरसु होइत्तत्ता ‘ ज्ञातं ज्ञातं ति न ’ । ”

समता परिपुष्णं मजाय पि सो न निसेहेइ । पुणोवि कहेइ एत्थ पच  
दीणारे पन्निस्सवेसु, ते वि पक्खित्ताण उत्त—‘ किं तुज्झ सतोसो न  
जाओ ? ’ । असतोसेण सो पुणो पुणोवि मग्गेइ । एत्थ पन्निस्सवमाणेसु  
दीणारेसु बहुमारेण वत्थम्स य जिण्णत्तणेण त भिण्ण, ते सब्बे दीणारा  
भूमीए पट्ठिया, तया मो भिक्खू हादारे कुणतो अप्पणमिअण भूमीए  
पट्ठि दीणारे पासेउ लग्गो । तया मग्गे दीणारा कक्करूया  
सजाया । जया उद्ध पासेइ, तया लच्छी पि अट्ठमण पत्ता । तओ मो  
निम्भमासेहरो अप्पण निट्ठतो दुहिओ मजाओ । एव असतोसेण जीवो  
हुइ पायेइ ॥ उवएसो—

निद्वणत्थिजणंस्सेह, कज्जवज्जियभावणं ।

जाणित्ता ‘ थोवदन्वे वि, सतोसं माणसे धरे ॥ ’ ३७ ॥

असंतोमे निद्वणाभिव्वुस्म सत्ततीसइमी कहा समत्ता ॥ ३७ ॥



परासुहर्चितणे सुंदरीए कहा अडतीसइमी—

॥ ३८ ॥

‘ परस्स चित्तिअ ज तु, सस्स तं जायए धुव ’ ।

मज्जाए चित्तिआ हिंसा, तीए अप्पंमि साऽऽगया ॥ ३८ ॥

ओहिनाणजुत्तो वरदत्तमुणीसरो विहरमाणो कोसवीए पुरीए  
नयरुज्जाणे ममागओ । महीवालनरिंदो तह य पवरजणा य देसणा-  
सवणत्थ उज्जाणे समागया । उवएसवाणावसरे कहिति—“ साह्वो  
सव्वत्थ चट्ठुव्व सव्वो—अल्हायगरा हुति, सत्तुसु मित्तेसु—



ताओ नेवलोगाओ चङ्गण चपानयरीण दत्तसेट्टिरम घरामि तवभज्जाए  
 पुत्तत्तणण समुपण्णो । मा पुठ्ठमपद्मामाओ सम्मान्तिट्ठी दयावतो  
 सासि । सुदरीजीओ चट्थीए नरगाओ निगन्तिट्ठा अणंग भव  
 भमिऊण वरत्तम्म घरामि दासीण पुत्तो सभूओ । पुठ्ठमपद्मामाओ  
 वरत्तमि पओस घरतो वि तस्स मिणेहमपायणत्थ तेण सह धम्म पि  
 कुण्ड । तेण वरदत्तो वि त दासीपुत्त वधुत्तणेण मन्नेइ । लंगमि  
 सेट्ठिमायगे त्ति पसिद्धो जाओ । मो वि दामीपुत्तो तम्म व्होपाय  
 सइ चित्तेइ । एगया विसमीसालिय तबूल वरदत्तस्स मो देइ, तथा  
 चरच्चिहाहारपच्चकम्माणत्तणेण त ऊसीसगे टवेइ । पच्चूमकाले  
 वरदत्तसेट्ठी जिणालए चेइअउणत्थ गओ । तथा वरदत्तस्स भज्जाए  
 तथ समागयस्स दामीपुत्तस्स - 'हे दिअर ! एय तबूल तुम गिण्हेसु'  
 त्ति कहिऊण दिण्ण । सो वि तीए महुररसमि लुद्धो मूढो त भक्ति-  
 ऊण मरण पाणिऊण सयलिआ ग्मा जाया । दासीपुत्त मय जाणित्ता  
 वेरगरजियमणो वरदत्तसेट्ठी सत्तखेत्तेसु धण वायरिऊण पवइओ,  
 सो इ जाणियव्यो । तथा सा सयलिआ मुणिरमुद्दाओ त वुत्त  
 सोच्चा, जाईसरण पावित्ता मुणीसरचरणगे समागच्छित्ता, वदित्ता  
 नियावराह खमावित्ता, अणसण किच्चा सग पत्ता । नयराहिघो  
 पवरजणा य एय सुणिऊण पासित्ता य जिणीसराण दयामइअ  
 सुद्धधम्म ससम्मत्त पत्ता । उवएसो—

सुंदरीवरदत्ताणं, नच्चा बोहप्पयं कह ।

तत्तो 'सुहत्थिणो तुम्हे, पराणिदठ न चित्तह' ॥ ३८ ॥

परासुहचित्तणे सुंदरीए अढतीसइमी कहा समत्ता ॥ ३८ ॥



उज्जमम्म पहाणत्तणम्मि विठसवद्धुगात्स

कहा एगूणचार्लीसइमी-॥ १९ ॥

सद्व्यपमि परा नभा, कइहाँ पंच देठयो ।

सम्भोसिं उज्जमो सेदुओ विठसा दोम्मि नम्मम ॥ १९ ॥

एगवा भोक्कनरिहत्त सहाए दुम्मि विठसा सवद्धुगा, सेहु १  
विठइहाँ- के मापी ते नत्तरा होइ अओ सो उज्जम विठ न  
विठ नत्तेइ अओ पंदिना- उज्जममेव कइहत्ते पम्पइ न  
मळसा के पि चळे न अइति, कहा दुत्त-—

“उज्जमेव हि तिस्संति कइहाँ न पमवओ” ।

म हि दुत्तस विठस, पमिसंति मिया दुहे ॥ १ ॥

एव कीओ उज्जमेव कइहाँ अत्ति । भोक्कनरिहत्त ते दोम्मि उज्ज-  
ममवोचनं पुद्द ते कइति- विठममिक्कत्तं पुद्दममिहत्तं  
अत्तात्त । एव दुत्त- दुत्तमं ओ विठमो अत्ति ते ओइ” ।  
एव ते दुम्मि वि विठ मियं मयं पुत्तिपुरत्तरं निवइना नुरओ इवेइ ।  
एव विठइ- एव वि पम्पत्तमो सव १ तं न कइ अत्तिअइ” ।  
एव विठइममममो कइहीवाचपविजं पुत्तइ- एव वि मओ के  
किम्पत्त १ वि वा कइ विठइ १ । कम्पत्तइओ ओइ-“ इ पम्प” ।  
अइ एवत्ताए रओ पम्पत्तममममो महुओ कही वा कम्पत्त, एव  
एवत्त विठमो कइम्पत्त, तेव सवो अओ वा अत्तिअत्त । एव  
ओइ- कम्पत्तविठम अत्ति ओ वि कम्पत्त १ एव विठम एव  
अत्तिअत्त । कम्पत्तइओ एव ते दुम्मि विठमो ओवाविठम तेवि  
देवाइ पम्प कविता दुहे न इत्ते पित्तम कम्पत्त

गाढयरं निअतिअ अघयारमए अववरगे ते दुण्णि विउसा ठविआ,  
कहिय च “जो दइव्ववाई दइव्वेण छुट्टु, जो उज्जमवाई सो  
उज्जमेण छुट्टेज्जा” एव कहिऊण कालीदासो पच्छा नियत्तो । तओ  
सो नियइवाई मो ‘ज भावि त होहिइ’ ति मन्नमाणो निचितो  
समाणो सुहेण तत्थ सुत्तो । उज्जमवाई जो, सो छुट्टणाय वहु उज्जम  
अहे, हत्ये पाए अ भूमीए उवरिं जओ तओ घसेड, परतु गाढयर-  
त्थेणत्थेण जया सो न छुट्टिओ, तथा त निययवाई विउसो कहेइ  
“किं मुहा उज्जमेण कएण, एसो निविडो वघो क्या वि न  
छुट्टिहिइ?, निप्फलेण वलहाणिकारणायासेण किं?, खुहापिवासापी-  
लिआण पि अम्हाण नियईए सरण चिअ वर” ।

एव सोक्खा उज्जमचाडपडिओ छुट्टणपयास न चएइ । छुट्टणाय  
अईव पयास कुणेइ । एव तेसिं दुवे विणा अइक्कता । भोयणा-  
भायेण सरीर पि ताणमईव झीण सजाय, कज्जकरणे वि असमत्थ  
जाय, तह वि उज्जमवाई पयासहीणाववरगे इओ तओ भममाणो  
वघणाओ मोअणाय जत्त न मुचेइ । नियइवाई त वएइ-‘अहुणा  
परमेसरस्स नाम गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिऐण?’ । तथा सो  
उज्जमवाई कहेइ-“समावन्ने वि मरणे उज्जमो क्या वि न मोत्तव्वो,  
सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्व” । नियइवाई बोलेइ-‘जइ  
एव ता अघारिए एयमि अववरगे पाए हत्ये अ घसमाणा भमतो  
चिट्ठेइ, किं उज्जमो फल दाही?’ । तह वि सो उज्जमवाई पडिओ  
खीणसरीरवलो तइअविणमि भित्तिनिसाए भमतो हत्ये पाए य  
घसमाणो पढतो पुणरवि घसतो भमतो दइव्वसाओ अववरगत्स  
कोणगे तत्थ पडिओ, जत्थ उदुरस्स विल वट्टइ । तस्स हत्या विलोवरिं  
समागया । तत्थ रघमज्झट्टिओ मूसओ बाहिर निग्गतुमचयतो दत्तेहिं  
हत्थवघणं छिंदेइ, तथा सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपड पायवघण



च अत्रमात्रेऽ, एते तथा अत्रपरमे गच्छपरतमेव विमर्शे न वदेत् ।  
 अत्रम अत्रपरमस्य चार अर्थे अस्ति चि भित्तिधर्मस्य विरिक्तमेव  
 तेन कमेव शरं सत् । बाहिरा विमर्शं त चास्तिऽय कमेव न ए  
 मूल्यान्वो अत्रारिज बाहिरं ना निमात्रो । वच्छा ऐम्बार्ज बाहिरं नि  
 र्वाण्यजा अमापत् । वच्छाण्यजाय विद्या कृत्स्नीशतो मर्त्यं निमो ।  
 अत्रा ते शुभे बाहिरनिमाय कमेऽ, चास्तिना हे येसुय निवक्तार्य एवो  
 सत्य अत्रपारेदि मन्त्रकारिता मन्त्राविता च निवस्तुय हे विम  
 यद्विज्ज सत्यापको । मोषवार्ज-कमेऽ- उच्छेज विमं यमेव  
 पण्डितो वि अमो उच्छेजवार्ज पण्डिता उच्छेज कृद्दिवा, वच्छे  
 कृत्स्नामावाभ्य न कृद्दिवा । ओ वृत्त्यमेव पार्थ मन्त्रं स्य कमे  
 कर्द्दिम्यऽ । अत्र मन्त्रा अत्रात्मनं तत्र तुया विद्याता दुर्गमं मर्त्यं  
 च अत्रात्मनं समवेऽ । आ अत्राय कृत्स्ना सो अत्रा दुर्गम्यो दुर्गम  
 किं वि न कर्त्तं कमेऽ । ऐम्बार्ज उच्छेजेन विद्या कर्त्तं न वदेत् ।  
 तमो उच्छेजा पार्थो अत्रायो । तमो मोषवार्जो उच्छेजवार्जो  
 वृत्त्य-वत्त्वकृतयेर्दि मन्त्रायेऽ । तच्छेये र्वाक्यरजसमुपायं कच्छेजे  
 प्यती इह उच्छेज- तच्छेये पञ्चविषयवत्त्वकृतये, सो वदो कमेव  
 होऽ, पञ्चविषयवत्त्वकृता वि माद्विषयवत्त्वकृतामिजोतेन पयो होऽ अत्रा  
 विद्या विमं हविरे । तच्छेयस्स उच्छेज्य पत्ता इवऽ, अत्र कृत्स्ना  
 अत्रुच्छेजं सिद्धो कच्छेजस्स योता होम्यऽ । एव कच्छेज-विमं-उच्छेज  
 कच्छेज-दुर्गमकृत्स्नावच्छेजवत्त्वकृतामिजोतेन पयो अत्रा तमो  
 कच्छेज-वत्त्वकृतामिजोतेन पयो अत्रा तमो वि कच्छेजो कच्छेजो वेदो ।  
 अत्रास्ते वि-कच्छेजे मन्त्रि वाहिरं । अत्रो कच्छेजो कच्छेजं वि न  
 मोच्छेजो ॥ उच्छेजो

उच्छेजस्स कर्त्तं नच्छा विमं-दुर्गमकृतामिजो ।

१ आचार्यविरचितं न कृद्दिवा, -

उज्जमस्स पहाणत्तणम्मि पिउमररदुगस्स  
एगुणचालीसटमी कदा ममत्ता ॥ ३९ ॥

जिह्वाण निग्गहे महप्प-सुगाण कदा चालीसमी  
-॥ ४० ॥

‘द्वयपामं समुच्छेत्तु, हेऊ इदियनिग्गहो’ ।

नञ्चा त अलवित्ता, विमुत्तो पंजरा सुगो ॥ ४० ॥

कौमरीण नयरीण एगो धम्मिट्ठो धणद्धो मेट्ठिवरो आसि । मो  
सह धम्ममत्थाइ सुणतो माहुज्जणचरणफम्मलमेवाण सुहेण फाल  
गमइ । तंण एगो सुगो पालिओ अहेमि, मो पजरमज्झाट्ठिओ ममाणो  
मेट्ठिस्स पान्नामि धम्ममवण्णेण मतप्पा मद्धममीलो जाओ । मेट्ठिणो वि  
तोमि सुगमि गाढयरो रागो मज्जाओ । मोहणयरफलाइणा त सम्म  
पाळइ । सुगो पि मया परमेसरस्स नाम धोद्धिउण मेट्ठिस्स चित्त  
अल्हाणइ, एव ताण दुण्ह कइ धि दिग्गसा गया । एगया नयरीण  
एज्जाणे को धि महप्पा परभावणू अगेगसीसगणपरिघारजुओ  
धम्मवणसदाणत्थ समागओ । पजरजणा य तम्म समीधे धम्ममवणत्थ  
समागच्छति । तया त मेट्ठि तस्म महारिसिस्स पासे गच्छत्तं  
पेक्किउण सुगो वण्ह-“ हे मेट्ठिवर ! जया तुम्हे तस्स साहुयरस्स  
समीधे वदणत्थ गच्छिज्जाह तया सो महप्पा एव पुच्छिउअव्वो,  
मम वधणाओ मोक्खो कइ होस्सइ ?, मत्थेसु एव सुणिज्जइ-  
“ परमेसरम्म अभिहाणकहण पि जीघाण मोक्खप्पायग सिया, ह तु  
सया ईसरस्स नाम गिण्हतो धि अब्ज वि जाव वधणमि कइ पाडिओ  
मिह ? । छण्णोयाओ को अत्थि ? । एव मम एसो पण्हो तुम्हेहि

पुष्पिष्ठरश्मौ । सो सेष्टिचरो मुगस्तु बबर्षे सुविह्वल कर्पणीय  
 न मण्डुवरस्तु समीपे गमो । उपपन्न सुविह्वल पश्यते मुगस्तु क्व  
 पुनः । परमिण्यावगाण्डुस्तथो सो सुविह्वलो बभूवीह विमोहिता  
 सागमि मित्रा न किं पि बभू । तथा सो सद्यो होचर्ष वि हर्षे पि  
 वारं पुष्पेह तथा वि सो सुविह्वो मण्डवेन सागमेन न संवेद्य न  
 किं पि बोद्धेह । सेष्टिचरो वि ज्ञाप्यर्षं मरणं वदन्तु गिर्येयं बभूवो ।  
 मुगा वि सेष्टि पद् वत्तार पुष्पेह । सेष्टी बभूव-“ हे विह्वल ! त्व  
 पश्यते मय ज्ञाप्य सद्युष्मे पुष्पिष्ठरश्मौ तथा सो नेत्याह विमोहिता  
 सद्युष्मो न किं पि वत्तारं वसती । एवं होचर्ष तर्षं पि वारं पुनः  
 वद वि सो विह्वल विवेक्यो सज्जामो न किं पि बोद्धेह ” । एवं  
 मुगो वि बभूवपरममो संजगतां कुरुक्षेत्र एतौह नववार्त निवे-  
 क्षिह्वल विवेक्य इव संजामो । पश्यते सो सेष्टी तं वदामिह विवे-  
 ददन्तु, किमर्थं ममो पितृ मित्रेणैव कुरुक्षेत्रो वदिरं वदिरह्वल इत्येव  
 तं पिबन्तुमं स्वसह, मित्रं तं मयं सि बभूवा हा ! हा ! एतां मयं  
 पत्यो पितृ वदु सेष्टिह्वल तस्मै मरणविह्वलकुरुक्षेत्र गिर्येयं वद-  
 मेह्वल मुगमुपिबन्ते कुरु क्षेत्रा ज्ञाप्यमिह तं ठविह्वल बभूवमात्रं  
 वदामि गमो । तथा मुगो वि गङ्गाजो वदिरह्वल, एतस्मै सद्युष्म  
 वदिरह्वल । सेष्टी ज्ञाप्यो सज्जामो तं मुगं वदामिह्वल पश्यते  
 वद-“ हे विह्वल ! त्वं मुगं कर्षे ! कर्षे कर्षे वदिरह्वल विह्वल ? वद  
 वा ममो ह्य विह्वलो ज्ञामो ” । तथा मुगो वि वद-“ हे सेष्टिचर !  
 मुगं वदस्मै मरणस्तु सद्युवरस्तु वत्तारं वदस्मै गण्यवर्ष, किन्तु त्वं  
 वदस्मै ज्ञाप्य पश्यते मय वदस्मै वत्तारं विह्वल । मय वद  
 वदस्मै मरणं एवं विह्वल-“ सो माह्वल नेत्याह विमोहिता ज्ञाप्यमि  
 तिममो विह्वलको ज्ञामो तयो वदस्मै वदामि ज्ञाप्यमि मय  
 ज्ञामिह्वल । त्वं ज्ञाप्यता इव विह्वल तिममं विह्वल विह्वल  
 सेष्टीयो विवेक्यो ज्ञामो । वद कर्षे मयं पत्यो पितृ वद वद । एवं

સાહુવરેણ પજરવધનાઓ જુત્તીએ અહ ઉમ્મોદો । એવ ઇદિયાણ  
નિગદ્ધરેણ મવવધનાઓ જીવો વિ છુદ્ધિજ્ઞહ, પરમપય ચ પાવેડ ।  
અહ વિ વળમ્મિ ગતૂણ જહિચ્છ પહુપાયસરેણ જીવણ સહલ કરિ-  
સામિત્તિ ” કહિઝળ વળમિ ગઓ સુદિઓ જાઓ ॥ ઉવએસો—

નિમાહો હંદિયસ્સેહ, સુગસ્સ ફલિયં જહા ।

તહા ‘ તુમ્હે પયદ્દેહ, તમિ સમાહિયા સયા ’ ॥ ૪૦ ॥

ઇદિયાણ નિગદ્ધે મહપ્પ-સુગાણં ચાલીસમી કહા સમત્તા ॥ ૪૦ ॥

નાણગન્ધમંતિસ્સ કહા એગચ્છાલીસમી—

॥ ૪૧ ॥

દેવ્વજણ્ણવિવત્તીઓ, ઘુદ્ધિમતા જણા દુયં ।

ધુવં તરંતિ જત્તેણ, નાણગન્ધુવ્વ ધીસહો ॥ ૪૧ ॥

સિરિમુણિસુવ્વયતિત્થયરથૂમાલકિયાણ વેસાલીએ જિયસત્તુનામ  
નિવો આસિ । તસ્મ રણ્ણો સામાડનીડમાયણ મયલનિવરજ્જકજ્જસજ્જપરો  
નાણગન્ધો નામ મત્તી અહેસિ । અન્નયા સહાનિવિટ્ઠસ્મ રાઢ્ઢો દોવા-  
રિણ પળમિઝ્ઞણ પ્પય રાયા વિન્નત્તો — ‘ સામિ ! ણ્ણો નેમિત્તિઓ કત્તો  
વિ આગઓ ટારામિ ઠિઓ સમાણો પહુપાયડસણ મહેડ । લદ્ધાણુવ્વેણ  
તેણ નિવસહાએ પવોસિઓ । સફોડગેણ નરિદ્ધેણ તણ્ણાણજાણણકા  
વિહિઝચ્ચિપ્પહિવત્તી મો જોદ્ધનિઓ પુદ્ધો — ‘ ધોવદિણમજ્ઞે કત્તસ  
અપુન્ન મુહ દુહ ચ દોર્હા ? ’ । અદ્ધગાનિમિત્તમત્થયિસેણ તેણ મણિય  
— ‘ દે મામિઅ ! તુમ્હેર્હિ પુચ્છિઓ સત્તો મત્થમણિયમત્થ કાર્હિત્તો  
દોસ ન જ્ઞામિ ’ ત્તિ કહિઝળ ઘણ્ણ— “ જો ણ્ણો નાણગન્ધો મદ્દામત્તો  
મત્તિપત્તીણ મિરોમણિત્તણ પત્તો, તસ્મ સપ્પલસ્મ મારો અદ્ધધોરા ઉવદ્ધિયા



मोयणनलाणि पयाणि तुज्झ तणुद्विद्वे साहणाड मुक्काड। तओ  
नियकुलरक्खणत्थ पुत्ते वि तहा पिहिण, नरिंदस्स पासे उवागम्म  
तिण निद्वेद-‘हे राय ! रायकुलसेवाओ पुरिमपरपरपत्त प्य  
व्व निपायत्त अत्थि’। रण्णा भणिय-‘मा वीहसु’ त्ति । मतिणा  
के जाणइ, किं भविस्मइ’ एव घोत्तूण अणिच्छतो वि राया प्य  
जूम पडिच्छाओ । सा मजूसा राडणां भडारगिहमि नीया । भणिय  
व-‘हे देव ! इह मज्झ सव्वमार सचिद्वइ, पस्स जाव  
मज्झोयरोहाओ चेव सव्वायरेण सरक्खिज्जउ । तओ रण्णा तीसे  
मजूसाए निविडाइ तालगाड टिण्णाड, सव्वओ मीसगमुद्दाओ वि  
ण्णाओ । पडपहर च तीसे रक्खणत्थ दोण्णि दोण्णि पाहरिआ वि  
मिआ । एव कयसुविहाणो मइघो विम्वएणं ‘किं एसो मज्झ पओगो  
विहवेज्जा, अचित्तचरिय दिव्व, किं च न होज्जा’ एव खणेण विसाएण  
टुप्पतो जाय चिट्ठइ, ताव त्तेरसम्मि वासरे पभायसमए ‘कण्णतेउरम्मि  
नरवइस्स कन्नाए वेणीलेओ जाओ, केण कओ इअ निमित्तचित्ताए,  
वेद्वेण मतिसुएण कओ’ त्ति पवाओ सजाओ- जह किल नियमादिर-  
सेज्जापरिमठिअ एअ रायकण्ण समागम्म जिट्ठमंतिसुएण विण्णत्ता-  
‘उम्मीलियकमलवयणे । हे सुदरि ! मए सम रमसु, बहु पि भाणिआ  
बावेसा नेण्टइ, ताव रोसवसेण छुरिआहत्येण अणेण तीसे वेणी  
छिन्न’ त्ति ।

तओ सा कमलमुद्दी असुपुण्णनयणा विस्मर रुयमाणा पिउणो  
पासम्मि गया । सव्ववुत्ततो निवेइओ । कोवानलारुणिअदेहो राया  
पुरारक्खगलोग एरिस भणइ-“ जह स मतिसुओ सूलारोवणपमुह-  
दुक्कमारेण मारिओ होइ तहा लहु चिय करेह, अहवा सचीयाहमस्म  
गेह तणेहिं दग्गेहिं दास्यमरेहिं सव्वत्तो वेढिउण, जलतजलण च  
काउण सव्वे दहइ जथो मज्झ पर पसाय लाहित्ताण उम्मत्ता जाआ,  
कहमन्नाहो एरिस आयरणं होज्जा” ।



एव सच्च अणुद्विज ॥ ति सभाविज्जइ । तओ संजायपच्चएहिं  
सञ्चेहिं एयमेय ति भणिय । 'कहमन्नहा एसो तुज्ज पुत्तो सुरक्खिओ  
इणं कच्च कुणेज्जा' । हे देय । अचित्त कम्म कयपडिकार पि ज  
एव फलइ, बुद्धिमताण चरिय पि कम्मस्म पमर ज हरइ । अओ  
एवावसर कथइ वलिय कम्म, तह य पुरिसयारो वि कथइ वलिओ  
होइ । एव परिणयवणिआण जारिस चरिय, तारिस चिअ चरिअ  
सपुरिसगाराण पेय । जहुत्त-

कथइ जीवो वलिओ, कथइ कम्माइ होंति बालियाइं ।

कथइ धणिओ बलवं, धारणओ कथइ बलव ॥ १॥

एव सोच्चा रण्णा बहुपूइओ सो णाणगव्भो मती नियनाम-  
माणचेट्ठिओ होइ भिरिं तह जम च लोण पत्तो ॥ उवएसो —

णाणगव्भस्स मतिस्स, देव्वादिदूठ-दूठ-वारण ।

सोच्चा भे चरियं 'होह, मईए कज्जसाहगा' ॥ ४१ ॥

फलदाणसमुत्थिअ-असुहकम्मनिवारणे णाणगव्भमंतिस्स

एगचत्तालीसइमी कहा समत्ता ॥ ४१ ॥



पुण्ण-विक्रमपहावे पुण्णसार-विक्रमसाराणं कहा

बायालीसइमी ॥ ४२ ॥

पुण्णोदएण सोक्ख वा, कासइ विक्रमेण वा ।

पुण्ण-विक्रमसाराणं, इह रम्ममुदाहिय ॥ ४२ ॥

आसि खिइपइट्ठियनाम नयर, तत्थ पुण्णजसो नाम नरिंदो अहेसि,  
तस्स य पिया सुहगगी अत्थि । अह तत्थ पुरम्मि वणद्धमुओ



पुनश्चातो नमः बीजो विष्णुमयविजयो मुक्ता विष्णुमयस्यो नमः  
 नासि । ते शोभि अक्षिपयन्मयाककाया तादृशं समपुत्रता । नमः  
 विद्यारिणे — 'तादृशे एष विष्णु कच्छीर जम्बून न होमा, एष  
 जम्बूनपरिष्कृत तस्मात् को पुरिसमाप्तो ।' अस्स कच्छी दायाश्चिरानु  
 बुद्धये न एव, ताव तस्स असो जम्बूनोहमा न । एषो पञ्चजन्यं  
 क्षिप्रतन्त्रवज्रो कम्पमकच्छता नमः सिटी समुत्तमं एव नमः  
 दायास्यो । तेन अपुसरिमा देसंकरं । नाप्येवो परकम्पनिरिदि  
 पो अनन्त्यं वज्रवज्रा कच्छी हुक्का नमः मविस्सा । एता वज्रवज्रा  
 का सत्त्वसन्निधेयं गता, ताव पञ्चमस्स पुण्यसारस्स विविधस्यो नमः  
 समयेव माहंते विही समुत्तमो नमः विविधस्य येन सममये  
 वहुविस्तु कम्पेसु सन्ता । बीजो विष्णुमयस्यो पुनो जम्बूनपरिष्कृत  
 कच्छी हुक्का जीव भाराविजय निबोहं एषो । एष वि  
 सक्कयेविष्णुचिरानु नमः सिटी विजयिने परिष्कृतो ।

नमस्मि ताव पञ्चमो संवत्तो अर एता पुण्यस्यो पञ्चम  
 स्यो संवत्तपञ्चमविजयकच्छीविष्णुस्यो सुदीपो बीजो व पुनो  
 विष्णुमयस्यो दान्तरकच्छीरपञ्चमकच्छीरपञ्चमविष्णु वहुवज्रवज्र  
 मया मुक्ता । एष दयति नमो पञ्चमो बीजो पुण्यस्यो देवो  
 संवत्तो अक्षि बीजो वि अक्षिपयन्स्यो वज्रवज्रपतो पुरिसस्यो  
 पुनो अक्षि । एता एतो पञ्चमा मिसुयो अक्षिपयन्स्यो एता  
 सद्यविजय पुन नमः एतो पञ्चमो सक्कये वज्रवज्र नमः । तेन  
 मविस्सा — " वज्रवज्राजो विष्णु न होमा एतो पञ्च अक्षिपयन्  
 वि कच्छी कच्छी कोलो सज्जो विजयैह " । एष एतेन एता देवो  
 परिकरा अक्षि ।

एतो पुनश्चातो एताभी विजय माधवस्य अर विजयिजो ।  
 मयजम्बूनपरि मविस्सा — " वज्र हुक्का नमः वज्रवज्र,

ओ एम्म पुण्णयमण पत्त अम्हेहिं भोत्तव्य” । अह पत्ते भोयणममण  
 दानेवाए मपोमिओ महलो अतेउररक्कगो पिन्नवेड— “अज्ज  
 शमिहन्मि तुम्हेहिं भोत्तव्य, जओ अज्ज जामाउओ नियनयराओ  
 णे पि पयोयणत्थ समागओ आत्थि । तस्स निमित्त मुओयणाडभेय  
 एउमोयण पमाहिय, ता देव ! तुमए मद्धि मुजतो सो मोहग्ग  
 पत्ता । तो ते सव्वे वीसत्था मत्था त भोयण भुज्जीअ ।

अत्रान्वेहं वीओ विक्कमसारो भोयणत्थ निमतिओ । सव्वे वि  
 सव्वेए पसाहगा भणिया— ‘लहु चेअ भोयण कुणेह’ । तेहिं  
 व्वायरेण भोयण उवट्ठिय कय, भोयणायमरे आमणेसु दिन्नेसु,  
 वट्ठिअ भत्ते समाणे, तथा रायसुयाए अट्टारससरसमन्निओ  
 गमलगथूलमुत्ताहलुवभट्टो हारो निन्निमित्त पि तुट्ठिओ, दीणाणणा य  
 यवी रायसुआ पिउस्स पासम्मि समागम्म भासड मे—‘हारो डण्हि  
 णेत्तउ, नन्नदा भोयण काह’ इअ जपिअ तो नरवई जाव  
 मेक्कम्ममारमुह पलोयइ, ताव उडिअयभोयणकज्जेण तेण सो हारो  
 यमुत्तवतुसव्वो एणेण पगुणो कओ । पच्छा दोवि त भोयण  
 मुह मुत्ता । निवइणा परिभाविअ — ‘सन्चो जणप्पवाउ’ त्ति ।  
 एअ पुण्णसारो पुण्णुवएण ववसाय विणा मुह पत्तो, विक्कम्मसारो अ  
 वारिसपुण्ण त्रिणा वयसाएण मोक्ख पाव्वीअ ॥ उवएसो—

पुण्णविक्कमसजुत्त, सेट्ठिपुत्ताण नायगं ।

सुणित्ता ताण पत्तीए, उज्जमेह तहा सया ॥ ४२ ॥

पुण्ण-विक्कमपक्षावे पुण्णमार-विक्कमसाराण

वायालीसइमी कहा समत्ता ॥ ४२ ॥





कपमाणो हत्ये जुजिऊण 'हे दीणदयाल ! असरणो तव सरणमुवागओ,  
पुणो नेव करिस्स, म मुच मुच त्ति जपतो थिओ । लोणा वि बहुणो  
वय मिलिआ, तेहिं वलाओ मुचाविओ । मरणभयाओ विमुत्तो दुय  
गच्छतो मगो सो सेट्ठिवरो मिलिओ । भयदुय त पंक्खिऊण पुच्छेइ  
— 'मा ! किं अज्ज जाय ? ' । सो कहेइ— " अज्ज मच्चुमुहाओ  
निगओ, जओ मए अज्ज तुम्हाण मुट्ठिअसिरसि टक्कोरे कए अहिग  
ए लद्ध, तओ मए जाणिअ धणज्जणे एसो सोहणुवाउ त्ति निण्णेइत्ता  
रायमुद्धमत्थण मुट्ठिए ममाणे टक्कोरे दिण्णे आसुस्सो मो हुरिं  
कट्ठिऊण म भूमीण पाडित्ता वच्छत्यले चडित्ता जाव पहरिउ लग्गो  
ताज जणेहिं तम्हा उम्भोइओ, तओ भयाओ थरथरतो तुम्हाण  
मिलिओ ' । सेट्ठी वि कहेइ— " वाणिअस्स उवहारो क्या वि हियगरो  
न होज्जा, तम्म दागम्म भेओ भये, पच्चजणमत्थे पुच्छणिज्जो  
माणणीओ य अह होमि, त तु निरत्थय सिया । अओ हे ण्हाविअ !  
वइसम्म दाणामे वि रहस्स होज्जा, जओ वाणिओ क्या वि निरत्थय  
न नेइ त्ति ॥

उपमो—

वणिणो अत्यदाणेण, नाविअस्सेह दुइम ।

नच्चा तच्चवहारमि, सावहाणो मया भये ॥ ४३ ॥

अवियारियकज्जम्मि ण्हाविअस्स तेयालीमहमी कहा

समत्ता ॥ ४३ ॥

# लोहोवरि माहणस्स कदा वठयालीसइमी-

॥ ४४ ॥

नेव कुन्ना म्हात्ते, पावस्स पियरो हि सो ।

दिदंठो म्हात्तो एत्थ, सायपुप्फस्स कइउगो ॥ ४४ ॥

एतां मत्थो वाजपत्तीय मधुरीय चरदसविष्णुया एविष्णु वि  
समागमो । एतस मत्थो क्वमई लीउगई विमवम्मवादिवा ५  
काले । पुनस्तस्य रिमते प्समागमयेन अईव जायंता जायं । ईए  
विष्णुवि- एविष्णु बबहारे सुमा बहेइर वि पसिडी अवि बव  
मम मत्ता मत्तविष्णुकरगो वि बबहारे अस्स केरिंते नयं विम्व  
इज ताउ एत्तीय पुइ-इ विम । पावस्स को पिजा ? । तेव वं विम्व  
वि कदा पत्तुत्तरे मत्तगवं तया तेन पुच्छिअ-हे वि । तुमं कइउ ।  
लीर पुत्त-जइ न जायामि किं सुहावे वस्तीए मत्तव जावरिं  
एव पुच्छिअ अत्थं जायसु । एतो वीरविम्वसि जावरिंवाकू  
यवा पुई मयं । पावस्स को पिजा ? । कज्जवरमई मत्त  
जाइरिएव पुत्त- कइ पत्तुत्तरे मत्तगवो पुम्भं समागमं  
यं स्तेवा मा वमयो किमुत्तरे एत्ते वदी ? इज पित्तमावो विदे मज्जो ।  
जावरिंवरिएव के वि गीवहु-समागमामो कइअ कवत्तवस्स  
निगुठठामि कपपं ठविं । अज च वसईसमीने मत्तुक्क-सव  
ठवत्तं सूरं । तेव गीवहुसमागमामो तदति कइता तदेव  
कइउ । अवरवामो सो मत्तो एत्तीय चरद वाम मत्तगव  
तदेव जावरिंवाकू पुच्छिअ । जावरिंवा कइरिं- मय एव  
कज्जं कइसु, पत्तुत्ता पुन पत्तुत्तरे वसीमि । तेमुत्त- किं ? ।  
मुनिवद्वा साविं- वसईसमीने मुक्कामेवरे विम्व तेन कइ

अममाया यदृष्टं, तत्रा एव कार्त्तुं दूरं विमुच्यते । माहणो  
 कृष्ट-‘प्रायतो माहणो गेहं गरेम विनिज्ज अथत्त कज्ज कद  
 कुलोमि ? कया वि अहं न करिम्मामि’ । गुणीमरेण वुत्त-‘नुहा  
 अहं न करेमे, किंतु तुम जइ एव कज्ज कार्हसि, तया तुम्ह एव  
 रूपं करिम्मामि’ । सो मयगालाह माया लाहणो जाआ, चित्ति  
 च रत्तीए म का जागिहि ? तओ निय माहणत्तण वीमग्गिण  
 सव्वाट धम्मं चउत्तण विगपडारगा जाओ । तयणतर धम्मं  
 बाहिराउअम्म सागनयम्म लगूल कट्टिना दूरं सो माणा अथ-  
 नारिया । पुणो सो मसीवथिअमराजलेण पडाउत्तण वत्ताइ परिहिअ  
 सो मुणियइपासे नमागतुण उत्त-‘तुम्हाण वउत्त मण कय तओ  
 रूपं तयेगु । आयरिण कोहव-एयमि गुत्तटाणे रूपं अत्थि न  
 गिण्हाहि । तया तेण तआ ठाणाआ मयग गहाय । पुणा वि सो  
 पणो पुच्छओ । आयरिण कोहिय-‘अत्थओ तुम्ह पुण्डुत्तरो  
 विण्णो, तुमए किं नाहिगय’ । तेणत्त-‘मम्म न जाणामि’ तया  
 मुणियइणा मज्जपरमट्ठो कहिओ, ज तुम मउयवओ माहणो हाउत्त  
 रूपं गलाहेण एयारिम अकज्ज कय, तेण तय पच्छुत्तर पि ममागय--  
 ‘जआ मव्वपायाण कारगा लोह’ ति तय घोहणट्ठ मण एआरिमी  
 जुत्तो कया । नओ सो माहणो अथगयपरमट्ठो चित्तचमक्किओ  
 मुणियर पणमिउत्त घरमि गओ । उत्त च पियाण ‘मव्वपायाण कारगो  
 लोहो अत्थि’ । तेण पायाण पिआ लोहो गेओ ॥ उवएसो—

‘अकिच्चकारग लोहं, मव्वाणदूठस्स मूलग ।

नाणाइगुणहतार, सव्वया परिवज्जए’ ॥ ४४ ॥

लोहोवरिं माहणस्स चउयालीसडमो कहा समत्ता ॥ ४४ ॥



# सुहासिमाद उवरि मेदिणो कहा पणयात्ममी ॥ ४५ ॥

अनुमादीप्यसागस्य, फर्मसी-इ गुदागमिमा ।

अपुचस्व अदा पुचा, इविषा मण्डिमा तदा ॥ ४५ ॥

जांमि नबरे मिरिक्को बाणसाया मन्दिबरा आमि तस्य बज्ज  
हणिष्ठ इव उदन्वमाया छप्पीमइ माम दुब्बं नि रक्कप्प न्दरंक्क  
सुदय कत्ता गच्छउ मन्वभा मुदिचार्य नि तापं ओ विव ॥  
अरिक्क जं पुत्ताम अभावा । पम्भरधपभाय पि पुत्ता न मित्र ।  
अस्य परागर्जमि बुद्धिबुमरिभावा अगत्ता न बन्दिउ ठस्य कपा  
विच्छिन्नाण कन्धीण किं ? । पणया मन्त्राणि सुग्गुमाओ सुग्ग-  
विनम्म मात्ता वण मोगा बाणज हाउर अ म्मेव्वरि  
आगान्ठ निवमत्तुवा र्जाव-बुद्धव-अप्यार्यं एत्तमु वरिक्कं । तच्च  
सो म्हुं पच्छुमाआ आगम्य अग्गच्छत्तं आर निवमरिण्ण  
दिहुमि इह क्कत्तव विक्कग्ग इत्थम वाक्कं निरत्तं वावइ । अत्तं न  
तमि नपरेमि ज्जा वज्जिबपुत्त मग्गापुत्त-बुग्गवमदिवा वमइ ।  
हुत्तइइवव पराहुत्ता मा निहुत्ता अक्कत्तबुद्धिआ मेत्ताअ ।  
हुत्ताहुत्तमिभाक्कं तमि मग्गत्तुण कम्मं गच्छइ परममि  
अक्कत्तत्तत्ताअत्तं मग्गत्तं परिक्का पि मा अग्गाअक्कत्त कम्मं व  
अवाइपत्तअक्कं न परं कवइ । पणया मग्गा सुत्तादिवात्त वरं वरं  
मग्गव अग्गाअक्कं पुत्ताअं बुक्कं फत्तिअ अग्गाअत्ता निवर्त्तय कोइ-  
रे पिक्कं । पुत्ताअं बुक्कं किं न पच्छमि ? सुग्गिक्कवा वा  
अरिक्कमि तदा वीववत्तवर्गं व छमिस्सइ अग्गा तुं पुत्ताअं कम्मं  
निवा कोवि अक्कं कम्मं । अग्गत्तं वाक्कमिक्कत्तवरे गच्छादि, वा

दयालू सड मज्झण्डं जाव मब्बोसिं निरग्गल णाण देड' । तथा सो  
 मज्जापरिणोडो घराओ निगनूण सेट्ठिस्म गेह पड चलिओ ।  
 उमाहस्म धिरहाओ मद मद चलतो विलवेण तत्थ गओ, तथा सोट्ठिस्स  
 किंकरमहत्तमो हट्ठ पिहेड । सो मज्जेण तत्थ ठिओ, किं पि न मग्गेड ।  
 हट्ठाओ निस्सरतो सो त पामिउण पुच्छेड— ' किं आगमणपआंयण ' ?  
 पुव्व तु सो अमग्गणमहावेण लज्जणसीलेण य न वोण्डेड, न य पत्थेड ।  
 जया दुव्व पुट्ठ, तथा कहेड — ' खुदियकुडुवट्ठ वण्णाडमग्गणाय  
 आगओ मि । तेणुत्त क्हमि आगतव्व, अहुणा समओ न, इअ  
 कहित्ता सो निगओ । सो वणिअपुत्तो अज्ज कुडुवस्म निव्वाहो क्ह  
 होज्ज ति चित्तमाणो दुक्खभरभारेण नेत्ताहिंतो असूणि मुचतो तत्थ  
 विअ थिओ । एत्थतरे मा सेट्ठिस्स भज्जा नियमद्विरवायायणे  
 उपविट्ठा आमि । तीण सो न्यतो दिट्ठो, अणुकपाण सो नियममीवे  
 आइओ, रोयणकारण च पुट्ठ । पुणो पुणो पुच्छाण सो नियदुदिया-  
 मत्थामह्वर कहेड । मा तस्म भज्जा-पुत्तजुगलस्म एयारिमि अत्थ  
 सुणिउण अगयकरुणा त उद्वरिउ निणय काही । पुव्व तु त  
 किंकरमहत्तम वोह्माविउण उवालम ढाउण बहुवणधण्णाड तस्म  
 दाजिय, अन्न च तस्म भज्जा-पुत्तजुगलजोग्गुवगरणाड दिण्णाड ।  
 पुणो पि कहिय — ' मम गेह पि अप्पणो समाग गणित्ता विण्ण  
 मकोण्ण इच्छियत्थुगहणत्थ अवस्स आगमणीअ । सो वणिअपुत्तो  
 सकय लच्छीव लच्छीमेट्ठिणीए पाण पणामिअ मव्वयत्थूड च घेत्तूण  
 गिह गओ । पडक्खमाणा तस्म भज्जा मव्वगिहोक्खरमज्जुय  
 आगच्छत पिय द्दट्ठण साणदा जाया । क्ह कत्थ वा परिम लद्ध ? ।  
 सो सव्ववुत्तत कहेड । त सोच्चा मा वोण्डेड— तीण सेट्ठिणीए कहाण  
 सुहपरपरा घट्टियसिद्धी य अत्थु, जीए साप्पिय-पुत्ताणमम्हाणमुद्धारो  
 कओ ' । एव सुहभावणाए सुहामीस देड, एव च सड पत्थेड । एईए





तया उज्जयतगिरिभिः आगतूण तुम्ह पाए नमसिहामो, नेमिनाह च  
 सित्यर अविस्सामु' ति नियम गिण्हित्था । सुहभावणाए धम्मपराए  
 कल्लणुक्कमेण सच्चवईए पुत्तो जाओ । अविगादेवीपसायलद्धत्तेणेण  
 देवीदिण्णु ति नाम ठविय । मायापियराण ऊसगे कीलमाणो  
 चित्ताणददायगो सो वालो कमेण दुवारिसो जाओ । सच्चवई नियमत्तार  
 बोहेइ- अविगादेवीकिवाए पुत्तो लद्धो, तेण उज्जयतगिरिभि गतूण  
 तीए नेवीए तह य सिरिनेमिजिणीसरस्स चरणपउमेसु पुत्त सपाडेमो ॥  
 ताण किवाए पुत्तो चिराउसो नीरोगी य होज्जा । एव सोच्चा  
 मज्जापेरिओ सो बंभदिण्णो माहणो सप्पियपुत्तो सुहमुहुत्ते  
 विसालानयरीए निगगतूण उज्जयतगिरि पइ पट्टिओ । मगो  
 गच्छमाणाण ताण अवसउणाइ सजायाइ, जहा काग खर-सिगालाईण  
 असुहा सहा सुणिज्जति, वाऊ असोहणो वाइ, पियाइ दाहिणक्की  
 फुरइ, चलणा अग्गओ गतु न ऊसहेइरे, तह वि 'ज भावि त  
 अन्नहा न होइ' ति चित्तमाणा सिरिनेमिणाह अविगादेवि च हियए  
 शायता अग्गओ वधति । कमेण गाम-नयराइ, सोहणाइ यणखडाइ,  
 विविहपक्खिगणसेवियाइ सरोवराइ, अणेगविह-रमणिज्जतरुवर-  
 बुन्महिए गिरिणो य अइक्कमता, तत्थ य दसणीयठाणाइ पासता  
 एगया गिम्ह्याले मज्झण्हम्मए अहवीए समागया । बुहुक्खा-पिवासाए  
 वाहेआ मच्चवई नियपिय कहेइ—' हे पिय ! अहुणा इ अईव  
 तिसिया कठगयप्पाणा जीविउ असक्का, पुत्तो वि तारिसो धिय,  
 तओ कत्थ वि जल लद्धूण देहि, अन्नहा अह जलहीणमच्छीव  
 मरिस्सामि ' एव सुणिउण बंभदिण्णो सपुत्त पिय तरुस्स छायाए  
 ठविऊण ' काए विसाए जलमत्थि ' त गाउ उच्चयरुक्ख चाडिऊण  
 चउरो विसाओ निरिक्खइ । तथा दाहणीदमाए दूर सारस-दस-वग-  
 चक्कया गाइविविहपक्खिगणविहूसिअ एग महत्त जलामय पेक्खइ ।  
 तओ सिग्घयर ओयरिउण पिय कहेइ—' इओ कोसपमिअभूमीए

सद्यः कति तथा तुम एव सत्त्वविद्या विदुः, दुष्करीयेनमेव  
 तत्त्व गत्वा तुम्हें जहाँ आनीज तुम पावेस्सामि ति कहिअन मे  
 फणीगत यज्ञो । सा सुखवद् पुत्र पासे छविछ भगुनिशोभे  
 दुखिना बहुसाधनोपगता विविहसकण्वसज्जा यथापरिस्समाजो न  
 सीयसुवाञ्छा निदयुवताया । तथा सा सिद्धार्थिणी दायो नीरपुरिछ  
 कथ्यजो ॥ अद्यदिता गच्छइ ति कहइ । सखिअ कथिअ न  
 सुमिअस्स जहाँ विचारो — न जायामि किं ज्यो एवस्स  
 दुमुमिअस्स फलं मविस्सइ ? किं भगुनो पुत्रस्स न विजोवा  
 होही ? । हे मय्यं ! ईश्वरचक्र ! असुरजसद्वय ! अत्रयवद् !  
 किमसु पदु ! मम सीढ रक्खेअथ, मम भगुना पुत्रेन न त्वं  
 विजोवो मा क्वाचि कुम्सु इवाहं इत्यर्पणी सा दूतजो आगच्छे  
 कथे आताअहं वरं पसइ चित्ते — वेसविमूढाए यद्यो को ति  
 रावपुरिसो जन्नि । सो न पुरिसो पगावनि ति तं पासिछा छेए  
 सखीअं समाजजो । इवमहं तं वदहूअ कमपण्णसिजो व ज्जेइ —  
 हे सुंदरि ! तु न्य सि ? तुजो आगया ? किं पगावित्थि एव  
 विजा ? अत्र चित्ताहं क्वालो जाजो, जेव मम क्वाओ रम्भरमर्वाजो  
 छेति किं तु तुम्हारिसी पगा वि नत्ति जेव तुम गहिअन महीछेएव  
 छविस्सामि । एव सोचा जासुअथ सा कहइ — हे दुखज !  
 एवं पि तुम न जावेसि जं सई इत्थी निषमत्तार विजा यथेसवि  
 देवकुमारहंसिअज्जं पि यत्त न चित्ते । मम यत्ता अकटवज्जत्तं  
 गजो, तद्यो इजो सिअं अजसस्तु, पावैति पि छीअयां न  
 क्कोमि ति वय्ती पिआसिजा सीअमगमवाजो सा तुच्छिअ । से  
 रावपुरिसो पगावत्थं व वदहूअ चित्ते — 'सिअपिआआदिअ एता  
 पायवई नइस्सइ, तयो जहाँ क्कोमि वई चित्तिअन आसज्जं क्वादिता  
 नमदिइत्थिअज्जं पावेइ । जण्णरेव सा तुज्जे यत्ता तं ज्जेइ — 'हृ-

पुरिसि । जलपाणेणावि ममोवरिं केवल अवयारु चिय कओ, एत्तो मे  
मरणमेव वर । सो वणइ—‘तु म न जाणेसि, तेण एव वणसि, अह  
तु इओ वारसजोयणदूरत्थियाए चदावईनयरीए पडू खत्तियवरो  
संचुदलदलणपक्कलो चंदसेणो नाम नरिंदो म्हि । जइ तुम मम  
वयण मण्णेसि, तथा अन्नरणीओ वि मम इव तुम सेविस्सते, अण्णह वला  
वि त हरिस्स’ । सा वणइ—‘जइत्थो तुम पयापालो नत्थि, किं तु  
पयाभक्खओ असि, जेण एरिस अजुत्त वणसि एव वयतस्स तुन्ह जीहा  
कइ सहस्सखट्ठिआ न जाया?, वियारदिट्ठीए पासतो तव नयणाइ  
किं न पडियाइ?, किल तुम न रायस्स पुत्तो, किंतु कुसीलपुरिसस्स  
पुत्तो’ इच्चाइ वयतिं त कुद्धो सो नरिंदो उप्पाडिऊण आसे ठावित्ता  
नियतयर पडू सिग्घयर निग्गओ । तीए पुत्तो निराहारो रूयतो तत्थ  
वट्ठइ । सव्वत्थ पुण्ण चिय जणाण रक्खगमत्थि । वालगस्स  
पुण्णप्पहावेण तयणतर तेण मग्गेण को वि नवलक्खदव्वसामित्तणेण  
नवलक्खो नाम वणज्झारो सपरिवारो गच्छतो आसि । अरण्णे  
वालगस्स रोयण सोच्चा सद्धानुसारेण सो तत्थ गओ । तरुस्स मूले  
वालग दट्ठूण तेण चित्तिअ—‘एत्थ को वि मणूसो न दीसइ, तेण  
नज्जइ को वि निदुत्तुरो पुरिसो एण वालग चड्ढत्ता कत्थ वि गओ  
होज्जा’ । तओ वालग घेत्तूण अपुत्ताए लच्छी- नामाए नियपियाए  
सो दिण्णो । अवञ्चरहिया मा वि रूववत मणोहर वालग गहिऊण  
पुत्तामिव पालेइ । तत्थ पालिज्जतो सो वालगो ताण चिय मायापियरे  
मन्नेइ । मायापियरेहिं तस्स वालगस्स ‘सुगराय’त्ति नाम ठाविय ।  
कमेण वणझारवालगेहिं सह विज्जा-कलाओ अन्भस्सतो, अणेगगाम-  
नयरेसु भमतो, विविहच्छेराइ पासतो, मायापिण्णो चित्ताइ पमोयतो  
सुहसुहेण घट्ठतो काल गमेइ ।  
इओ अ सच्चवईए भत्ता जलाणयणत्थ गओ सो दक्खिणदिसाए  
दूर गतूण तत्थ एग सुदर सरोवर विविहवरत्तुवुदमडिय पासइ,



सहस्रकिरणो महस्सकिरणेहिं भुवणतलं पेयासेइ । पासायस्स  
 विविहसादाओ मज्झगयाय रंगभूमी वि तीण चित्त न आगरिसति ।  
 मव मसाणेमिव आमाइ । कह एयाओ सुहदरक्खियपासायाओ  
 नियमिस्सामि, अहवा अल चित्ताए, 'विविहपयारणपयारेहिं कामध  
 र्माण वचिउण इत्तो, निग्गमण चिय सेय' इअ विआरतीए पढसो  
 इए गओ । तया सो कामधो चंदसेणो राया विविहालकारालकरिओ  
 तय आगळा । सा त दट्टण जलहीणा मच्छीव सीलभगमएण  
 वसिआ, कपमाणा वि वज्झओ धीग्य धरिऊण सीलरक्खणत्थं  
 वएइ-हे नरिंद ! तुम्हाण पासे एग पत्थण करोमि, जओ परदारा  
 सेग जयमि को वि सुहिओ न जाओ, जह अग्गि सप्पफेरिसो  
 अप्पवद्दाइ होइ, तह सईनारीण फासेण वि तव कल्लाण न होज्जा,  
 अपुण्णेच्छो मरण पाविहिसि, कया वि मेरू वि चलेज्जा, समुद्धो  
 मज्जाय मुचज्जा, तह वि ह मरणते सील न खडेमि त्ति निण्णओ मे  
 जाणियव्वो' । कामगहगसिओ चंदसेणो राया बोलेइ-हे पिण ! तुमं  
 कह तह वएसु, तह वि ह तुम ण मुचेमि, जइ तु मे वयण मन्नेसि  
 तह सोहण, अण्णहा पज्जते वल्लक्कारेणावि तव सील खडिस्स' । एव  
 सोच्चा सच्चवईए चित्तिअ एसो कामधो अवस्स बला वि सील  
 विणासिहिइ, तओ 'असुइस्स कालहरण' ति नाएण अहुणा जुत्तीए  
 सील रक्खेमि त्ति वियारित्ता तीए कहिय-नरवर ! जइ तुम्हाण  
 अइत्र निब्बधो अत्थि, तया तुम्ह वयणं एगधरिसते काहिस्स, जओ  
 अहुणा मम बम्हवयपालणे नियमो अत्थि, तत्थ वयपालणे  
 धरिसपज्जत दीण-दुद्धिय भिक्खुग-अणाद्दार्इण दाण देय, जिणचेइअपूआ  
 पढाउणाइसुहकिष्साइ कायव्वाइ, एव धम्मपरा वरिस जाव चिट्ठिस्स,  
 पच्छा तुमं ज कहेसु, तहा ह काहिस्स । ताव पज्जत तुमए मम  
 समीचे न आगतव्व, दीणार्इण द्राणाय सर्व्वसामग्गी तुमए पूरियव्वा ।

जहं विष मन्त्रार्थं ज्ञान भिन्नद्वयार्थं वरुणं दासीवि । एतन्  
 चरितं न कोपि पारं पश्येत् । त्रि वचनं सत्त्वार्थितो ह्य निवेद्य  
 चरित्रो सो हीन वचन संवत्स मनेह । तस्मा चरितेभ्यो नरीरो ही  
 वचनानुसारेण नरा दान्त्याकं करोह, सा सुवचनार्थं वचनूते वचन  
 ज्ञान वे के वि नवरत्ना वेसंहराओ वा ज्ञाना विनयानो नान्य  
 चरणा सत्तामित्रो कन्दकारिभ्यो वीणा दुद्रिवा ज्ञाना वा स्वाभ्यर्थो  
 ज्ञान भिन्नं ददेह । भिन्नमनुस्य समानार्थं पुच्छेह । समान-वार्थं  
 भिन्न-ज्ञानत्वाद्भिरिद्वयार्थं कुप्येह रक्षीह नमुचकमन्त्रार्थं दान्त्य  
 एवं ज्ञानं समाभ्यर्थीय हीन विचक्षा ह्येव गच्छति । कस्य  
 दान्त्यासेषु एतां दिश्यो ज्ञानसिद्धो संज्ञाओ । चरितमिच्छति त  
 दान्त्याप्य विद्या निचरिष्यपद्यति कन्दमन्त्रार्थं ज्ञं हीनं  
 एविकर्तुं ह्य विद्यारथ मन्त्रार्थार्थे कस्य दान्त्याप्य भिन्न  
 त्रि ज्ञेया पुच्छत वचनार्थो ज्ञानमन्त्रेण सुशान्तिद्वयार्थेण न  
 ज्ञानमन्त्रिभ्यो मन्त्रं मन्त्रार्थेह भिन्नमन्त्रं एतां दान्त्यं करोह, ज्ञानि  
 निवचन एतो समपि त्रि भिन्नेह । भिन्नमन्त्रार्थं वेदिकता विद्ये  
 ज्ञानार्थो संज्ञाओ । क्व पितृ भिन्नमन्त्रार्थं त्रि भिन्नमन्त्रो  
 सा रक्तमन्त्रार्थं विद्येसपद्यतिज्ञानमन्त्रं वत्स समीपे करोह । त्वं  
 रक्तमन्त्रार्थो वत्स कर्तुं नरूपं तं पुच्छेह— कस्य मन्त्रार्थो  
 ज्ञानार्थो ? त्वं ज्ञानं ? कियत् एव ज्ञानं ? । सा दान्त्यो वत्स  
 भिन्नं सन्धं ज्ञानमन्त्रं करोह । एतो सा रक्तमन्त्रार्थो सत्त्वार्थं  
 पुराणा ज्ञान सन्धं वत्स पुच्छत वत्सरोह । सा सुविद्य मन्त्रार्थे— ज्ञान  
 विद्य मं यते त्रि । एतां सा तं रक्तमन्त्रार्थं ज्ञानमन्त्रेण वत्समन्त्र  
 वत्स इत्येव धोवर्णं माह्वस्य वत्समन्त्रं करोति— हे माह्व !  
 तुम्ह विद्या सत्त्वार्थं मन्त्रार्थं दान्तिरं दान्तिरं वत्समन्त्र  
 कस्य मन्त्रार्थीय ज्ञानार्थं भिन्नमन्त्रं, न ज्ञानार्थो हीन । एते वि ज्ञानं

विवापउत्ति सुणिउण सत्यचित्तो पियानामसयणेण पत्ताणंदो समाणो  
भेदण गदिउण तत्थ सियालए गच्छिउण माणद भोयण किञ्चा  
स्मित्तण पइक्खइ ।

इओ चंत्सेणनरिंदो वि सधरईए सह कामभोगे अहिलसतो कट्टेण  
वरिस जायतो तद्धिघसे रत्तीए पढमे जामे सुत्तरवेमभूसाजुओ  
विविहभोगसामगिसहिओ तीए पासे सुमागओ । सा उ कामघ नरिंद  
दूट्ठण 'कइ सील गक्खोमि' ति सीलभगमण्ण भीया अहोमुहा  
विआ । चंत्सेणो राया निय अस्सि पल्लो ठवित्ता उयविमित्ताण क्कडे  
हे पिण । अज्ज तुम्ह मज्जाया मपुण्णा, अहुणा मए सह रायारि-  
इकामभोगे जहिच्छ मुजाहि । सा उ धीरिम धरित्ता मायाए वएड-हे  
महाराय । तुम्हाण वयणाहीणाह । तुम्हे जह कहिस्सह, तहाधिय अह  
अहिमि । अज्ज रत्तीए सुह स्वाएमो पिवेमो मज्जपाणपि कुणेमो ।  
'वत्तिश्राण मज्ज अईव पिय अत्थि' तओ सुत्तर मुर आणावेह, तेण  
सव्वरत्ति आणवेण नएमो । एव सोचा 'एमा सव्वहा समोवरि  
रत्तचित्ता वट्टइ' ति हरिसियचित्तो सो मूढप्पा महुर मज्ज  
ममात्रेड । 'विणासयाले त्रिवरीयवुद्धी सजाएड' तओ मो तीए रूपे  
आसत्तो अप्पणो विणास अपेच्छतो मज्ज अईव पिवेइ, तीए वि  
पाणाय देइ, सा गहित्ता 'ह पच्छा पिविस्स' ति नेहनाडय करती  
पुणो पुणो त चिय पाउइ । एव सो अईवमहुपाणमत्तो ल ल ल लयतो  
कपमाणसरीरो इओ तओ पढतो मो मुच्छ पत्तो, नट्टसण्णो य पल्लो  
पढिओ । मय इव त वट्टण साहम धरित्ता, रण्णो अस्मि हत्ये  
घेत्तूण, चडिगेव रुद्धसख्ख धरिउण निवस्स गलकदले पहार तह देड,  
जह कवध सीम च एगए भिण्ण जाय । अप्पकाल कपमाण कवध  
पि निच्छेड जाय । एय मो चट्सेणनरिंदो परत्तरमणवट्ठाए अपुण्णेच्छो  
मरण पप्प दुग्गइ गओ ।





निरिक्खेइ, ऊसास-नीमामरहिय सीयल सरौर दट्ठण, 'नूण एमो किं मओ ? इअ वियारती सा गन्भागारे चउत्तु दिसासु दिट्ठि कुण्ड, तयां कोणगे एग भयकर विसहर पासेड, भत्तुणो य सरौर पि विसमइय पासित्ता निण्णेइ- 'एण मप्पेण मम पिययमो अवस्स हामेओ, तेण मओ एसो', एव निअय किअ पइमरणदुक्खसह-सहिया पइसिर नियके ठविऊण हियय कुट्ठीती, अमूणि मुचती विलवेइ- हे इहव ! अयडे किं कय ? , सामिरहिया कथ जामि ? , किल मे हियय पज्जेण घडिय चिय, जेण पियमरणेण महस्सहा न भिन्न, अहुणा मम जांविण किं ? , एव बहुसो विलाव कुणती 'नूण रायह्वापावकम्म अज्ज मे फलिय' ति सा सुमरियनिवह्वापावकम्मा मयवेविरगत्ता तथ ठाठ अमत्ता 'सामिसवस्स ज होज्जा त होउ' निण्णेइत्ता, मा तम्म देहस्स अगिसकार काउ अममत्था, जओ पमाए रायपुरिसा म गहिस्सति त्ति भयभता मिवालयओ मिग्घ निगगनूण अगओ वणमगे चलिया ।

इओ अ पमाण सजाए वि चट्ठेणनरिंटे रायपासायाओ याहिर अनिगाए समाणे पासायरक्खगपुरिसा त्रिविह वियक्क कुणति अम्ह महाराया अज्ज एयमि पामाए परदाराए मह रत्तीण वमिओ, परयाण वीसासो कया वि न कायवो, जओ- 'वीसासो नेव कायवो, थासु रायकुलेसु अ' । अओ पासाओवरिं गतूण निरिक्खियव्व । तओ ते सव्वे पासायस्स उयरियलभूमिभागे गया, तया पट्टगस्स हिट्ठमि भिन्न भिन्न रुहिरविलित्त मिर कवव च पासेइरे, 'केण दुट्ठेण इम नरिंदह्वामहापावकम्म कय' ? ति चितमाणा ते पट्टिगारहिय पट्टिग वायायणे य उव्वद्ध पट्टिग दट्ठण निण्णयति- 'महाराएण हरिऊण आणीया एमा न्धवई मीलमगमण मज्जपाणमत्त अम्हाण सामि हत्तूण वायायणचट्ठपट्टिगाप्रयोगेण इओ पलाइआ' तओ ते निगगच्छित्ता

गणप्यायपुरिसं सत्यं निवेष्टति । तथा सत्यं भवं श्रीराम-  
समावृत्य सोमस्यो संजायते । सुखार्थममाकर्तुं यत्तु निष्ठु  
सुखं वैसिजा विरक्तं कुम्भो वि सुखी न जायते । आशुति-  
नरकस्या वैदस्य आवासकर्मं कुमति । सर्वसौख्यसुरहेयस्य तस्य  
विष्णु । अथ अश्वत्थारकस्तं कुरुष्वक विद्यां इदं कुरुष्व  
परमविष्णु संजायते ।

इति अ सा सुखार्थं रावणविषीयेणवत्वायारकस्तुतिरा रक्षी-  
परमवामे विष्णुस्यो विद्याया अथा गच्छती संवारे क  
अजायती यत्पर-अजागच्छत्यविष्णुं तद्विष्णुं कुरुते निष्ठा । अ  
रक्षीमि आस्तमयवत्वा यत्तु वि विष्णुस्तं गच्छे अर्थं परविष्णु कुरु-  
व्याई हरिश्च अस्मत्त मञ्जे वरुणो विष्णु वि मन्मथान् हरिश्च  
मन्मथान् सममया कुम्भं यत्तु चोरे पासेत् । अथातो कुरु विष्णुं  
सि विचारती सा मन्मथं यत्तु मच्छेत् । तथा हीन सत्वात् मन्मथारक-  
केई सुमिना । ततो ते हीन सत्वात् वसेतरे । तथा सुखरक्यात्  
सत्यस्तुतिरा सुखार्थं कुरुष्व वि मन्मथं वरुणं वि विष्णुं कुम्भं वि विष्णुं कुम्भं  
हीन अस्तुत्याई आशुसत्याई विष्णुश्च सुच्छेत्- कुम्भं कुम्भो अजायते ।  
कुरु रक्षीय वरुण । मन्मथं सा वरुण- इ संवारे । अई सुमिना-  
अनुमन्मथं अजाया निष्ठाया कुरु वि मन्मथं मन्मथं कुरुष्व  
विष्णुस्तं गच्छे अरक्याई कुरुष्व विष्णुस्तं, मन्मथं मन्मथं  
अरुषीयाई एतत् न विष्णु अ मन्मथं । मन्मथं मन्मथं  
मन्मथं मन्मथं अई विष्णुस्तं । वरुणं एतत् कुम्भं मन्मथं  
एतत् चोप्य विचारति- एता अरुषीय सौमिपुत्रविष्णु मन्मथं  
अजाया कुरुष्वी अमि तयो कुरु वि एतं विष्णुस्तं, तथा  
अरुषीय कुरुष्वी विष्णुस्तं कुरुष्वी- अरुषीय मन्मथं  
विष्णुस्तं विचारतं विष्णुस्तं कुरुष्वी वे चोरा

अग्गओ गहणभएण उप्पहे निग्गया । मा सञ्चवई तेहिं चोरेहिं सह  
चलमाणी चित्तेइ- एगदुक्खाओ मुक्का समाणी अन्नमि कट्ठे पडिआ ।  
धिद्धी देव्व, जेणाह एव दुक्खपरपरा दइव्वेण पाविआ । म गहिऊण  
बोरा किं करिस्सति, 'ज वा त वा होउ' पाणंते वि सीलं  
क्खणिज्जमेव । कमेण सूरुदए जाए वि ते थेणा मज्झण्ह जाव  
चलता कमेण चंपानयरीए समीव पत्ता । सा सच्चवई अईव सता  
हुहापिआसापीलिआ पय पि चलिउ असमत्था जाया । तया ते चोरा  
प्पामि सरोवरे गया, तत्थ ते सब्बे मुह हत्थं पाए अ पक्कालिउण  
सतसमा ममाणा नयरमि पविट्ठा, चउप्पहे कडाविअस्स हट्ठे  
हुहावणयणत्थ भोज्जाइ पक्कनाइ घेत्तूण सव्वजणियधम्मसालाए गया ।  
तत्थ तीण सञ्चवईए मह चोरेहिं भुत्त । उवमतखुहापिवासा ते  
प्रियारति- 'एईए न किंपि पओयण सिज्झिस्सइ, तओ कत्थ वि ण्ण  
यिक्खेऊण दव्व गहियव्व' । तओ तेसिं दुवे चोरा आवणपहमि गया,  
हारण चोरा त रक्खति । सञ्चवई तत्थ थिआ वियारेइ- 'एण म किं  
'करिस्सति?', एआण हगियागारणे नज्जइ अवस्स एए कमि  
दुक्कप्पसकट्ठे म स्विधिस्सति' तओ आण्हति दुहरिंछोलिं ददूण 'पुव्वं  
बद्धकम्माण एस विआगो' त्ति । जओ उत्त-

अवस्म चिय भोत्तव्वं, कय कम्म सुहासुह ।

नाभुत्त झिज्जए कम्म, कप्पकोडिसएसु वि ॥

तओ नायजिणधम्मसरूखाए मए समयपत्ता असुह कम्म समयए  
सहियव्व ति चित्त थिरीकरेइ । जे ठो थेणा चउप्पहे गया, ते  
आगंतूण कहिति- 'एईए चंपानयरीए' नायनिउणो विक्कमो नाम  
'राया रज्ज कुण्ड' । नयरीए मज्झमागे एग महोविसालभुवण  
रायमविरमिव अम्हेहिं दिट्ठ । पासायस्स अग्गओ एगा ढका यिज्जेइ,

इष्टममीने रात्रमहितीय मन्वाककारसुविधा एरिस्त्रुतरेत्त  
 पादपत्रं पन्ना पन्ना इत्युक्ती बहुह । टीप-वासिनि मन्वा पुं कन त्रं  
 मुषणं? का तुम किमहुं जगामो इष्ट उचिषा?। स एष्ट-ए  
 मयरीप रण्य वि समाप्तिविष्णु एवम मन्वामुषणस्त मन्वि  
 क्तिमन्वा मन्म पन्ना गणिता अह् । तयसो वसाओ यम मन्वि  
 वृत्ति । आरिष्टाणं तारिम्प्य एव पनेसो वि म तिष्ठ तं कनम  
 केटीमन्वा मन्वि नै त विवद पन्म मन्वि नलो । अत्र व ये के  
 कनत्तं कनत्तं कन्मिषा पन्म पन्मदु इष्टा, नौ इमे महाकन वद  
 पनेमेह । एवम महाकनप सतो मन्वाए तवरीप सुविम्वह । ए  
 इष्टाए मदेम जगति वि जायति- को वि कनत्तं एव कन्मि  
 क्तिमन्वावेष्टाए मुषणे पन्मिहो इष्ट कन्मिषा वेष्टा पुष्प-के पुष्पे  
 किमन्वा एव समापवा । पने सौचवा जगति कन्मि - कन्मि  
 जगते, एव कनपतकनपद् सुवर्णि विवदत्तं कन समापत्त । स  
 सुविष एव वेष्टा कन्मि- कन्मि एव मन्वाई विषा इष्ट सुविम्वि  
 कन कन्मिषा विविष्टाणि । तयो वव विम्वि समापवा । एव सुव  
 दे सम्म निम्नवि विववा केम्वि विम्वेव सुववद् वेष्टा वेष्टामुष  
 जातवा । सा क्तिमन्वा सुववद् कनत्तमन्वाविम्वि वन्दुव कोट  
 सुवमन्विम्वे जगते वाक्य विविष्टा । भोवम्वि वद कन्मि सम्म  
 समापत्त विववा विविष्टा व निजमन्म गथा । सुववद् कनत्तमुषकने  
 मन्वावेष्टाए कनमे मन्वा सा क्तिमन्वावेष्टा इ वेष्टावेष्टाए  
 विव्विषि विववा मुषणस्त उवविषकमुमिषाओ उवेह ।

वेष्टामुषणपदा कनपविम्विषावेष्टा, कन्मिषावेष्टावेष्टा  
 वि सुववद् वेष्टाविम्वि विवववेष्टा, कन्मि कन्मि कन्मि वेष्टा  
 विववाविम्वि कनमन्मिषाओ कन्मि कनपविम्वि कनमन्मिषाओ कन्मि  
 कन्मिषावेष्टाए कनमे मन्वा सा क्तिमन्वावेष्टा इ वेष्टावेष्टाए

सज्जपाणहरणपधराओ, काओ मज्जपाणकरावणेण परधचणपराओ  
सन्ति । ताओ पासित्ता कह अह थीण अलकारभूअ सील एत्थ वेसाघरमि  
रक्खित्सु ? । सीलरक्खणत्थ पचपरमिट्ठिपय निच्च ध्यायती जहमत्ति  
एव कुणती नामरे नेहत्था ।

कामलया अक्का वि अच्चवमुयरूव त जाणित्ता मव्वासु वेसामु त  
अनुच्चपए ठवित्ता ' जो लक्ख दव्व दाही मो एयाए सह कामभोगे  
जुजिस्सइ ' एए निच्चय अकासी । तओ लक्खदव्वदायगत्स अभावेण  
साघरमि थिआ वि निम्मल सील पालेइ । एव वम्माराहणपराए  
दुवालम मवच्छरा मुहेण वडक्कता ।

इओ य सो नवलक्खो वणज्झारो सुगरायसहिओ अणंग  
गामनयराईसु कयविककय कुणतो भयियव्वयाजोगेण चंपानयरीए  
समागओ । नयरीए बाहिर उज्जाणभूमीए पडवराइ ठविउण सपरिवारो  
एत्थ नियसिओ ममाणो नयरीमज्जे नियकयाणग विक्केइ, विएसजोगा  
व गिण्हेइ । मायरपियरभत्तो सो सच्चवड्ढेए पुत्तो सुगराओ बावार-  
करणनिउणो पिउणो सहेज्ज करेइ । एयाया मो पच्चूमकालमि  
मित्तपरिवरिओ नयरीसोहादसणत्थ नयरिगओ । तत्थ विविहच्छेगाइ  
पासतो, हट्ठसेणीओ अइक्कममाणो दडव्वजोगेण कामलयावेसाए  
भव्व भुवण तयगाओ य ढक्क पासेइ । ढक्काण ममीवमि थिअ  
कामलयावेस पामित्ता पुच्छइ- ' कस्स इम भुवण, किमट्ठ इय  
ढक्का एत्थ ठविया ? , का तुम अमि ? । एए सोच्चा वेसा वाइ-  
एईए चंपानयरीए रायमाणणीआ कामलया नाम येमा अहय । वार-  
गणासयमामेणी, अम्हेकर इम भवण, जो को पि मिरिमतो लक्खे  
दव्व देइ, मो पुरिसो इम ढक्क वाइत्ताण भुवणतरे पधिसित्ता मणव-  
लियरूवसदरीए सह कामभोगाइ भुजेज्जा । एए मोच्चा पुव्ववद्धक-



एव सा सखवई दुवालसपरिमते ढक्कारव सोशा चितेइ-  
बल को वि सिरिमतो नरो कामलयाघरमि पविट्टो, जइ मज्झ पासे  
आगच्छिदिइ, तथा ह कह सील रक्खिस्स !, अओ अप्पघाओ वरं,  
एव विचारतीए तीए सुहसूयग वामनयण फुरिय, अणेण चिण्हेण  
एयमि वेमागेहमि किं सुह होज्जा ?, मम भत्ता मओ, पुत्तस्स वि  
सगमो न सजाओ, ता किं जीविण त्ति शायमाणा सा पट्ठाहिट्ठमि  
अहोमुहा उवयिट्ठ अत्थि ।

सो सुगगओ तीए निवासम्भतरमि गच्छमाणो निम्मलव-  
मगच्छाडयपट्ठा तस्स य समीचे अणुवमरूव पसतचित्त अहोदिट्ठि  
सखवइ पासेइ, पासित्ता विआरेइ- एसा चत्तसिंकारा पडयिहीणा  
सोगममा अहोदिट्ठि किं पि शायती मम कुलवहू इव आभासेइ,  
पुव्वदिट्ठारगणार्हितो विवरीअसरूया इमा अत्थि । मा वि पायरव-  
महेण 'एत्थ को आगओ' इअ उट्ठमुह किच्चा त सुगराय तेयसिं  
सुदरगुवग जोव्वणपारभठिअ पासित्ता पुलगिअद्वियया महुसररेण त  
पट्ठामि उयवेट्ठु कहेइ । सो वि तत्थ उवयिट्ठो ममाणो तीए मुह  
पासतो उवसतकामभोगाहिलासो सजाओ । जणणीनेहपवलत्तणेण तस्स  
तीए अवरिं माइव्व सिणेहो पाउव्वमुओ । सो विगप्पेइ- 'जीए आसाए  
अहय एत्थ आगओ मा आसा नट्ठा, लक्खदव्व पि मज्झ नट्ठ, इय  
न वेसा, जओ सुकुलुप्पमा कुलवहुव्व दीसइ, इमीए वेसावित्तित्तणं  
न सिया' । तओ सो बहुमाणपुरस्सर सीलभगमएण कपमाणसरारि त  
मन्चवइ हत्थेण घेत्तूण पुरओ ठवेइ । तथा सा तस्स हत्थफासणेण  
'किं अय मे पुत्तो' त्ति जायापरिओसा थन्न क्षरती नेहपुव्व त  
निरिक्खेइ । एव दो वि परुप्पर पासमाणा जायक्खोहा खण मउणेण  
ठिआ । मा सखवई धीरत्तण अवलवित्ता पुच्छइ- हे उत्तमपुरिस !  
— — — अत्थि ? मायाविच्चा किं नाम ? जम्मणठाण किं ? एयं



शुभपथ सो तब जावयसजेछो मितपरिबुद्धो निवासाछे समानैव  
 निवसाइपिचरे कहेइ—हे यावापिछो ! मज्झ वगं कल्पवृक्ष समये ।  
 ते कहिसि हे विबुध ! किं पुनः पञ्चोपमं ? जपेन को वाताछे कल्पये,  
 बहुदम्यवपकरन जाहुना न समुद्गमं । तब सो सुमराओ—जबवापि  
 दामने हकक बाइछा बेसा सुबकसामेच्छा मम बहुइ ति दुर्लभं तब  
 समस्त निवेछा । तब हककबाविसहस्रमेव तुम्हार्थ विजसो बरीइ  
 होई । तब मापपिठना ते पोरिसि वच्छ । बेछासोव इह जमे के  
 क दुई न पत्ता । करछो क हुमाई न गवा । सत्त्वसमेष्ट बेछासो  
 सम्यक्सुजार्थ सुखधरण तजो अवसर्ग बाइछो, चिते न छैर  
 अतिकस्ता न कल्पना । तब सो सुमराओ— कइ न दमिइ, तब  
 हे जपवाव कइ ति बीजवेइ । एवं सोच्यो बाहरविकट पुण्ये  
 जन्माय जाटाछे पुचो किचन तब विद्या छै, कहियो ? एवं  
 चिन्तिय हप्ताहकक सखियेह कस्त रिज । तब सो त दम्य-कर्म  
 पञ्चमं सिनं कसमछवावसामेच्छा तजो छीप कर्म दाम्य कर्म  
 बाइछाव बेछापरेमि चरिहो । हककसवजसरेण पञ्चमं वि जाविय  
 क वि वचनछा कर्म कसमछवावसामेच्छा चरिहो । हककवावेछा  
 जाहुनु जमेव-बाहिरवसोववाओ मारीओ । हककसुखसुखसं पयसि  
 कजो चमरेहि बीकंछि, कजो विवेकमे हजेलि कजो तंहुपुण्य  
 दिसि कजो सम्य-क-कमाई अजिसि कजो हककवाविसहस्र  
 कजो हककवाविसहस्र मोहिसि एवं तजो बेछाओ तकि पिपिह  
 सुचीई रेवेइरे । सो सुमराओ कसमछाहुतकाओ कसुमरीओ केवलछे  
 कसु मम अहुच्छो पुण्यइ— वचो कडियल्ला सुंरौ अन्ति न वा ।  
 तब सो कसमछा कसमछा वासावाविसहस्रिच सुकवाई वधिई एवं  
 दमि छीर समीचमि तेहं जानिसेइ । स वसई न सुमराव सुकवाई  
 निवासवाव दसिइ । तजो सो सुमराओ छीर

स त मुनिता मजायद्विययाघाया मुच्छ्रिया, पत्तवेयणा नीसाम  
 कुची र्यती हे दृढव । वडरीव ममोवरिं किं, कुविओसि ?, ज  
 एरिसिए वोचु पि अणुइयाए अवस्थाए अह दित्ता सि । पुत्तसगमाओ ।  
 ज मरेण हुते ता वरे, जओ एरिस वुत्तत्त कहिउ समय न लहती ।  
 पियपुत्त । पुत्तसगमुक्कठियाए मज्झ तुम अज्ज मिलिओ सि । मए  
 ज्ज जाव ज दुक्ख पत्त त कहिउ पि न पारेमि, तहवि पियजणपुरओ  
 ज्ज कहिज्जइ । त चिय दुहसमणोमह, अओ अप्पवुत्तत्त कहेमि ।  
 त्या सो मुगराओ सच्चवड्ढ वयण सुणमाणो विचारैइ—मए एगदिवसेण  
 ममभोगाय लक्खदव्व वड्ढअ, सुह तु न पत्त । इमा इत्थी मम पइ पुत्तव-  
 च्छलभाष वसेइ, पियपुत्त त्ति वणइ, एत्थ किं पि रहस्स होज्जा, पुव्व  
 एए यत्ता सयणीआ, एव विआरित्ता सो बोलेइ—‘अह एत्थ किमंइ  
 आगओ सि, त तुम्हं जाणेइ, म पइ तुम्हं पुत्त । पुत्त । त्ति कहैइ,  
 ततो मए सह तुम्हाण संवधो होउ, वा न होज्जा, तह वि अज्ज  
 आरम्भ तुम जणाणिमिव जाणिम्स, तओ निय अप्पकह कहिऊण मे  
 असत्यचित्त पसमेइ ’ तओ सा सच्चवड्ढ अप्पणो सत्थित्तेण वुत्तत्त  
 कहइ—“ विसाला नयरी, वभदिण्णो माहणवरो, मच्चवड्ढ भज्जा,  
 अविगादेधीपसायलद्धत्तणेण पुत्तो देवी-दिण्णो । उज्जयतगिरिन्मि  
 जत्तवगमण, अरण्णे सच्चवड्ढ पियासिआ, भत्ता जलाणयणत्थ दूर  
 गओ । तथा चंदसेणनिघेण सच्चवड्ढ अवहरिया, पियसगमाय निघ  
 दव्वा मज्झरस्तीए निगया, सिवालए सप्पटसेण पियमरण, रण्णे  
 गच्छती चारेहि गहिया, तेहि वेसाघरमि विष्कीआ, दुवालसवरिस  
 जात्र मील पालती एत्थ थिआ सा ह सच्चवड्ढ तुम्हं जणणी ?” हे  
 पुत्त ! अज्ज तुम माऊए सह कामभोगाय लक्खदव्वदणेण एत्थ  
 समानओ सि । कह कम्मेण नहिआ वेमारूवाइ मुह तुज्झ वसेमि ?,  
 पुत्तो पुव्व मरती तथा घर, ज एरिसाए आजयाए न पडती ।



त सुणिता सजायदिययावाया मुच्छिया, पत्तचेयणा नीसास  
 दुपती स्यती हे दडव्य । वडरीय ममोवरिं किं, कुविओसि ? , ज  
 एरिसीए घोचु पि अणुडयाए अवत्थाए अह दिन्ता सि । पुत्तसगमाओ ।  
 पुव्व मरण द्रुत ता वरं, जओ एरिसि वुत्तत्त कहिउ समय न लहती ।  
 हे पियपुत्त । पुत्तमगमुक्कठियाए मज्झ तुम अज्ज मिलिओ सि । मए  
 बज्ज जाव ज दुक्ख पत्त त कहिउ पि न पारेमि, तहवि पियजणपुरओ  
 सव्व कहिब्बज्ज । त चिय दुहसमणोसह, अओ अप्पवुत्तत्त कहेमि ।  
 तया नो सुगराओ सच्चवडए वयण सुणमाणो वियारेइ-मए एगदिवसेण  
 कामभोगाय लक्खदव्व वइअ, मुह तु न पत्त । इमा इत्थी मम पड पुत्तव-  
 च्छहभाव वसेइ, पियपुत्त त्ति वएइ, एत्थ किं पि रहस्स होज्जा, पुव्व  
 एए यत्ता सयणीआ, एव विआरित्ता सो बोहेइ-‘अह एत्थ किमदु  
 आगओ सि, त तुम्हे जाणेह, म पइ तुम्हे पुत्त । पुत्त । त्ति कहेह,  
 वत्तो मए सह तुम्हाण सवधो होउ, वा न होज्जा, तह वि अज्ज  
 आरम्भ तुम जणणिमिव जाणिस्स, तओ निय अप्पकह कहिउण मे  
 असत्यचित्त पसमेह ’ तओ सा सच्चवड अप्पणो सखित्तेण वुत्तत्त  
 कहेइ-“ विसाला नयरी, वभदिण्णो माहणवरो, सच्चवड भज्जा,  
 अविगादेवीपमायलद्धत्तणेण पुत्तो देवी-दिण्णो । उज्जयतगिरिम्मि  
 जत्तत्थगमण, अरण्णे सच्चवड पिवासिआ, भत्ता जलाणयणत्थ दूर  
 गओ । तया चदसेणनिघेण सच्चवड अवहरिया, पियसगमाय निघ  
 हत्ता मज्झरत्तीए निगया, सिघालए सप्पटमेण पियमरण, रण्णे  
 गच्छती चोरेहिं गहिया, तेहिं वेसाघरमि विक्कीआ, दुवालसघरिस  
 जाव मील पालती एत्थ थिआ सा ह सच्चवड तुम्ह जणणी ” । हे  
 पुत्त । अज्ज तुम माऊण मह कामभोगाय लक्खदव्वदाणेण एत्थ  
 ममागओ सि । कह कम्मेण नब्बिआ घेसारूवा ह मुह तुज्ज दमेमि ?,  
 पत्तो पुव्व मरती तया घर, ज एरिसाए आवयाए न पडती ।

सुखवाई कहीनं वच सोवा म्याहए सुई दसिअं जलछो ले  
 बरणीपीठंमि पडिअो दिवनावाएव सुचिअो न । सुखवाई देखीअं  
 (सुगएअं) पुअं पडुअिअ कलपअेन विअेह, पतअण्यं कयेंतं ई क्यो  
 दे सिअपुअ । बलुसएअं अजानंसा अगेत बहअणपेरिअा एअं अकअणिअं  
 वि कय्याई कयेंति, एअं अजानस एअ विअसिअं । अओ-

अजानं कहु कहुई कोहईअो वि सुअवाअाओ ।

अेवाअरिअ अगेत, दिवाअहिअं न जाअंति ॥

अओ न तुअ बओओ पुअकअकअाअं अओ विअसु । वि  
 अहअ सअविअो मअहि, एअं कहिअा तस अंसुई एअसई ।  
 लओ सो देखीअिअो अगेअितअेओ अअरसंअरसअं अहिअे  
 अजनि अोर-दे सअर ! मअ विअसु न तुअं मअअमअं पविअ  
 मए अरिसं बोरअअअं कअ तुअओअर अमअं कहुअ तुमए अ  
 कअअेअणं अमिअअ मए कअ मअ सरीअो पाअिअो अओ को वि  
 अअंमि न सिअ, कइ पडिअो अइ म्याहए सुई दसिअि ? अइ  
 अीअिअं वि अइअा म्याहए कए कअमिअ कअअंअं अअंओ कहीअ  
 बह सुअरिअं कअहिअ अहअ विअरे पविअअ । अअओ  
 निअाअरिअाओ भूअीअ पडिअो अअंओ विअअेअो अअंओ  
 मअं पुओ ।

अ सुखवाई विअनिअिअाओ मअअणं पुअं बहअं अअंअअेअाअ  
 अअअेअुअअाअअअा विअिअ-अि अीअिअ अम ई, पुअसअ विअम  
 पडिअअ मअं सेअं । मअ निअिअेअ विअिअ अअाअो सअाअओ  
 अ विअी । । अरअेअअरिअो मअ अओ, अअपुअाअं वि मअ निअिअं  
 मअं अअं । अइ वि मअपुअेअ अह विअाअ पडिअे एअं निअअं  
 अिअा पुअमअं अअंओ अमि अरिअअ विअेअ-दे एअ !

लहसा किं कय ? , भत्तार-पुत्तविहीणा अणाहा एगागिणी कह  
 तीविस्स ? । हे पुत्त ! म चइत्ता तुम गओ, अह पि तुमए सह  
 आगच्छिस्सामि, हे पुत्त ! तुज्झ पालगमाया पियराण किं उत्तर  
 दासिस्स, ते तह य एसा दुट्ठा कामलया वेसा वि एव सकप्पिस्सति-  
 'एए सीलरक्खणत्थ एसो सुगराओ हओ, अन्नं वि जे लोणा  
 जाणिस्सति ते वि एय चित्तिस्सति, सव्वे वि म निदिस्सति' , सव्व  
 मे नइ, 'अओ मरणमेव वर' ति विलाव कुणती सव्व रत्ति  
 ऋण नेसी ।

फहाए जाए एग दासि बोलाविऊण सव्ववुत्तत कहइ । सा वि  
 कामलयाए अगगओ निजेइ । तथा सा कामलया आसुरुट्ठा तत्थ  
 सिग्घ आगतूण रुहिरखराडियगत्त भूमीए पडिय निप्पाण सुगराय  
 पेक्खइ । तओ सा अईव कुट्ठा बणइ - हे दुट्ठे ! रहे । तुमए एसो  
 पुनमालो वालो किं हओ ? , हा ! हा ! नाय नाय, नियसीलपालणत्थ  
 नेइयाए तए एसो हाणिओ । अह पि तुम एयस्म वालास्स चियाए  
 ज्जे जीधत्ति पक्खिस्स । इमस्स मायापियराण किं पच्चुत्तर  
 दाहिस्म ति कहित्ता सच्चवइ हत्थेण हेट्ठमि ओयरणाय पमज्ज  
 ल्हेइ । तथा सा सच्चवई 'सच्चवाइणो कुओ भय' ति निठभया  
 एइ-तुम्हे अवियारिय ज त वा किं वएज्जाह ? , एमो मय चिअ  
 नेयच्छुरिय उयरे पक्खित्ता मओ, सच्च तु एय जाणियन्व - एमो  
 वेदिणो मम अप्पकेरो पुत्तो जाणियन्वो, नियमाज्ज अवहिं  
 मन्नाणओ कयकुदिट्ठिप्रियारपात्रपायन्ति उत्तग्गहणत्थ तेण अप्पइ=चा  
 कया, अह पि एयस्स चियाए नियदेह पक्खित्ता मरिस्सामि । मम  
 णणे तुमए निप्फलो पयामो न कायन्वो । अहुया इमस्स देह  
 इट्ठमि ठवेह, एयस्स ग पालनमायापियराण वुत्तत जाणावेह,  
 यराओ य दाहिर चिय कारवेह ।

अथ सा कृष्णकथा देवविजयकथेन विदुः उवाच, तस्य च यथा-  
 विवराय समाना कथावेत् । पुत्रमरणसमाचारं श्रोत्वा कस्यैव मन्त्र-  
 बचसायैव यत्नश्च न कुर्वन्तं तस्य आगता पुत्रं जल्पन्ति उचिता न  
 विदुर्भवन्ति, सुखवर्धनं कथितं निर्वर्तयेत् देवविजयपुत्रस्तु न कुतश्च सुखि-  
 नः विवर्तन्ति-न मयि न जल्पन्ता न होतुः, न वेद्यान्ते आमयन्ते मा-  
 मिकन्तं यत्नं न एवं पुत्रवत्पुत्रकम्पान्ते चित् विवाद्यं जल्पन्ति वि-  
 दुस्तथापि पुत्रस्तु वेद्यापरामर्शे विविधकथा संशया, नन्वपुत्रकम्प-  
 वास्तु पञ्चसत्तयं । शुभो वि अस्तु विपश्यन् सः सुखवर्धनं पश्यं  
 साध्या तं वास्तुसह-इ पुत्रि ! जन्माय शुभं न पुत्रो गतो जल्पन्ति  
 समानं दुःखं, मरणमि या चित्तं कुप्यन्ति, पुत्रं विव द्रुपं वि पश्यिस्तामे ।  
 स वि मरयिष्यत्यनिवरा कथं वि वचनं न मुनेः । न कथयन्त-  
 वन्तः कुर्वन्ति विजया पञ्च जगत्तु देवविजयस्तु वन्तु जगत्तु विदुः  
 वचसां वदन्ति निजया तान् पञ्चकथा सुखवर्धनं समग्रवचन-  
 वचसां पश्यन्ति वचनो निजयो । न कुर्वन्ति विजयिवास्तु नन्वपु-  
 त्रवत्पुत्रकम्पान्ते विदुस्तु चित् जल्पन्ति । तस्य यत्नं न  
 इत्येव विदुस्तु उवाच अथि न कथाविदुः । तवा स सुखवर्धनं  
 यत्नमि पश्यं ज्ञानं वाचैः तवा न मरयिष्यत्यनिवरापुत्रिस्तु तं  
 इत्येव विदुस्तु विदुर्भवन्ति । कथं सुखिस्तु अथि यथाइत्येव विदुस्तु  
 कथितं । जल्पन्ति वि देवविजयस्तु देहं समग्रतां वदितं समो, स  
 सुखवर्धनं वि वदितं पुत्रं पश्यन्ता जल्पन्तुस्तथा सद्यः जल्पन्ति  
 पुत्रिस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु  
 अनुत्त न कथं न विदुस्तु, जायतस्तु न जल्पन्तिपुत्रवत्पुत्रा तं जल्पो  
 वि न इत्यु । तवा जल्पन्ते तस्य पश्यन्ते वाचं वाचं समग्रं जल्पन्ते  
 वि जल्पन्तमिति विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु विदुस्तु  
 विदुस्तु विदुस्तु । जल्पन्ति वि वाचाजल्पन्तं इत्यु तवा वाचिस्तु वि-  
 विदुस्तु गवा विदुस्तु वि वदन्ता । तवा तस्य समग्र

महानइच्च सजाओ । तेण जलपवाहेण सा मण्यई घदिउ लगा,  
 भासकम्मस्स दीहत्तणेण तीए हत्थे एग महाकट्ट समागय, मरणभएण  
 तसिया सा सहसा त कट्ट विलगिअ तरिउ लगा, कमेण नईए  
 ज्ञमि गया । तत्थ बहुसो निमज्जणुम्मज्जणजणियवाहाण मुच्छिया  
 ॥ नईवेणेण वीसजोयणभूमिं जाव दूर नीआ ।

तया तत्थ नईए तढमि के वि आहीरा नियनियपसुगण चराविता  
 जलपूरस्स दसणत्थ तीरे समागया । तेहिं कट्ट विलगिअ तरती  
 सच्चवई दिट्ठा । सजायकरूणेहिं तेहिं थाहिर सा निक्कासिआ, त  
 मुच्छियं सप्पाण ददूण विविहपओगाओ पीयजलनिककासणेण अग्गि  
 वावणेण य सा सुद्धिं पाविआ । पत्तचेयणा सा नियपरिओ अणेग-  
 विहुवयारकरपरे चत्तारि पुरिसे पामित्ता सहसा उट्ठिआ सई वोत्तुं  
 असत्ता हिययमि चित्तेड- 'हे दइच्च' । ममुवरिं अच्चतो निदुडुरो  
 किं सजाओ ?, जओ ह पुत्तचियाए पडिआ वि मदभग्गा अग्गिणा  
 वि न दद्धा, जलपूरेणावि न सगहीआ, कह अणाहा निराहारा असरणा  
 अह जीयिस्स ति, मम भत्ता वि मओ, पुत्तो वि मरण पत्तो, अहुणा  
 क मरण उवलभेमि' । तओ किंचि लद्धसामत्था सा सच्चवई ते  
 आहीरलोगे एव वएइ- हे पुरिससिद्धा के तुम्हे, किं जलाओ निक्का-  
 सिआ ?, पियपुत्तमरणदुहसंतवियाए मम जीविणं अल ?, दुहसागरे  
 पडिआ जीविउ न इच्छामि त्ति कहित्ता रोविउ लगा । ताण एगो बुद्धो  
 आहीरो त कहेइ- हे पुत्ति ! इओ कोसंतरेण रयणसचया नयरी  
 अत्थि, तत्थ जहत्थनामो पयावालो नाम नरिंदो रज्जे कूणेइ । तीए  
 सनिहिन्मि सारगगामे निवासिणो जाईए आहीरा अम्हे, पसुगण  
 चारणत्थ एत्थ नईतडे समागएहिं अम्हेहिं जलपूरे कट्टविलग्गा तरती  
 तुम दिट्ठा, बाहिर च निक्कासिआ । हे पुत्ति ! कहं तु नईए पडिआ,  
 का तुम, किं नाम, विणा सकोण्ण नियवुत्तात्त कहैहि- । तओ





गद्दीरित्थीओ पासति । त पासित्ता सा सञ्चवई एग पासत्य आहीरिं  
 च्छइ-‘ हे सहि ! अय अहिमुहं आगच्छमाणो दिव्वसरीरो तेयसी  
 जवतो को पुरिसो ’ ? । सा वएइ - ‘ अय रयणसचयानयरीए सामी  
 जवच्छलो दाणी धम्मिद्धो पयावालो नाम राया अत्थि ’, एव  
 णालाय कृणतीण तासिं आहीरीण समीव आस कीलावतो समागओ ।  
 रिदस्स सिग्घयरामणेण भयभताओ ताओ आहीरीओ इओ तओ  
 सिंउं पउत्ताओ, तथा तासिं परुप्परसघरिसेण कासिं सिरेहितो  
 दिघ्वा दुद्धघ्वा य पडिया भग्गा य । तथा सञ्चवईए मत्थयत्थो  
 दहिघहो वि पडिओ फुडिओ य । अन्ने आहीरीओ निय-निय-माइ-  
 पिउ-पियाण भएण रुयमाणीओ चिट्ठति, सा सञ्चवई दहिघडे भग्गे वि  
 हसेइ । तथा नरिंदो ताओ रुयतीओ, त सञ्चवइ हसतिं पेक्खित्ता  
 जायविम्हओ चित्तेइ-निय निय-दव्वविणासाओ ‘ थीण रोयण वल ’  
 ति नाएण रोयण उइय, परंतु एसा रुयवई इत्थी नियदव्वहाणीए वि  
 हसेइ, एत्थ किं पि कारण सभवेज्जा, अन्न च वेसेण एमा आहीरी वि  
 आगिईए रुवेण य उच्चकुलुप्पन्ना इव लक्खिज्जइ इइ वियारतो  
 पयावालनरिंदो त सञ्चवइ पुच्छइ हे-‘ धम्मवाहिणि ! किं तुव पियरस्स  
 माऊए य नाम ?, कहिं गामे तुम्ह उप्पत्ती ?, कस्स तुमं पुत्तवहू  
 असि ?, तह दव्वहाणीए वि तुम किं हससि !, लज्ज विहाय भाउ-  
 तुहस्स मम अगगओ निवेएज्जाहि । सञ्चवई नरिंदस्स अईव  
 पडिघधवसेण तस्स पुरओ नियसच्च अप्पकहं कहिऊण हे नरचर ।  
 वहूइ दुक्कावाइ सोढाइ, एत्थ दहिघडविणासरूध-अप्पहाणीए कइ  
 दुक्ख सिया ‘ कम्मुणा ज जं किज्जइ त त हरिसेण सहियच्च किं  
 विसाएण ’ ति कहित्ता मोगभयजुत्ता सजाया । पयावालनरिंदो सोयाराण  
 पि दुक्खज्जणग तीण वुत्तत सोच्चा सति सपायणत्थ कहैइ-‘ वाहिणि !  
 तु पसम्मारिहा सि, ज तुमा विविहविवत्तिसहणेगावि पाणत्ते वि सील  
 पालियं, त किल जणणी वि धण्णा अत्थि, ज एवविह-पुत्तिरयण



सुसपयाओ सोक्त्तपरपराओ ह्यति, इह लोए वि वल्लिअत्यसिद्धी,  
नेम्मला बुद्धी, सन्वत्य मिद्धी य होइ । वम्ममि नाण सार, जेण  
केच्चाकिच्च-भक्त्वाभक्त्वाहेयाहेय-हियाहियसम्ब नज्जइ । नाणमि  
सज्जमा सारो, जओ नाणेण विवेग-विणयप्पमुहसुह-गुणा पाउभति ।  
हेहि सुसज्जमो होइ, तेण अप्पा भवससुह तरिऊण अन्वावाह सासय  
अक्खयं निव्वाणपय पावेइ

एवं सोच्चा जायसन्वविरट्ठपरिणामा सा सच्चवई रण्णो अणुण्ण  
गह्तिता पयावालनरिंदकयमहसवपुण्वय सुव्ययापवत्तिणीए पासंमि  
दिसव गिण्हित्था । तह य नरिंदप्पमुहेहिं जइसत्ति सम्मत्तसहियाणुण्वयाइ  
गहीयाइ । सा सच्चवई सुव्ययागणिणीए सह विहरमाणी पुण्वबद्ध-  
सक्किलट्ठकम्मस्सयट्ठ विविहतवाइ कुणती, महत्तरीए पासे सुत्ताइ  
पढती साहुणीगणवेयावच्चकरणपरा सज्झायज्झाणलीणा निम्मल  
सज्जम पालेइ । एव सवेगरगरगिआ सत्तरसविहसज्जमगुणपालणि-  
क्करया सा सच्चवई माहुणी पज्जते अणसण करित्ता समाहीए  
कालधम्ममुवागया, ठउलोगे य समुवन्ना, कमेण मोक्ख पाविस्सइ ॥  
उवएसो—

सच्चवईकह सोच्चा, भववेरमाकारिणि ।

सीलधम्मे मइं कुज्जा, दुक्कयस्म विणासगे ॥ ४६ ॥

सीलधम्माम्मि छायालीसइमी सच्चवईकहा समत्ता ॥ ४६ ॥

भावधम्मे इलाईपुत्तस्स कहा सियालीसइमी ॥ ४७ ॥

भावधम्मप्पहावेण, इलाईतणओ पुरा ।

पाविओ केउल नाणं, साहु-दंसण-मेत्तओ ॥ ४७ ॥

अथि इह भारहवासे इलावद्धणं नाम नयर । तत्थ सप्पहावाए  
अत्तेहीए मठिर घटइ । एगया नत्थ वसतेणे इहभजुगळेण सा

इकारणी पुत्रभवेय ओद्यपयपुत्र्यं विजयिष्य । को वि देरी  
 देवभोगाओ वहुअन तीर गभ्ये समुचनो । मयपुरिसपुत्र्य ते  
 इकमपावनेय यभ्यो कहुओ । अविचसमय वसा देवपुत्र्यछरीत  
 शरण वत्तबीज । इकारेवीण ओद्यपयं विज । शरणस  
 नाम इकारपुत्र्यति कय । कमेय तो शरणो देवपुत्र्य  
 कयाकयनेय व वहुमानो उवकअयपत्न्याविज पुत्र्ययं सपत्ते । कय  
 सरकसययमि मिचहुओ इकारपुत्र्यो कयामपुत्र्यगओ, कय  
 कयकयकयमि मयपत्ती पया कय-कयकय-कय-कय कय-कय  
 पत्ती पुत्र्यग । तीर कयमिचिपत्तयेय अविचसपत्ति वमपत्ति  
 संजया । कय वि विई न वय । मितेई पुत्र्य- वरं ।  
 विम्वेव उवकअयसविज इरपयोगविजं तय सयकं ।  
 मयिचमनेय कय वि कयामी कय पुत्र्यकयपुत्र्यमि, ता कि कयमी,  
 कयपुत्र्य मे मयकयकय । तेई मयिच- कयमिचपुत्र्यमेय व  
 मयु तीरकं वि मयकयकं कयकयपुत्र्यमो वि वारस विम्वकयपत्तये  
 पयमयमयो इकय । मयविजय कयकं हुकयं होमय कय  
 सयमयकयवययविज विम्वेय हुकयकयकय । विचयु वययो  
 कयामो । इकारपुत्र्येय मयिच कय वि वय समं कयमि कि  
 हु मय बीविचं वयय कयय कयमि पुत्र्यकयमयिच । विचमिचो  
 पय पुत्र्यो कयकयमि । इकारपुत्र्य कयमि मयिच-  
 पुत्र्यमयसमं वैमि मय वयिच । तेई मयिच- कयकयमिचि वय  
 'कयमि, कयर कय वयय कय, ता कयतेई सय मयय कय व  
 विचयु । तयो वयिचकय वि मय-वि-सयय कयतेई, कयमिचय  
 कयकयगयवयं तय मयमि पयिचो । कयपययो विचयुमय  
 कयमिचय । पत्ते वि तेई कय विचययो विचयमयसंको विचयव  
 वय । विचयययविमिचं वयं कयमिचं पययो । कय विचो  
 कयकयो । समयय वेचकय । मिचो पुत्र्य

नागरया य सपत्ता । इलाइपुत्तेण नाणाविहविज्जाणेहिं आवाज्जयाणि  
 योगाण चित्ताणि । नरिदे य अदिंते न देइ लोगो । राया पुण  
 दारियाए वद्धरागो तम्स चइणत्थ त भणइ- लख ! पढण करेसु ।  
 सो य पाउआओ परिहित्ता असिखेइयहत्यो वसगास्स अइकट्ठोवरिं  
 विविहकीलाहिं कीलइ । जइ कह वि चुकइ, तथा धरणीए पडिओ  
 सयसदो होइ । लोएण साहुक्कारो कओ । नरिदे अदिंते न जणो  
 देइ । राइणा भणिय- ' सम्म न दिट्ठ, पुणो करेसु ' । तेण दुइयचार  
 पि कय । एव तइयचार पि कय । पुणो वि रण्णा मरणत्थ अलज्जेण  
 भणिय - ' चउत्थ घार कुणसु, जेण अवरिइं करेमि ' । लोगो  
 नरिदाओ पिच्छियच्चाओ य विरत्तचित्तो नियत्तो । वससिहरट्ठिओ  
 इलाइपुत्तो चित्तिउ पवत्तो- ' धिरत्थु कामभोगाण, जेण एस राया  
 र्णए रगोवजीवियाए निमित्त च मम मरणमभिलमइ । कह च  
 एयाए परितुट्ठी भविस्सइ ? , जस्स महतेणावि अतेउरीघग्गेण तत्ती ण  
 जाया । ता धिरत्थु मे जम्मस्स । ज ण लज्जिय गुरुणो, न चित्तिर्य  
 लहुयत्तण, न निरुविय जणाणि-जणय-दुक्ख, परिचत्ता वधुमित्त-  
 नागरया, नावलोइअ ससारभय सच्चहा निरकुसगइदेण च्च  
 उम्मगगामिणा मए । इम सयलजणनिंदणिज्जलखयकुलमणुसरत्तेण  
 मलिणीकओ कुदधवलो तायवसो । ता सपय कत्थ वच्चामि ? , किं  
 करेमि ? , कस्स कहेमि ? , कह सुज्झिसामि त्ति ? एवविहचिंताउरेण  
 तेण समीवत्ये कस्मि वि ईसरघरामि देवगणासरिसरूवाहिं बहूहिं  
 पूइज्जते मुणिणो वट्ठूण चित्तिइ- ' जे- महियमयणा जिणिंदमग  
 समहीणा ते वण्णा कयपुण्णा । अइ तु एत्तियकाल वचिओ म्हि, ज  
 न सेविओ जिणधम्मो । इणिं पि एयाण आणाए समणधम्म करेमि  
 त्ति एय वेरगमगपडियस्स समारोवियपसत्थभावस्स सुक्कज्झाणाण  
 मज्जे गयस्स विसुज्झमाणलेसस्स समासाइयस्सवगसेदिणो समुप्पन्न  
 केवल मपत्ता, देवया, भणिय च अणाए ' पडिबत्तं दत्तवलिं,



भोयनरिंदस्स अयतोन्नयरीए देवसम्मो विण्हुसम्मो अ नाम  
 माहणा दुण्णि भायरा विउसवरा छहसणविउणो वेयवेयगपारगया  
 सति । लच्छी-सरस्सईण एगत्थठाणाभावाओ ते विउसा अईव निद्धणा  
 सति । ताण भज्जाओ वि पडभत्तिपरा सुसीलाओ अत्थि । एगया  
 भोयणाभावेण दुहिया ते भज्जाओ निय-नियप्पिय कहेइरे—  
 ‘चससहिकलासु तुम्हे चोरियकल जाणेह न वा, अओ चोरिक्क  
 कज्ज पि कओ धण आणएह,’ एव सोच्चा धणपत्तीए अन्नुवाय  
 अलहमाणा किंपि चित्तिऊण भोयनरिंदमटिरे रत्तीए चोरिय काठ  
 गया । रायपासाए पच्छण्ण पवोसिआ । तत्थ सुवण्ण-रयय माणि  
 माणिकक-पवालरासि पासित्ता ‘एयाण हरणमईव पाव’ति सत्थे  
 कहिय, एव वियार किच्चा धन्नागारेसु गच्चा सालीण दुपोट्टलिग  
 वधिऊण मत्थएसु ठविऊण जया निगया, तया भोयनरिंदो  
 महारेइसयणेसु सुत्तो अत्थि । पट्टगसमीधमि एगो मक्कडो हत्थे  
 असि घेत्तूण सावहाणो नरिंद रक्खइ । ताहे पट्टगुवरिं एगो मप्पो  
 मद मद सचरमाणो निगओ । तस्स छाया नरिंदोवरिं पडिया, त  
 ददूण पवगमो सप्पबुद्धीए नरिंद पहरिउ लग्गो । तया ते विउसा  
 तारिस असजमस ददूण सिग्घयर मक्कड निगहिउं लग्गा ।  
 मक्कडो वि असि घेत्तूण तेहिं सह जोदु पवत्तो । एव हलबोले जाम्प  
 जमिओ नरिंदो माहणे पुच्छइ—‘के तुम्हे ?, कत्तो आगमण ?’ । ते  
 सच्च कहिति—अम्हे चोरिक्कत्थ एत्थ समागया, तुण्ण गच्छता  
 अम्हे ण्ण कथिं सप्पभमेण असिणा तुमम्मि पहरमाण पासिऊण  
 रक्खणत्थ अणेण सहजुद्ध किञ्चा तुम्हे रक्खिआ । निवेण पुच्छिय—  
 ‘किं अयहरिय’ । तेहिं वुत्त सालीण पोट्टलगा भरिया, जओ—  
 ‘सुवण्णाइदब्बहरण महापाव’ अत्थि, तओ भोयणत्थ सालिधण्ण  
 अयहरिय । तओ नरिंदो चित्तेइ—‘सुरुक्खो मक्कडो अत्थि,





जयतो कमेण इराणदेसे समागओ, तत्थ काओ महानयराओ वाहिर  
सिविर ठविअ सय उब्जाणमज्जे भव्वपासाए ठिओ । एगया  
भासारूढो सो गिरिसिहरमालालाकिय-विविहपणससोह निरिक्खतो  
अमाओ गच्छमाणो नियरूवनिज्जअ-देवगण महरिसीण पि  
चित्तक्खोहकारिणि एग सुदर्दि पासेइ । सा अक्खम्भयरूपा सुदरी त  
ससिणेहनयणकट्टक्खेहिं ताडित्ता कामविसयविसमुच्छिद्य करेइ । सो  
वि कामगाहगासिओ त चिय पासेमाणो सबलो वि विमूढमणो अगगओ  
गुतु असमत्थो तत्थच्चिय निच्चलो ठिओ । सा बाला विमोहित्ता  
नियट्ठणे गया । समीचवट्ठिणा गुरूणा सब्बा एव तस्स चेट्ठा  
निरिक्खिआ । सो वि नरिंदो गुरु ददट्ठण जायक्खोहो पुणरवि  
सावहाणाचित्तो सजाओ । एगया नियपवलसेणामज्जे उवविट्ठो सो  
सिकदरो मति-सेणावइपमुहसुहडवराण अगगओ नियपरक्कमवत्त  
कहेइ, तन्मिय काले तस्स गुरु तत्थ समागतूण सहासमक्ख त  
अवहेलेइ - ' ज विजइक्करसियाण पुरिसाण इत्थी ख्वावलोगण पि  
भयकर, जाओ दसणमेत्ताओ वीरिय हणेइरे, हलाहलमिव कज्ज  
कुणति । वीरपुरिसाण नरिंदाण च नरगदुवारसमा सा सत्येसु  
गणिआ, तासिं सुदेर पि विसमविसाओ वि महाभयजणग ' एवं  
अवहिलित्ता निग्रावासे गओ ।

सो महानरिंदो बालत्तणाओ गुरुस्स उवगार सुमरतो सहासमक्ख  
एव निदिओ गरिहिओ वि मत्तणेण अहोदिट्ठिं काउण सच्च सहेइ ।  
किंतु मणमि अच्चतदूमिओ विविहयिगप्पे कुणतो कियतकाल तत्थेव  
ठाउण सह विसज्जित्ता नियपासाए आगओ । तत्थ वि खण  
दिट्ठसुदरीए सुदरयं, खण अप्पणो निब्बलय, खण गुरूणो ददिम  
वियारंतो एव निण्णय करेइ - ' कया वि तीए रमणीए मुह न  
पासेमि । तह वि अणाइकालमोहभासेण

इति शब्दं च कथञ्चनयेन निष्कस्यस्त तस्मै चित्ते सन्निवृत्तौ लब्धौ  
 आगच्छेत् । तथा सो तं चित्तं समशील्यं प्राप्त्यतो निन्दारिव निन्द्यमानो  
 सत्सु निष्कस्य सरवणं आरोहिता दीपं सुपरीय वर्यं च समुवाच सा ।  
 स च सिद्धं पाप्मिता कथञ्चनारिसा चित्ता तं सत्कथ्येत् सम्प्रये  
 त् । तथा सो समरिक्तगुणवणो ह्य 'आहं किं करोमि', निन्दारिभाष्ये  
 कथञ्चनविवासाय निम्नाम्ने ह्यर्थाय समशील्यं कथञ्चनं, मया समं  
 नहु, कथा च किं मे बहस्ति । कथञ्चि एवाय एव निन्दारिक्त  
 कथञ्चनोत्तं पश्येत् । तथा स सुपरी इति चामप्येव तस्मै मयोप्यर्थं  
 कथञ्चन करो- किं पश्यसि गच्छेत् ? कस्य कथामये दुर्मये  
 निन्दारेत् ? सत्त्वं यम करोत्, ई तु निन्दारिक्त-सत्-कथ-सत्त्वं  
 मारिक्त्यं च चित्तं करोत् समत्वा । मय कथामो सो वर्यं चो ।  
 कथञ्च तस्मै गच्छ निवासेमि । आहं वीर्यमोहिनी इत्यवगतिरुत्तं  
 कथञ्च मया वर्येण मयापुरिस्तं च निन्दति तस्य सो सुपरी  
 निन्दारिभाष्ये च । सिद्धं तस्मै गुण्यं वर्यं कथञ्चन सत्त्वं कथञ्च  
 सम्प्रयेत् च कथञ्चो च किं दीपं कथञ्चनो सो गुण्यमविनिन्दारिक्त  
 रत्नं समं करोत् । तस्मै सुपरी गुण्यमविनिन्दारिक्तवाचमानं सत्त्वं  
 करोत् वर्यं वर्यं चित्तं कथञ्चन सत्त्वं । स च च कथञ्च- 'हे  
 सुपरी ! तुम्ह गुण्यं समत्तवीर्यं सुपरी तस्मै सर्वं साहस्यं च  
 कथञ्चनं च त्वं कथञ्चनं पश्यं करोमि च करो तुम्हानं गुणं  
 आहं कथञ्च सत्तं सत्त्वं च यम कथञ्चनसत्त्वं च कथञ्च, कथं  
 कथं मे जीविष्यं' । मय कथञ्चनपुरवो तस्मै वर्यं मयस्म  
 कथञ्चनसत्त्वं च कथञ्चन' ।

सिद्धं तस्मै वर्यं- सो मय गुण सत्त्वं कथञ्चनसत्त्वं च कथञ्च,  
 स च कथञ्चनसत्त्वं वर्यं कथञ्चनसत्त्वं कथञ्चनसत्त्वं कथञ्चन  
 कथञ्चनसत्त्वं सुपरी कथञ्चन कथञ्चन । तथा स समशील्यं वर्यं-  
 'सो चि किं कथञ्चन सिद्धं, तस्मै दिव्यं कि' कि

विषयजन्मीओ न ज्ञायति ? , क्या वि तत्तम मयत्पाय हियय हो जा  
 न्ह पि अहं तम्म हियय मरणेण मयेण नयणकटक्खरेणि मज्जायिय  
 गोप्पाय अवरम परिस्स'ति फट्ठित्ता नियपज्जकरणपरा जाया ।  
 पेच्छदो पि तीण साहमकम्मं ददुदु दच्छत्तो नियट्ठाणे समागओ ।  
 तियदिमंमि पच्चूसफाटे तम्म गुरु धम्ममत्थयचित्तणिमक्कपरो  
 कइ, तथा मा सुदरी अणम्मययेमधारिणी तस्स उज्जाणे ममागूण  
 महुरसरेण गाएइ, तीए गाणमयणे पमुपक्खिणां वि स्थमंत्त मूढा  
 जाया । तस्स गुरु वि सयत्थाइ चित्तमाणां तीए महुरज्जुणीए  
 अक्खित्तो ममाणो तगीयसयणेण आकट्टियचित्तो खर्णासि धामूढो  
 सजाओ, तस्स य गत्ताइ मिदिली-भूयाइ, चित्त पि सगुद्व जाय ।  
 मणसा चित्तेइ- का गमा गाएइ ति निरुव्वणत्थ वायायणे ठाऊण  
 बाहिर पासैइ, तथा उग्याट्टियमत्थय नियपजावल्लयमाणदीहफेणि  
 गयगासिणिं मद मद सचरमाणिं अच्छरगणाण पि मयेण पराभवति  
 दिव्वसरेण गायति रमणिज्जत्थ रमणिं पासैइ, पामित्ता जराजज्जरि-  
 अदेहां वि जायतिव्वकामादिल्लासो मूढमणो सो उज्जाणमज्झं गच्छइ,  
 तत्थ गतूण तीए रूयसोह ददुदुण मयणानलदद्धो मो सुंदरीत्थे हत्थ  
 ठवेइ, सा वि त पामित्ता चित्तयोहेण हिट्ठमि पासैइ । तथा सो  
 कहैइ- 'अहं तुम कामेमि, मां महं कामभोगाईं मुज्जसु' । मा वि  
 रमणी ईसिं विहसिअ लज्ज धरती वएइ- 'जइ मम पइण्ण पुरसु,  
 तथा अहं अहोनिस्सं तुम सेयिस्सामि' । तीए रूयविमोहिओ सो  
 पुच्छइ- का तुम्ह पइण्णा ? । सा कहैइ- 'जइ तुम्हे तुरगीभूअ  
 चिट्ठेइ, घोडगीभूयतुम्हाणमुवरिं उयवेसित्ताण हत्थे कस धरित्ता  
 वाहेमि, तथा जावज्जीय तुम्ह आणाण यट्ठिस्स । सो एव सोचचा  
 तिल्लरागपासयद्धो सो तुरंगीभूओ । जया सा तुरगीभूअ त  
 आरोहिता वाहेइ, तथा तीए सण्णापेरिओ मो सिक्कदो तत्थागतूण  
 तयवत्थ गुरु पासैइ । सा वि सुदरी सिक्कदर ददुदुण , कहैइ- 'विट्ठ

मय्ययं, मम पुत्रो स्तिसंज्ञा वि पुरिसा विचारंति । विमर्श-  
 गुणविमर्शो सा विमर्शो वि पुत्रुत्तं गुरुत्वं- के इत्येव  
 नरगुणारसमात्रो इवाहं सुप्रविता गुणान्वयमुपपत्ते कथं गतो हि ।  
 उवाचसेह । तथा गुरु नापपरमस्यो विमर्शं कथं-तं हे वन्द्य !  
 मोहान्नो कश्चिन्मं न ददृशुं तूषेति परं तु तुम्यमि मय विज्जं दत्तं  
 विमर्शितं विना, विमर्शमि सुदृढतयेव चरित होम्यं तथा एवं न  
 कथयसेम्मा । किं न विमर्शितुं तुं कथं पञ्च रत्नवी मारितं पुत्रं वीरं  
 गमीरं तथा नापञ्चापमभ्यसे वि पठिसे कथं कथं सम्यक्  
 तथा सुप्रमुपपत्तस्तु तुम्ह किं न करिष्यसे । । स्वमत्ता पञ्च सुंरती  
 किञ्चिदप्य बन्धे मय महासामन्तेव केरितं कर्त्तंति कथयसेह । एवम्  
 सुंरतीषु बन्धनो बन्धे हुम्नि वि मुक्त्वा वि करिष्या सो गुरुं  
 विचारयसे गुरुं पुत्रं विन इत्यममो जातो । तथा सो विमर्शो  
 सा वि सुंरती विचारिषि- कसो किञ्च वीरा गमीरो इत्यन्तं  
 म्मापुरित्तो कश्चिन्मं पदार्थं पुरजो बन्धे कथं कथं विन ॥  
 उवाचो—

गुरुनो कथंमहप्य-सिक्खरनिर्वसत्तं ।

सन्ना ये पदार्तामा मकेव दूरयो सुया ॥ ४९ ॥

रत्नवीरं वरासुपमिकंदरस्तं पगूषपण्यासहमी

कथा समया ॥ ४९ ॥

शुद्धिप्यहावोवरिं हालियम्स कथा

पण्णासहमी ॥ ५० ॥

नीरं वि दूरकम्मेहिं, वीरंतो जाणं इत्ते ।

एस्सिपणावि पुद्दीए, रत्नवीरो मुमिपण्णो ॥ ५० ॥

को वि नरिंदो चित्तविणोयत्थ नयराओ धादिर धिदिपयणराट्  
 पासवो बहुदूरं जाय गओ । तत्थ एगमि खेत्ते पिसिक्कम्म कणन  
 इट्ठि पेक्खेइ, त इददृण पुच्छेइ—‘पट्ठिण कियंतदब्ब अज्जेमि?,  
 सो कदेइ—‘एग ऋक्कं लहेमि । तथा नरिंदा फहेइ—‘तेण दब्बेण  
 इ निच्चहेमि’ । तेग वुत्त—तस्म ऋक्कम्म नयरां भागे कांमि,  
 इय एग भाग अह भक्खेमि, धीअ भाग उद्धारगे देमि, तइअ जम  
 रिणमोक्खत्थ वायरेमि, चउत्थ भाग कूयमि पक्खियामि’ । एय  
 सोच्चा तन्मायत्थ अजागमाणो पुणो वि नरिंदो ‘किं एयस्स  
 एस्स’ ति पुच्छेइ । सो हालिओ वण्ण—‘पट्ठमण भागेण आह  
 अप्पाणं नियमज्ज च पामेमि । धीयभागेण पुत्ताण भग्ग  
 कुणोमि, जओ ते वि पुत्ता बुद्धत्तणामे अम्हे पालिम्मति, तओ वुत्त—  
 उद्धारगे देमि ति । तइअभाग मायपियराणमत्थ वएमि, जओ इ  
 बालत्तणे तेहिं पालिओ, तओ उत्त रिणमोक्खत्थं वायरेमि । चउत्थ  
 भाग परलोगसुहाय गणाय देमि, तेणुत्त—कूयसि गियेमि ति, जओ  
 त दब्ब परलोगमि सुहत्थ होस्सइ’ । एय तस्म अणुभवजुअ इडलोगअथ-  
 तहियकारिणि परलोगसुहायटं वाय सुणिउण नरिंदो अईय तूमीअ ।  
 ‘पुणो वि सो वण्ण—‘हे करिम्मग ! तुम्हारिमेहिं मइमतपरिमेहिं चिय  
 मम रज्ज विराएइ’ । अओ तुम कदेमि—‘जाय मयहुत्त मम सुह दिट्ठ  
 न मिया, ताव तुमए एमा वट्ठा कासइ न कहियव्व’ ति फहिऊण  
 नरिंदो नियावासे गओ ।

एगया सहाए घरसीहासणमठिओ नरचरिंदो नियपहाणपुरि-  
 माणमगओ हालिअस्स गूढवक्कम्म रहस्स पुच्छेइ—‘ज एग भाग  
 भुजइ, ‘वीअ उद्धारके देइ, तइअ रिणमोक्खाय अप्पेइ, चउत्थं कूयमि  
 निक्खेयेइ’ तस्स को भायत्यो ? । एय सुणिउत्ता मव्वे पहाणा पच्चुत्तर  
 दाउ असमत्था परुप्पर पेक्खेइरे । तथा नरिंदेण कहिय—‘पण्णरसडि-  
 च्छण्णमठिमतरओ तम्हेहिं एयस्स उत्तर दायव्व. अण्णाइ तुम्हे



# भोगंतराए मम्मणसेट्ठिणो कहा

एगपण्णामइमी ॥ ५१ ॥

‘पुव्वदाणपत्तभोगा वि, भोगतरायकम्मुणा ।

श्रुजिज्जति न लोएहिं’, जह मम्मणमेदिठओ ॥ ५१ ॥

एगमि नयरे एगो वणिओ आमि सो भज्जारहिओ अत्थि ।  
 णया तत्थ नयरे को वि धणद्धो नियणाडवग्गाण सुरहिगघस-  
 जुयलद्धुआण पहावण अकामी । तेणावि वणिण लद्धुओ एगो  
 लद्धो । तेण अज्ज कह वा एाइस्स त्ति वियारित्ता कत्थ वि भायण-  
 मन्ने वि ठविओ । अन्नदिणंमि एगो पचमहव्यधारी मामोववामी  
 बहुलद्विसपण्णो समणवरो तस्स गेहमि भिक्खणद्ध ममागओ । त  
 महाभुणि दद्धूण पाए वटित्ता सो वण्ड-‘वण्णो अह जओ मम  
 घरमि महारिस्सी ममागओ’ एव कहित्ता अन्नभाभावेण त चिय  
 साउरम मोयग विसुद्धभावणाए समप्पेइ । सो समणो सुद्धमाहार  
 दद्धूण गिण्हेइ, धम्मलाह च दाउण तस्म घराओ निमाओ ।  
 तयणतर चेव कावि पाडिघेस्मिया तस्म समीवमि आगतूण कहेइ-  
 ‘किं तुमए सो मोयगो खाइओ न वा’ । सो कहेइ-‘मए सो  
 भिक्खवत्थमागयस्स मुणिवरस्स दिण्णो’ । तया सा कहेइ-अरे मुस्स्व ।  
 सो लद्धुओ अमुत्तपुव्वो सुरहिगघसजुत्तो सुरसो अवस्स चक्ख-  
 णिज्जो आसि । किं तुमए न खाइओ ? । तया सो भायणगयमो-  
 यगचुण्ण आसायतो मोयगामायरमलुद्धो त भक्खित्त इच्छतो  
 विस्सरिअदाणधम्मफलो लोहवो घावमाणो तस्म मुणिवरस्स पिट्ठओ  
 गओ, त समणएर पाविउण कहेइ-‘हे मुणिवर । मए अप्पिय  
 मोयग पप्पेहि । तया मुणी कहेइ-‘मुणिपत्ते पडियमन्न कयावि न  
 पुप्पिज्ज’ एव त पडिघोएइ । सो मोयगरसमूहो न मन्नेइ, तया



सो हृषिकेशो एसो वपिभ्यो बह्वारो यमनकपेश, त्वं न न  
 पश्यामिह एव विचारिता त कन्दर्बं पुष्पिण्य एतत्परं की  
 दृषिभ्यो । एवं विष्णुं तं वदन्त्य सो वपि सुतो विराडो वदन्नाभ्यो ।  
 सो समन्वयो वपसि गंतूय निरुहाणे समभायो सञ्चारयाम्यसि  
 संकीर्णं जाभ्यो । सो वपिभ्यो हृषिकेशस्य अंतरावकम्पया वदन्मोक्ष  
 रावकम्प्यो मन्त्रुं कश्चिद्वय यममनसेतुं संजाभ्यो । एवं धुरणालेन  
 पचयुक्त्ये वि योग्यरावकम्पया सिद्ध-वचकं विना धर्मं किमपि  
 काङ्क्षं न पश्येत् । एवं अंतरावकम्पया वदन्मोक्ष वि न मुक्तिर्यसि ॥  
 ठषएतो—

मोमंतरावकम्प्यस्त, विवासां यममनस ।

पसिषा अंतरायाभ्यो, मवियम्बं सुरभ्यो ॥ ५१ ॥

मोमंतराव मन्मन्वसेद्विस्तस एगपन्वासायसी

कदा समया ॥ ५१ ॥

— ५२ —

नायज्जणोवरिं जिणदत्तस्म कहा

दुपंचामइमी— ॥ ५२ ॥

‘ नायनिपपणदम्भस्त, परिणामो सुतो ’ अजो ।

वपिभ्यो वीर्यो जाभ्यो, जिणदत्तस्म सदाया ॥ ५२ ॥

एवमा मोक्षारिणो रावकोपायकार्यं चाहं वेदितुमवगतं  
 पुराणा कथयुक्तं दुष्कृतं कथा मुद्विजे भार्यभिरुत्तम्यो कलाभ्यो  
 वदन्तस्तत्परं काय विद्वत् । जोड्मिना वि समं विद्विषिता  
 वेत्तामुद्विषारिणं कपेश्वर । तमि दिने समान्तर महीन्ध्र्यो पहाय-  
 मसि-पुरोद्विष-सेवकवह-सेद्विपुस्तुपमकायान्तुरितं

वि स्थायमुत्तममयासि स्वायभूमीए विविहचरपुष्पावत्युड ग्विवता  
नरवइ ययति- ' जइ नायज्जियपचजघरयणाइ एत्थ पक्खिज्जति,  
तया इमीए भूमीए निम्मविओ पासाओ वासमहस्स जाव अग्गडिओ  
इविस्सइ ।' नरिंदो कहेइ- ' मज्झ कोमागारे बहुइ रयणाइ नति,  
वाणि गिण्हइ ।' नेमित्तिआ वयति- ' करभारपीलिय पवाहितो लब्धं  
दन्व कइ नायनिप्पण्ण सुद्ध मिया ?, अओ एत्थ महामज्झमि जे  
सुद्धिणो वाचारिणो मति, ताहितो मग्गावेइ ।' नरिंदो सहायिअ-  
सन्नयावारिवग्गेसु दिट्ठि देइ, किंतु सन्ने वाचारिणो निय दब्ब  
कैरिस, त तु ते चिय जाणति, अओ ते सन्ने हिट्ठमुहा चिट्ठति न  
किंपि वयति । तथा नरवइ बोलेइ- ' मज्झ नयरे किं नायमग्गदब्ब-  
ज्जणसीलो को वि वणिओ नत्थि ? । एव सोच्चा एगो पुरिसो नरिंद  
कहेइ-महाराय ! ' अप्पा निय पाव, जणणी य पुत्तस्स पियर जागेइ '   
एव एत्थ सन्ने वि वणिअवरा अणीइप्पिया चिअ नज्जति, परंतु जह  
' सएसु जायए सूरु महस्सेसु य पाडिओ, वत्ता दममहग्गेसु, तह  
कोडीसु वि नायमपण्णविहवो कया कत्थ वि लब्भइ ' अओ इममि  
नयरे जिणदत्तो नाम सेट्ठिवरो नायमग्गेण एव ववहरेइ । एव सोच्चा  
मोयनरिंदो त सेट्ठिवर वाहणपेमणेण बोलेइ । सो सेट्ठी रायदब्बं  
अमुद्धमेय चित्तिता पाण्हिं चिय नरिंदमहाए आगच्छेइ, निव च  
पणमिउण उवविट्ठो । नरिंदो पुच्छेइ- ' तुम्हाण समीवे नायमपण्णदब्ब  
किमत्थि ? । जिणदत्तो हत्ते मणेइ । तथा नरिंदो स्वायमुत्तम  
पचविहरयणाइ मग्गेइ । जिणदत्तो कहेइ-नायदब्बं पावकज्जे अह न  
देमि । एव सोच्चा कुट्ठो नरिंदो वण्ड- ' जइ न दाहिसि ता वलाओ  
वि गिण्हिस्सामि ' । सेट्ठी कहेइ- ' मम परसव्वस्स तुम्हकैरे, जहेच्छ  
तुम्हे गिण्हइ ' । तथा जोडमिआ कहिति- ' हे नरवर ! एव वलाओ  
गहणेण अणीई सिया, एरिम दब्बं न कएइ ' । तथा नरवइ  
वाण्ड- ' एत्थ किं पमाणं ? ' । जिणदत्तो वण्ड महाराय-



कुहुधरगो वि धण्णेहिं महिय मिग्घ आगय धीवर पामित्ता पुच्छेद-  
 'कुओ ग्याड अदिट्ठपुव्वाड सुद्धवण्णाड लद्धाड' ति ? कहित्ता मो  
 कुहुधरगो क्ये धण्णकणे खाडउ पउत्तो । सुद्धदव्वाहारत्तणेण  
 सयस्म सुद्धपरिणामो जाओ । तस्म भज्जा वि पुच्छेद- कुओ ग्य  
 लद्ध ? । मो धीवरो कहेद- केणावि यम्मिण्ण मम ग्गो दीणारो  
 अप्पिआं । तत्थ ग्गेण रूप्पेण धण्णाट आणीयाड । अयमिद्ध  
 चउदम रूप्पगाड मति । ताड ददट्ठण धण्णकणभक्खणेण जायसुद्धमावा  
 भज्जापुत्ताडणो कहिति- ग्गहि रूप्पेहिं दुमाम जाव कुहुधनिव्वाहो  
 हाही । तओ ग्य महापावकारण निरघगहजीवयहनरुथ निंदगिज्ज-  
 नीयण चइऊण निदोमकम्मणा वित्ती मिया तो अईय मोहण । ग्व  
 मोन्चा सो धीवरो पावमड वित्ति चइत्ता निहामत्तावारण उवहरिट  
 लगो । ग्व नायनिप्पण्णदव्वप्पहावेण ग्मो धीवरो मपरियारा सुही  
 जाओ । मती वि नायदव्वेण धीवरस्स लाह, अणीडदव्वाओ  
 तयस्सिणो हाणि ददट्ठण भोयनरिट्ठस्स अग्गओ मन्व कहेद । राया  
 वि नायनिप्पण्णदव्वप्पम पहाव नच्चा पायदव्वज्जणे पउणो जाओ ।  
 एवं सुद्धकखिणा जणेण नायदव्वज्जणामि मड मया पयट्ठियञ्च ति ॥  
 उवएसो-

नाय अन्नायदव्वस्म, फल नच्चा सुहासुह ।

'नायज्जणे पयट्ठेज्जा जणा कल्लणकखिरा' ॥ ५२ ॥

नायज्जणोवरिं जिणदत्तस्म दुपन्नामइमी कहा समत्ता ॥ ५२ ॥

भावभत्तीए पुलिंदस्म कहा तिवण्णासडमी-

॥ ५३ ॥

दन्वभत्तिभराओ वि, भावभत्ती वरा मया ।

सिवभत्तिपरो विप्पो, पुलिंदो य नियसण ॥ ५३ ॥

इह भरहे गउरीगिरी नाम महतवित्थारो मेळो अत्थि । तस्स  
 निहिम्मि उज्जाणमज्जे 'मनिहियपाडिहेरो सिवो नाम सुरो आमि' ।

तमि पञ्चकदरे बहवो पुष्पिका विवसन्ति । तान् एवो पुष्पिके सिधे देवे  
निबद्धमचिन्त्यो पदविषसं सिध देवं पूर्य आगच्छ । ते  
वायव्युवाग्माहृत्यो दक्षिणवृत्तेर्बहुमुद्यद् वेत्तुं पुद्गलमङ्गलीयक्येन  
सिध देवं यावता पूर्य । स देवो तस्मिन् निबद्ध मर्त्यस्य संसृष्टं समाप्य  
सह तं कुसमाहर्षं वत् परिपुच्छ्य ।

समीक्ष्यगाम्भार्यस्ती एवो विष्णोः कस्य आगच्छतं सिध देवं दक्षिणेन  
निबं आगच्छेद् बहो विष्णोः बोधयेद्, निष्करसङ्कितेन वाच्य,  
विजयार्थेनैव यन्निजगतं विद्या सुखं वपुष्पेर्हि पूर्य । अहं जगन्निधे  
आचक्ष्य मय्यनो आगच्छतोऽस्मिन्मुच्ये संकल्पं मुचेद्, अविद्वान्-  
जसेन तज्जगत् सर्वं निबद्धेवो पुष्पिकेन सह संसारं कुर्वे । एवो  
सो विदुः- एवमिति पश्ये विष्णु-विद्येनेहि बभ्रुव्यो जगत्समस्त  
अस्मिन् पञ्चमि एवो देवा यमलो वाच्य । अहो ! अस्तु सिधरेक्य  
अहं वृद्धो विवेगा । किं बोध्य, कश्चिच्छेदे न इह गुणकं तुल्य  
हुति । न संकटं नि आस्तुरहि केनैव परिचर्य वत्पुच्छ्य इच्छ  
किं एव बोधय ? इच्छां चित्तिह्य तस्मिन् पुष्पिके गप समाधे सो  
माहणा अच्यतरं वपुः खेपार्थं सिधं मये- इ देव । किं वसा  
नामो ? न इह पुष्पिं तुमं सुप्तामो अस्मि, किं मम मर्त्यविद्येस्यो  
एवस्म पुष्पिस्म पूजा अहिक ? किं गह्वरजकेन अहितेप इ  
मामि । तव मेहतक विद्यसिधो ? । तुं नार्थं अरन्ते म्बुवास्त तव  
पुष्पिकार्थं देवं कुर्वेसि । अमृत्य अन्तः एव ! अमृत्य म इति,  
मिच्छेच्छं च सत्यं कुसमाहर्षं मय्यं पुच्छसि' एवं सो जगत्त्रयं  
दाह्य जगत्त्रये आधो । अजो'र्ब कश्चिद् भुवने बीधो ह्यरी होह' ।

एवो सिधो ववो विदुः- 'अभावापरमत्वा अर्थं न वा तं वा  
वप्य, अजो एवो बोधयत्वा । तव सिधो देवा पश्य सतत्तम  
वर्षं अहिं नार्थं रिजो । अहना वारिर्न तं देवं वपुः अहं एव

वण्ड अ केण अहम्मिणा पाविट्ठेण मम देवस्स अच्छिंविणासो हा  
हा ॥ कओ ? । तस्स हत्था गलतु, रोगायकेहि अपसत्था हवतु इच्छाइ बहु  
पलवित्ता भुवणिक्कदेमे तुण्हिओ ठिओ ।

एत्थतरे पुलिंदो सरधणुदेहि वावढकरगो जलपुण्णवयणकलसो  
वयण काठ समागओ । सो सिव देव काणार्च्छि पेच्छिऊण चित्तेह  
हा हा ॥ कट्ट कट्ट देवस्स नयण इम नट्ट । का देवे मह भत्ती ? को  
अणुरागो ? , को व बहुमाणो ? , हा हा ज देवो मम एगनयणो, मह  
गेणि नयणाइ, एय अजुत्त, तओ सो साहसोल्लसिओ सरेण  
नियनयण उक्खणेउण देववयणे ठवेइ । तओ सो देवो महरुगिराए  
त माहण जपेइ- ' ह माहणवर । पेच्छसु पुलिंदस्सावि इमस्स  
बहुमाणभत्ति अणुराग नयणप्पयाणपयही, करत अतरग भाव च ।  
बहुमाणकणयकसवट्टमि नियनयणसमप्पणेण सुपरिक्खियकल्लाणपरपरा  
दिण्णा होइ । जेण विडण्णा टिट्ठी तंण सव्व सोहग्गमहग्गय जीविय  
पिडण्ण । तो एसो पुलिंदो पि हु विसेमयिन्नाणावियलचित्तो वि ज  
विदसत्तो रत्तो सुराण पि पसायजोगो सजाओ । मणुयाण  
निव्वियदियकज्जसार सब्भाव जाणित्ता सब्बायरेण देवा वि सुप्पसन्ना  
समास दिंति । तो हे माहण । एसो पुलिंदो सुरप्पसायम्म, अजोगो  
त्ति मा भण, तुमए वि भिट्ठिदाणाओ ज एयस्स निव्वलसब्भावो  
जाणिओ । एव सिवदेवस्स वयण सोच्चा असहणो वि मो माहणो  
सिवदेवस्स वयणसुहाए सित्तो ईसाए रहिओ पमन्नचित्तो सिवदेव  
विन्नवेइ - ' हे देव । तुम उदिसिऊण ज मए अविइअपरमत्थेण  
अन्नाणदोसाओ जपिय, त इण्हि तुच्छहिययस्स मज्झ खमियच्च ' ,  
एव बोत्तण तस्स पाए पुणो पुणो नमइ । तओ सिवदेवेण तस्स  
पुलिंदस्स अप्पणो य दिव्याए सत्तीए जहावत्थ नयण विहिय । एव  
नयणसुदर सुय- नाण धम्मपहे वियरताण विहिणा देय ॥ ,

नार्ये विष्य-पुष्टिदत्त मोक्ष सत्पावदेवर्ग ।

सुमा ' अथेव कथयन्ता मावमयी सुनिम्मसा ' ॥ ५३ ॥

मावमयीए पुष्टिदत्त विषयासदमी कथा सुमता ॥ ५३ ॥

— — — — —

दव्वपूआए कुग्गयनारीए कहा अठपण्णासदमी-

॥ ५४ ॥

माधो वि दव्वपूआए सुमासोक्तपस्यायो ।

विदुठतो बुम्माया नारी, विषयुम्भयमात्मता ॥ ५४ ॥

स्यवा मधकथा मन्त्रालये मन्त्रालय विदुष्यमो कथार्थ नारी  
सुमासो । तत्त उम्माये रेवा मन्त्रालय अकथितु । मन्त्रालये

उपस्थिता अन्त्रालये विदुष्यमो कथ-नर-विदुष्यमो  
रेवम् कथ । कथार्थमन्त्रालय मन्त्रालय विदुष्यमो

उम्मायपथमन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालय सुम्माय अन्त्रालय  
अन्त्रालये कथार्थ - सो सो मन्त्रालय । मन्त्रालये मन्त्रालये

मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये  
मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये

मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये  
मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये

मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये  
मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये

मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये  
मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये

मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये  
मन्त्रालये विदुष्यमो मन्त्रालये मन्त्रालये मन्त्रालये

गानयन-विरक्षणं शेषं मे भविष्यद' मि विनिनिधा  
निनिदमनीययद्विनिनिधो पामागि गानयन कटुभार गानिहता गानिह  
मगाया । तन्व द'यपायाइ परगालिका नितेश - निरिमग जगा  
नपुष्पेति विणयर पूयति. 'मिरीण मन्व निज्य' मग ३ नाइ  
नैय, अशो अग मुगालचमेति मिदुयारा मिदुयुमुमेति मन्वयगु  
पुम्म' तओ नईतारे टिगाइ तुन्गपुष्पाइ उन्निनिता गत्यचले  
शयडण दीगपाइ यद्वि अगगो निगया । राया वि पन्चूम  
मयराहो एनय-वाइयका-णीगेति मनमिओ मन्विह्दोण  
मिरीरयडणा निगगो, तह य नगरांगा मपरिगारा मालका-  
निमिधिया निगया । जियारिनरिदा कटुभारमायि वीरयणुक्कयटय  
मणिय मणिय गच्छति न दट्टूण पमणमणो जाओ, तण  
नियमेणायई आइटो - 'मा ण्ण थेरि का पि महेज्जा । अह मा  
दुग्गयनारिआ यद्वमाणमुग्गमाया यद्वमाणजिणीमर शायती समय-  
मरणदुग्गयनारिआ समाणा नयणमुहजण चउत्तय वम्म दिमन  
सिरिमहायीर पेक्खेद । सुरासुरनग्गेहि मेयिज्जमाण वीरयणु दट्टूण  
रोमचंचियदेहा हरिममुपायिअनेना साण्ड -

घण्णाइ कयपुष्णा हं, सुहगाहं च मन्वहा ।

अज्ज फल च सपत्त, जम्माणो जीवियन्त य ॥

विस्सविस्सेमरो देवो, जं वीरो पासिओ मण ।

वंदिस्स अच्चइस्सं त, धम्म योच्छामि तम्मुहा ॥

इच्चाइ दट्टमुही शायती मालियपाया भूमीण पडिया, झीणाउमा  
अयिमुत्तमुहज्याणा मरण पायिअ मोहम्मं देवो जाओ । जियारिनरिदो  
भूमीण पडिय थेरि दट्टूण मुच्छिय मन्नमाणो जलेण त मिचावित्था ।  
निप्फदत्तणेण वियन्न नच्चा अमिणा मस्कार करायेसी । तओ  
ममोमरणे पयिमित्ता तिपयाहिण किच्चा नायउत्त महावीर वंदेइ,





नायं दुग्गयनारीए, वीरच्चाभावणोज्जल ।

सोच्चा ' जिणच्चणे भव्वा ! उज्जमेह सुभत्तिओ ' ॥ ५४ ॥

दव्वपूआए दुग्गयनारीए चउपण्णासडमी कहा समत्ता

॥ ५४ ॥



साहुजणसंसग्गे नंदनाविअम्स कहा

पण्णपण्णासडमी- ॥ ५५ ॥

सुसाहुजणससग्गो, कास नोन्नडकारगो ? ।

चोज्जं दुदुठे वि तारेड, नंदो एत्थ नियंमण ॥ ५५ ॥

पुरा धम्मरुई नाम अणगारो गगानईए नायमारुढो, नंदो नाम नाविओ भाटय मग्गेड । मुणी कहेइ- ' मुणीण नात्थि धण ' । नंदो वण्ह- ' मुण्डा ! जइ धण नत्थि ता किं नायमारुढो ' ? । मुणी कहेइ- ' तुम धम्मो होही ' । नंदो साहुइ- ' अत्थेण मम कज्ज, न उ धम्मेण । तओ नंदेण त्रिबिहजायणाहिं उवसग्गिओ उवसमसार्गे वि अणगारो तेउलेसाए त दहेइ । सो मरिऊण कम्मि गामे सहाए घरकोइलो जाओ । धम्मरुई मुणी त पाव आलोइयपडिक्कतो पत्तातावजुओ विहरमाणो कमेण तमि गामे समागओ, जत्थ सो मण्णी घरकोइलो । सो मुणी भिक्ख घेत्तूण तत्थ सहाए आगओ । तथा सो गिरालिओ पुव्वमववत्थदोसेण उवविट्ठस्स तस्स अणगारस्स उवरिं कयवर खेवेइ । सो मुणी धीयकोणगे गओ, तत्थ त्रि गत्तूण एव सो कयवर खेवइ, एव सो पुणो पुणो कुणेइ, तथा कुद्धेण तेण सो दंढो सभाणो मयगतीराए हसो जाओ । मुणी वि विहरतो माहमासे कया तत्थ समागओ । नइ उत्तरित्ता हरियावहिय

चरितकर्मोऽ नृप वि दास्यता मा ईया मीवद्वयज उपमम कृत ।  
 मा अये नि विनिष्ठा मा अयगातो तं उरु । ईमो मरुतव  
 अंजयपञ्चम मिषा आओ । योगतवयवचम्यनिष्ठाय नो मुने  
 मिरजाया नृप वज मयागाओ । मा मीरा वि तं चमिषा ईतुं  
 पावत मुने वि न मिषं तंउमेम्यज वरु । एवं उवरावरमरुदी  
 अंजयनिष्ठविचम्ययमा वायारमीप मावपमुता आओ, कमेन  
 वहुमाज वामेदि कृद ज्वावा कीछेड । सा मुनी धूमरु अम्य  
 वरुदिककमेने परमे मयनं जायतो वमम विरुता वायारमी  
 वरुदिककमेने मयागता । विरुतव नर नृपउय तव वपुव विष्ट ।  
 तं कुविदर उदह्य पुम्यमवधामता येमय वमवमंय कमेदी तव ई  
 मयव अंजय उपसगाड । मिष्टकमेन्य वरिष्ठते वि मुने उमेज  
 अमुगच्छेड । मुनी अवि वि पमा नरमीछेति विचारिता ई  
 छेड । नो वहुमां वुककम्यकेसनिष्ठाय सुदवावपरिचर्य वायारमी  
 निचो मया । सा धूमरु ई वज्ज्य मपुवित्त के मीमवमं  
 अमुवच्छमीपार्य कम्यवमंय कमेने व हुंति एवं विठमानो मुदक  
 वरुता वुककम्यदिनिष्ठाय उवपवकम्य वायारमी अविष्ट ।  
 वमो वरु—

मुध्यामि कयडीनं वरिषामयमा उवककमो अविष्टो ।

वायमविष्टमालं उवता उ निष्ठपार्य वि ॥

ज्वावा मा मरुतो उवममीमि कमी मुमिषि विष्टे वरुतरं  
 वतो । मयसु निवमरुमेमु उय वासकमो मयेड वरु—

ममाए नविष्टो मदा १, ममाए वरुमेयतो २ ।

ईतो मयगादीए ३ मीहो अंजयपञ्च ४ ॥ १ ॥

वायारमी वहुमा ५, राया ६ एय व संसुमा ।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा मभा, पुणे

डाग संचालित

## राष्ट्रभाषा मुद्रणालय

३८७ नारायण पेठ, पुणे २

— ❀ —

अद्यावत् मशीनों तथा विविध प्रकारके

मुद्राक्षरोंसे सुसज्जित, ३० से अधिक

कुशल कर्मचारियोंके सहयोगसे

चलनेवाला यही एक मुद्रणा-

लय है जहाँ हिन्दीकी

सब तरहकी निर्माण

छपाई होती

है ।

सुसाहुबषत्समो नंदभाविजस्त पद्मक्यास्यधी  
क्या समचा ॥ ५५ ॥



पुष्पपट्टये तिरिगोडीपासविषीसरुवस्तुए विहमस्त अम्भि-  
संसि-स-नेचसुचण्डरे अकल्पयत्तुअदिचे आपरिअवि-  
अयकत्तुररुविण्णमाए पद्मअविण्णयक्याए पद्मो भागो समचो  
॥ तिरि अत्तु तिरि होम्मा ॥

### पसत्ति

इअ तिरितवामण्ठादिअ-तिरिअयपद्महात्वेमठित्पोद्दरग  
सासयपद्महाग-आवाकवमपारि रुत्तिरसेहर आपरिअ  
विअयनेमिस्सीसर-पद्मअंकार-समयत्तु-संतमुचि-  
आपरिअविअयविण्णयक्याए-पद्मअर तिरुवमहो  
वदि-पद्मअमाप्ताविसारयापरिअ- विअय-  
अत्तररुविण्णमाए पद्मअविण्णयक्याए  
पद्मो भागो समचा ।





## श्रीनमि-विज्ञान-ग्रन्थमालाया नवा प्रकाशनो

- |  |             |
|--|-------------|
| १ श्रीनमिधानार्चितामवि कथः             | १ क         |
| कत्रोप्यामिषु शुभ्रमापादुपदसाहित । किं |             |
| श्रीस्तुर्विधमिस्तवृष्टिः ।            | कि. २५ न पै |
| ३ श्रीनमिस्तोत्र कथः ।                 | कि. १ क     |
| ४ श्रीनमिराम मन्त्रोप स्तोत्र ।        | कि. ०५ न पै |
| ५ श्रीपर्वतविज्ञान कथा                 | कि. ३ क     |

हरे पालिका प्रकाशने

- ६ श्रीनमिधान कितामवि कथः  
( सङ्गीतम मन्त्रमात्र )
- ७ छन्दो रत्नमाला मन्त्राः
- ८ श्रीमन्मन्त्रोपराचार्य हल कथावली
- ९ श्रीमन्मन्त्रचन्द्रिका

